



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA  
“लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा”  
“Dedicated to Truth and Public Interest”



# चेतना

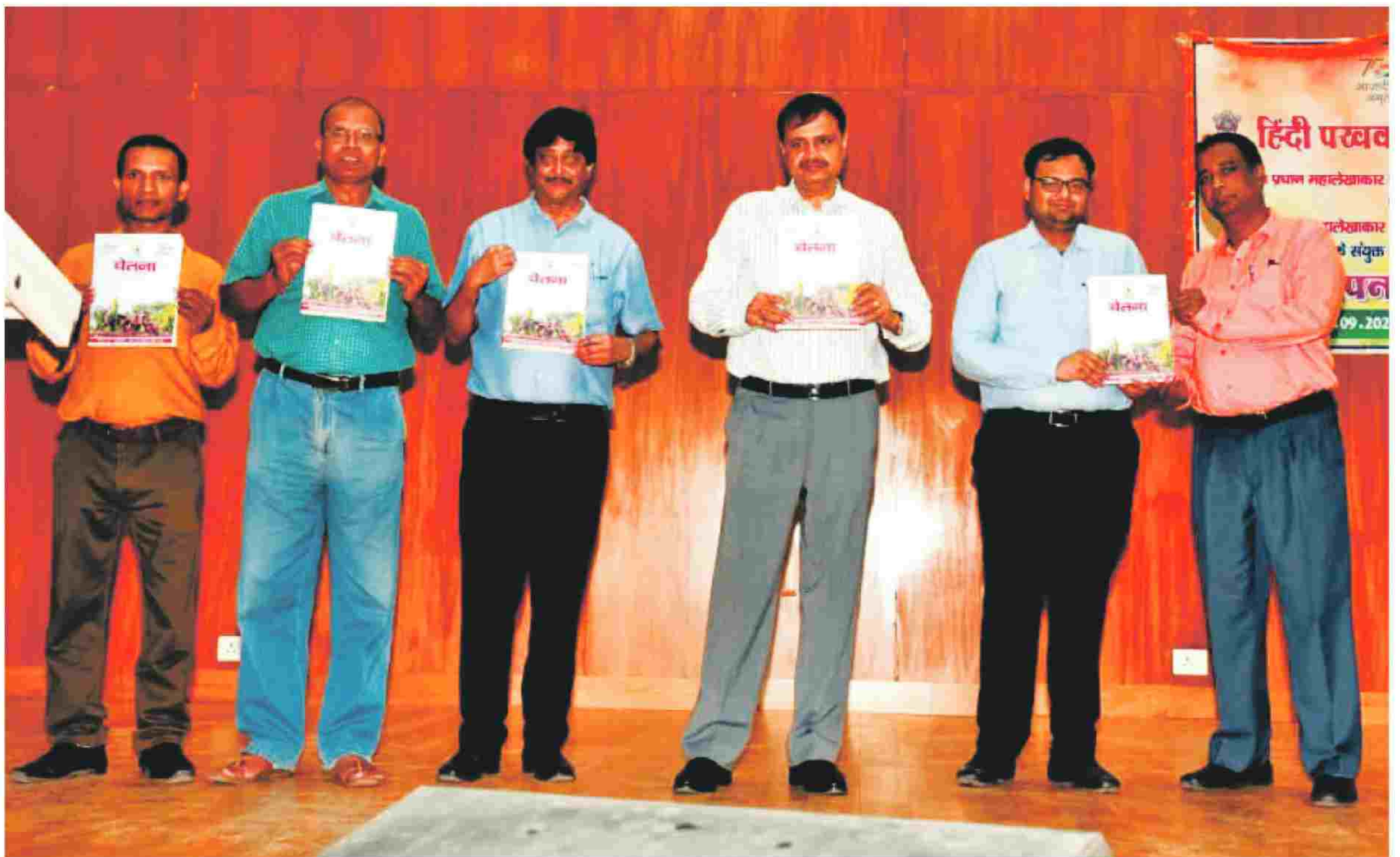
34वां अंक

कार्यालय महालेखाकार  
(लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना





# हिंदी परववाड़ा 2022 के दौरान दीप प्रज्वलित करते हुए उच्च अधिकारीगण



हिंदी गृह पत्रिका 'चेतना' के 33वें अंक का विमोचन



# हिंदी गृह पत्रिका चेतना

अक्टूबर, 2022 से सितम्बर, 2023

34वां अंक

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना  
महालेखाकार भवन  
वीरचंद पटेल मार्ग, पटना 800 001

चेतना के इस 34वें अंक में प्रकाशित सभी रचनाएं लेखकों/रचनाकारों के अनुसार उनकी मौलिक एवं अप्रकाशित हैं तथा इसमें दिये गये विचार/मन्तव्य उनके अपने हैं। इससे किसी प्रकार की सहमति/असहमति संपादक मण्डल की नहीं है।

स्वत्वाधिकार : महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना

प्रकाशन : चेतना

प्रकाशक : कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना,  
महालेखाकार भवन, वीरचंद पटेल मार्ग, पटना- 800 001

34वां अंक : अक्टूबर, 2022 से सितंबर, 2023

मुद्रक : केडीएस प्रिंटर्स



## चेतना परिवार



- बैठे हैं (बायें से दायें) : श्री संजय कुमार सिन्हा (उपमहालेखाकार), श्री पुष्कर कुमार (महालेखाकार), श्री मनमीत कुमार (उपमहालेखाकार)
- खड़े हैं (बायें से दायें) : श्री सन्नी कुमार (कनिष्ठ अनुवादक), श्री अरूण कुमार (हिंदी अधिकारी), श्री अजय कुमार सिन्हा (वरिष्ठ लेखा अधिकारी), श्री उदय भान विश्वकर्मा (कनिष्ठ अनुवादक), श्री बंशीधर मिश्र (वरिष्ठ लेखा अधिकारी)



# चेतना परिवार

संरक्षक

श्री पुष्कर कुमार

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) बिहार, पटना

प्रकाशन परामर्शदातृ समिति

श्री मनमीत कुमार

उपमहालेखाकार (प्रशासन)

श्री संजय कुमार सिन्हा

उपमहालेखाकार (पेंशन)

प्रधान संपादक

श्री बंशीधर मिश्र

वरिष्ठ लेखा अधिकारी

संपादक

श्री अरुण कुमार

हिंदी अधिकारी

उप संपादक

श्री सन्नी कुमार

कनिष्ठ अनुवादक

सहायक

श्री धीरज कुमार

वरिष्ठ लेखाकार

टंकण कार्य

टाइपिंग पूल अनुभाग

मुद्रण कार्य

केडीएस प्रिंटर्स



# महालेखाकार भवन बिहार, पटना







# हिंदी दिवस 2023

के अवसर पर  
माननीय गृह मंत्री जी  
का संदेश



**राजभाषा विभाग**  
गृह मंत्रालय, भारत सरकार



अमित शाह  
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री  
भारत सरकार



प्रिय देशवासियो!

आप सब को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत भाषिक विविधता का देश रहा है। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की भाषिक विविधता को एकता के सूत्र में पिरोने का नाम **‘हिंदी’** है। हिंदी भाषा अपनी प्रवृत्ति से ही इतनी जनतांत्रिक रही है कि इसने भारतीय भाषाओं और बोलियों के साथ-साथ कई वैश्विक भाषाओं को यथोचित सम्मान देते हुए उनकी शब्दावलियों, पदों, वाक्य विन्यासों और वैयाकरणिक नियमों को आत्मसात किया है।

हिंदी भाषा ने स्वतंत्रता आन्दोलन के मुश्किल दिनों में देश को एकता के सूत्र में बाँधने का अभूतपूर्व कार्य किया। अनेक भाषाओं और बोलियों में बँटे देश में ऐक्य भावना से पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता की लड़ाई को आगे बढ़ाने में संवाद भाषा हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इसीलिए, लोकमान्य तिलक हों, महात्मा गांधी हों, लाला लाजपत राय हों, नेताजी सुभाषचंद्र बोस हों, राजगोपालाचारी हों; हिंदी के शुरुआती पैरवीकारों में बहुसंख्यक उन प्रदेशों के लोग थे, जिनकी मातृभाषाएँ हिंदी नहीं थीं।

किसी भी देश की मौलिक सोच और सृजनात्मक अभिव्यक्ति सही मायनों में सिर्फ उस देश की अपनी भाषा में ही की जा सकती है। प्रसिद्ध साहित्यकार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने लिखा है कि, **“निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति कौ मूल।”** यानि कि, अपनी भाषा की उन्नति ही सभी प्रकार की उन्नति का मूल है। राष्ट्र की पहचान इस बात से भी होती है कि उसने अपनी भाषा को किस सीमा तक मजबूत, व्यापक एवं समृद्ध बनाया है। यही कारण है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी और लिपि के रूप में देवनागरी को अपनाया।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं को राष्ट्रीय से वैश्विक मंचों तक यथोचित सम्मान मिला है। हमारी सभी भारतीय भाषाएँ और बोलियाँ हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं।



अपनी भाषा में सुनी हुई अवांछनीय बातें भी बहुत बुरी नहीं लगती। कवि **विद्यापति** की शब्दावली में कहूँ तो **‘देसिल बयना सब जन मिट्टा’** यानि देशी भाषा सभी जनों को मीठी लगती है। गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयत्नशील है कि शहद सामान मीठी भारतीय भाषाओं को आधुनिक तकनीक के माध्यम से अत्याधुनिक और वैज्ञानिक प्रयोग के अनुकूल उपयोगी बनाया जा सके।

सरकार और जनता के बीच भारतीय भाषाओं में संवाद स्थापित कर जनकल्याणकारी योजनाओं को प्रभावी तौर पर लागू किया जा सकता है। दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र जन-जन तक उनकी ही भाषा में उनके हित की बात पहुँचाकर आदर्श लोकतंत्र के निर्माण का सबसे अच्छा उदाहरण हो सकता है। राजभाषा विभाग ने इसी उद्देश्य से राजभाषा हिंदी के प्रयोग को सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से सहज बनाने की दिशा में काम करते हुए स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली **‘कंठस्थ’** का निर्माण और विकास किया है। फिजी में संपन्न **‘विश्व हिंदी सम्मेलन’** में **‘न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन’** के साथ इसके नए वर्जन (कंठस्थ 2.0) के मोबाइल ऐप का भी लोकार्पण भी किया गया है।

राजभाषा विभाग की एक नई पहल **‘हिंदी शब्द सिंधु’** शब्दकोश का निर्माण है। इस शब्दकोश में संविधान की 8वीं अनुसूची में अधिसूचित भारतीय भाषाओं के शब्दों को शामिल कर इसे निरंतर समृद्ध किया जा रहा है। साथ ही, विभाग ने **‘लीला हिंदी प्रवाह’** मोबाइल ऐप भी तैयार किया है, जिसे अपनाकर विभिन्न भाषा-भाषी 14 भारतीय भाषाओं के माध्यम से अपनी-अपनी मातृभाषाओं से स्तरीय हिंदी निःशुल्क सीख सकते हैं।

भाषा परिवर्तन का सिद्धांत यह कहता है कि भाषा जटिलता से सरलता की ओर जाती है। मेरे विचार से हिंदी के सरल और सुस्पष्ट शब्दों को कार्यालयी कामकाज में प्रयोग में लाना चाहिए। टिप्पणी, पत्राचार, ई-मेल, विज्ञप्ति आदि के लिए आम बोलचाल के शब्दों व वाक्यों के प्रयोग से हिंदी के प्रयोग का चलन बढ़ेगा।

हमारे लिए हिंदी का प्रश्न सिर्फ एक भाषा का प्रश्न नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्वाभिमान व सांस्कृतिक गौरव का विषय है। मुझे विश्वास है कि राजभाषा विभाग के उपरोक्त प्रयासों से सभी मातृभाषाओं को आत्मसात करते हुए लोकसम्मत भाषा हिंदी विज्ञानसम्मत व तकनीकसम्मत होकर संपन्न राजभाषा के रूप में स्थापित होगी।

पुनश्च, आप सब को हिंदी दिवस की अनंत शुभकामनाएं।

नई दिल्ली,  
14 सितंबर, 2023

  
(अमित शाह)



75  
आज़ादी का  
अमृत महोत्सव

G20  
भारत 2023 INDIA  
वसुधैव कुटुम्बकम्  
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE





# महालेखाकार का संदेश

मुझे यह जानकर खुशी हो रही है कि हमारे कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका 'चेतना' के 34वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए किया जा रहा यह प्रयास सराहनीय है। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि राजभाषा के प्रचार-प्रसार एवं प्रगामी प्रयोग में 'चेतना' पत्रिका महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी एवं शत-प्रतिशत कार्यालयीन कार्य हिंदी में करने के लिए प्रेरणा प्रदान करेगी।



मैं इस पुनीत कार्य के लिए सभी रचनाकारों एवं पत्रिका समिति के सभी सदस्यों को धन्यवाद देता हूँ। राजभाषा कार्यान्वयन से जुड़े अधिकारियों एवं कर्मचारियों को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

जय हिंद ...



(पुष्कर कुमार)





## उपमहालेखाकार का संदेश

मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि कार्यालय द्वारा हिंदी गृह पत्रिका 'चेतना' के 34वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के निरंतर प्रयास से यह महत्वपूर्ण कार्य सफल हो पाया है। कार्यालय में राजभाषा हिंदी में शासकीय कार्य करने, अधिकारियों एवं कर्मचारियों में राजभाषा के प्रति निष्ठा जागृत करने में पत्रिका का योगदान रहा है। विभाग के सभी अधीनस्थ कार्यालयों के बीच विचारों के आदान-प्रदान करने में पत्रिका एक सशक्त माध्यम है। कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को इस पुनीत कार्य में सहयोग एवं समर्पण के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। पत्रिका समिति के सदस्यों के प्रयास बहुत ही सराहनीय है जिसके फलस्वरूप पत्रिका का अंतिम रूप दिया गया है।



पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारी शुभकामना है।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

जय हिंद ...



(मनमीत कुमार)





## उपमहालेखाकार का संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि कार्यालय की गृह पत्रिका 'चेतना' के 34वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। कार्यालय में राजभाषा का प्रचार-प्रसार में, अधिकारियों एवं कर्मचारियों में राजभाषा के प्रति निष्ठा जागृत करने में गृह पत्रिका का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। विभाग के अधीनस्थ कार्यालयों के बीच विचारों के आदान-प्रदान करने में पत्रिका का महत्वपूर्ण स्थान है। इस पुनीत कार्य के लिए राजभाषा से जुड़े कार्मिकों को बहुत-बहुत धन्यवाद एवं बधाई। गृह पत्रिका इसी प्रकार प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, यही हमारी कामना है।



पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारी शुभकामना है।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

  
(संजय कुमार सिन्हा)





## संपादकीय

यह हर्ष का विषय है कि कार्यालयीन हिंदी गृह-पत्रिका 'चेतना' के ३४वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। कार्यालय की स्मारिका के रूप में, राजभाषा के प्रचार-प्रसार एवं उत्तरोत्तर विकास में, संविधान में किए गए राजभाषा संबंधी प्रावधानों, राजभाषा अधिनियमों एवं नियमों का शत-प्रतिशत अनुपालन सुनिश्चित कराने में पत्रिका का महत्वपूर्ण योगदान है। अधिकारियों एवं कर्मचारियों में सृजनात्मक लेखन क्षमता विकसित करने में पत्रिका एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस प्रकार, वे अपना सभी शासकीय कार्य राजभाषा हिंदी में करने के लिए प्रेरित होते हैं।



कार्यालय में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा देना एवं कर्मिकों में हिंदी के प्रति रुचि बढ़ाना पत्रिका प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य है। वर्तमान अंक के प्रकाशन में अधिकारियों एवं कर्मचारियों का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ है। मुझे आशा और पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका के आगामी अंकों में भी हमारे कार्यालय के प्रबुद्ध रचनाकारों का सहयोग मिलता रहेगा एवं पत्रिका दिन-प्रतिदिन प्रगति-पथ पर अग्रसर रहेगी।

पत्रिका के इस अंक में अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने अपनी विद्वता का पूर्ण परिचय दिया है। राजभाषा के प्रति कर्मियों की निष्ठा का परिणाम है कि हिंदी गृह पत्रिका 'चेतना' के ३४वें अंक का प्रकाशन हो पाया है। पत्रिका के आवरण पृष्ठ पर प्रदर्शित बिहार का सांस्कृतिक विरासत संबंधित चित्र अपने आप में आकर्षक हैं। पत्रिका के प्रत्येक रचना की प्रकृति के अनुरूप चित्र भी प्रदर्शित किए गए हैं। पत्रिका में विविध प्रकार के रचनाओं को समावेशित किया गया है। इसके लिए सभी रचनाकार धन्यवाद के पात्र हैं।

राजभाषा के प्रचार-प्रसार एवं कार्यालय की स्मारिका के उद्देश्य से कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका का वर्तमान अंक एवं इससे पूर्व में प्रकाशित अन्य सभी अंकों का ई-प्रति हमारे कार्यालय की वेबसाइट के राजभाषा लिंक पर अपलोड किया जा रहा है। कार्यालय में यह एक नवीन शुरुआत है।

पत्रिका का वर्तमान अंक प्रिय प्रबुद्ध पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है। आपके विचार, मार्गदर्शन एवं प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी ताकि, इसके अगले अंक के प्रकाशन में सुधार करने में अधिक सहयोग प्राप्त हो सके। 'चेतना' का वर्तमान अंक पाठकों को पसंद आयेगा, इसी आशा एवं विश्वास के साथ यह पत्रिका आपके समक्ष समर्पित है।

जय हिंद ।

भरणी  
संपादक

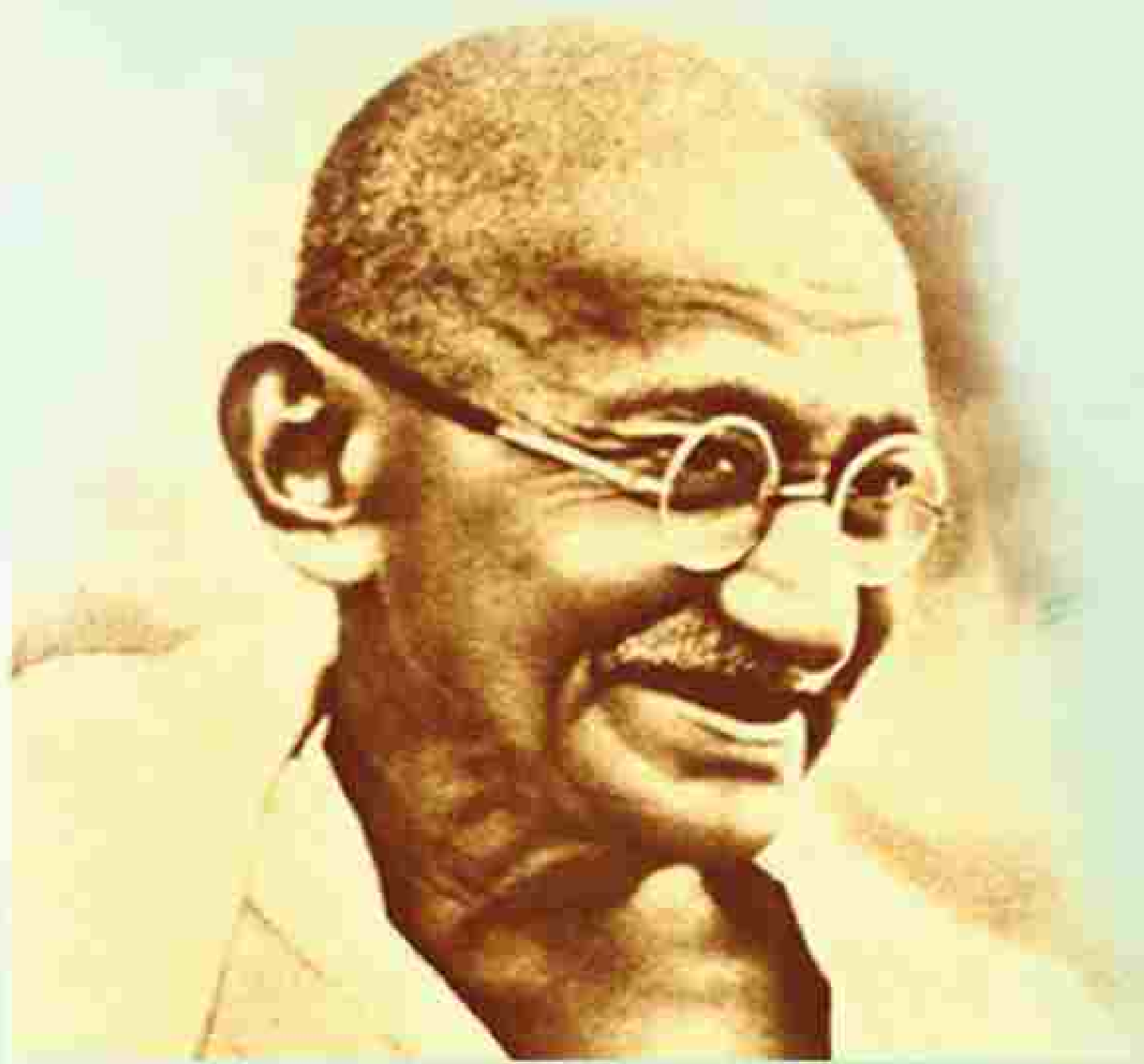




टिप्पणियां हिंदी में लिखिए ।  
प्रारूप हिंदी में तैयार कीजिए ।  
शब्दों के लिए अटकिए नहीं ।  
अशुद्धियों से घबराइए नहीं ।  
अभ्यास अविलंब आरंभ कीजिए ।







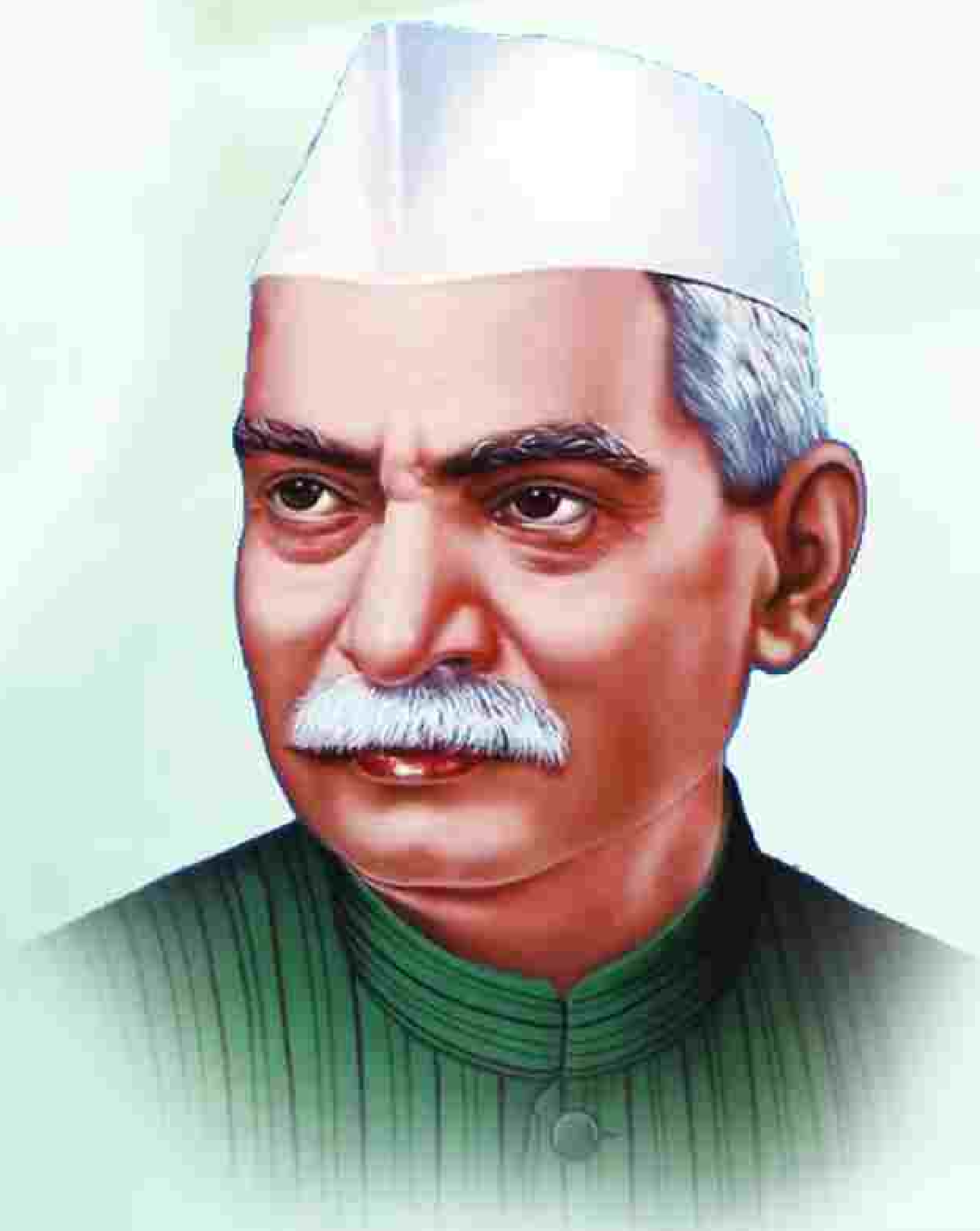
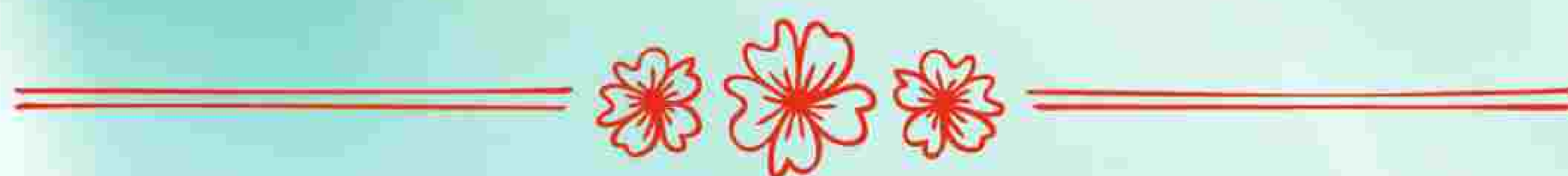
“हृदय की कोई भाषा नहीं है,  
हृदय-हृदय से बातचीत करता है  
और हिंदी हृदय की भाषा है।”

**-महात्मा गांधी**



“हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है  
जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का  
बहिष्कार नहीं किया।”

**-डॉ. राजेंद्र प्रसाद**



“हिंदी उन सभी गुणों से अलंकृत है, जिनके बल  
पर वह विश्व की साहित्यिक भाषा की अगली श्रेणी  
में सम्मानित हो सकती है।”

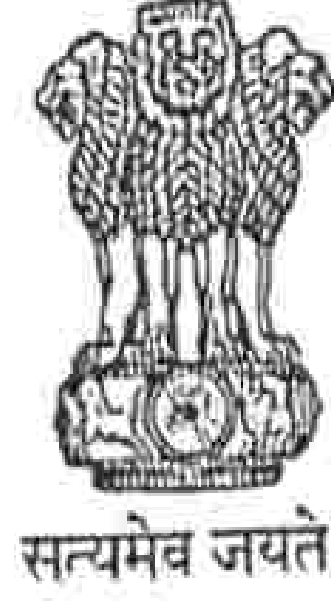
**-मैथिलीशरण गुप्त**





# आपके पत्र

● राष्ट्रीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग  
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1)  
पश्चिम बंगाल  
2, गवर्मेन्ट प्लेस (पश्चिम), ट्रेजरी बिल्डिंग्स,  
कोलकाता - 700 001



INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT  
OFFICE OF THE PRINCIPAL  
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-1)  
WEST BENGAL  
2, GOVT. PLACE (WEST), TREASURY BUILDINGS,  
KOLKATA-700 001  
Ph. (033) 2213-3151/52, Fax (033) 2213-3174  
e-mail : agauwestbengal1@cag.gov.in

संख्या: हिन्दी कक्ष/हिन्दी पत्रिका/पावती/231  
दिनांक: 15.11.2022

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिन्दी अनुभाग  
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार  
महालेखाकार भवन, वीरचंद पटेल पथ, आर ब्लॉक, पटना - 800 001

विषय : कार्यालयीन हिन्दी पत्रिका "चेतना" के 33वें अंक की पावती।

महोदय/महोदया,

पत्र क्रमांक: हि.अ./ले. एवं हक./22/चेतना/2022-23/68-1 दिनांक: 10.11.2022 के तहत आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा पत्रिका "चेतना" के 33वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आन्तरिक साज - सज्जा सुन्दर एवं प्रशंसनीय है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक हैं। आशा है कि यह पत्रिका हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

शान्त  
15/11/22  
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी)

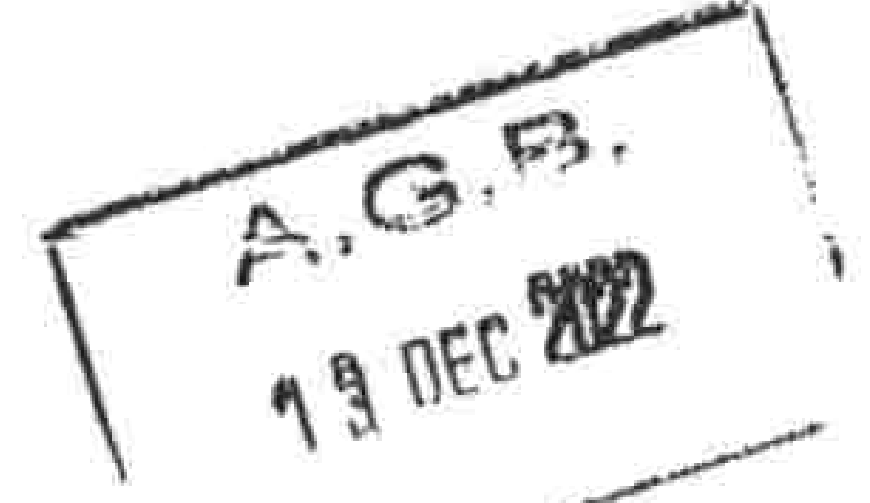
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), झारखण्ड, राँची

पत्रांक- हिन्दी प्रकोष्ठ/ले.प./पत्रिका पावती/2022-23/221

दिनांक- 25.11.2022

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (हिन्दी अनुभाग)  
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)  
बिहार, पटना



विषय- हिन्दी पत्रिका "चेतना" के 33वें अंक की प्राप्ति का प्रेषण।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय से प्रकाशित हिन्दी पत्रिका "चेतना" के 33वें अंक की एक प्रति की प्राप्ति हुई है। धन्यवाद! पत्रिका में निहित सभी रचनाएँ अत्यंत ही अच्छी हैं।

पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन हेतु सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी  
हिन्दी प्रकोष्ठ



कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, पर्यावरण  
एवं वैज्ञानिक विभाग, कोलकाता शाखा  
द्वितीय बहुस्तरीय कार्यालय भवन, छठा तल, निजाम पैलेस,  
ए.जे.सी. बॉस रोड 234/4, कोलकाता-700 020  
फोन : 2289/4111/12/13-033 फैक्स: 4060-2289-033  
ई मेल: bresdkolkata@cag.gov.in

संख्या हि.अ./1(17)21/2012-13/2021-22/434

02 DEC 2022  
दिनांक: 01.12.2022

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी,  
महालेखाकार (ले एवं ह.) का कार्यालय,  
बिहार,  
पटना-800001

विषय: हिन्दी पत्रिका "चेतना" के 33 वें अंक की अभिस्वीकृति एवं प्रतिक्रिया

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका "चेतना" के 33वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। सर्वप्रथम इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। यह पत्रिका राजभाषा हिन्दी के विकास की दिशा में किया गया एक विनम्र प्रयास धन्यवाद। "चेतना" राजभाषा के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिन्दी मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभा रही है। पत्रिका की प्रत्येक रचना रोचक, ज्ञानवर्धक पठनीय एवं सामाजिक चेतना से परिपूर्ण संदेश देती है।

पत्रिका का कलेवर, पृष्ठ सज्जा एवं मुद्रण अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका के उत्तम संपादन हेतु पत्रिका परिवार बधाई के पात्र है।

हिन्दी की सार्थकता के लिए प्रयासरत आपकी पत्रिका "चेतना" के उज्जवल भविष्य के लिए 'आकांक्षा' परिवार की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,  
हस्ता/-  
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)

A.G.B.  
07 DEC 2022



कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)  
Office of the Principal Accountant General (A&E)  
गुजरात, राजकोट Gujarat, Rajkot.

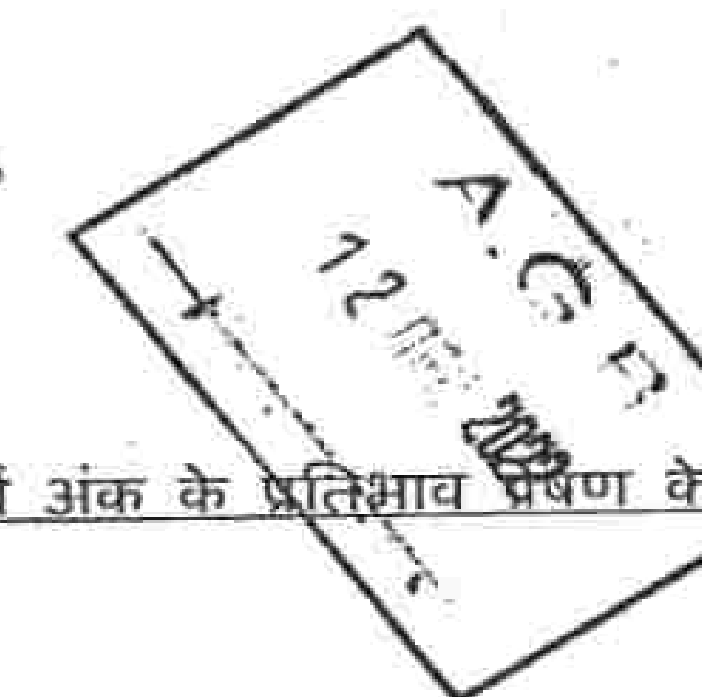


सं. हिन्दी अनुभाग/प्रतिभाव-19/2022-23/ 123

दिनांक: 07-12-2022

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी / हिन्दी अनुभाग,  
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),  
महालेखाकार भवन, वीरचंद पटेल पथ,  
बिहार, पटना-800001



विषय: हिन्दी गृह-पत्रिका "चेतना" के 33 वें अंक के प्रतिभाव प्रेषण के संबंध में।

महोदय/ महोदया,

आपके कार्यालय की हिन्दी गृह-पत्रिका "चेतना" के 33 वें अंक की ई-प्रति की प्राप्ति हुई है, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका में सभी रचनाकारों ने अपनी लेखनी से विषयानुसार रचनाओं का बड़ी ही खूबसूरती से वर्णन किया है। इसके लिए वे सभी बधाई के पात्र हैं। पत्रिका में बाल लेखकों द्वारा लिखी हुई रचनाएँ सराहनीय एवं प्रशंसनीय हैं और वे लिखी हुई रचनाओं के लिए विशेष रूप से बधाई के पात्र हैं और भविष्य के लिए उन्हें शुभकामनाएँ। नराकास, पटना कार्यालय की ओर से कार्यालय को तिमाही में शत-प्रतिशत हिन्दी में पत्राचार करने पर प्राप्त प्रशस्ति-पत्र के लिए बहुत-बहुत बधाई। पत्रिका के मुख पृष्ठ पर सात शहीद स्मारक, विधानसभा सचिवालय द्वार, पटना की मूर्तियाँ वाला चित्र बहुत ही सुंदर है, जो पत्रिका की सुंदरता में वृद्धि करता एवं उसे आकर्षक बनाता है। पत्रिका में कार्यालयी झलकियाँ पत्रिका की सुंदरता में वृद्धि करती हैं। पत्रिका में दिए हुए महापुरुषों के कथन और आप सब की लेखनी से लिखी हुई रचनाओं के माध्यम से राजभाषा के प्रचार-प्रसार में आप सबका योगदान सराहनीय है। पत्रिका के पत्रिका में लेखी कार्यालय टिप्पणियाँ ज्ञानवर्धन एवं जानकारी हेतु बढ़िया हैं। पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है। पत्रिका के सफल संपादन के लिए संपादक मण्डल को बहुत-बहुत बधाई।

पत्रिका निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर होती रहे, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ पत्रिका के अगले अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

भवदीय,

(वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिन्दी)



# आपके पत्र



कार्यालय महालेखाकार (ले० एवं हक०) उत्तराखण्ड



महालेखाकार भवन, कौलागढ़, देहरादून-248195

पत्रांक: 26/हि०प्र०/2022-23/विभागीय पत्रिकाएं/पावती/न-35 दिनांक 29.11.2022

सेवा में

वरिष्ठ लेखाधिकारी  
हिन्दी अनुभाग,  
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)  
बिहार, पटना - 800 001

विषय:- हिन्दी पत्रिका "चेतना" के 33 वें अंक की प्राप्ति के सम्बन्ध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका "चेतना" का 33 वाँ अंक प्राप्त हुआ। सहर्ष धन्यवाद।

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्चकोटि की एवं ज्ञानवर्धक हैं। प्रस्तुत अंक सराहनीय, पठनीय एवं संग्रहणीय है एवं राजभाषा की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु एक सार्थक प्रयास है।

पत्रिका के उत्तम संयोजन, संपादन हेतु संपादक मण्डल को बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

*महोदय*  
29/11/22  
हिन्दी अधिकारी

ई-मेल द्वारा

Government of India

Indian Audit and Accounts Department

Principal Accountant General (Audit)

Himachal Pradesh, Shimla-171003



भारत सरकार  
भारतीय लेखा तथा लेखा परीक्षा विभाग  
प्रधान महालेखाकार, (लेखापरीक्षा)  
हिमाचल प्रदेश, शिमला-171003

संख्या: हि.क./बाह्य पत्रिका/2022-23/647

दिनांक:-25.11.2022

सेवा में

व. लेखा अधिकारी, हिन्दी अनुभाग  
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)  
बिहार, पटना।

विषय:- हिन्दी पत्रिका "चेतना" के 33वें संस्करण की ई-प्रति की पावती के सम्बन्ध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका "चेतना" का 33वें संस्करण की ई-प्रति प्राप्त हुई। इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उत्कृष्ट, पठनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

भवदीया

*महोदय*  
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी  
(हिन्दी कक्ष)



कार्यालय महालेखाकार, लेखापरीक्षा-II  
पश्चिम बंगाल  
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL,  
AUDIT-II, WEST BENGAL

संख्या : हिन्दी कक्ष/पत्रिका/पावती/90 दिनांक: 27/12/2022

27 DEC 2022

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/ हिन्दी अनुभाग  
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार, पटना

विषय: कार्यालय की हिन्दी गृह "चेतना" के 33वें ई-अंक के प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका "चेतना" के 33वें ई-अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक हैं। साथ-ही पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षक है। कविताएं एवं लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। इनमें से जो रचनाएं अति उत्तम लगीं, वो हैं- मजदूर के जूते, किराये का घर, धन की माया, छूट गया जो बचपन आदि।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिये बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

भवदीया,

*व. लेखापरीक्षा अधिकारी*  
29/11/22  
व. लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी कक्ष



भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग  
महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय  
पूर्व तट रेलवे, तीसरी मंजिल, रेल सदन  
भुवनेश्वर-751017(ओडिशा)



स.- रा. भा. अ./पत्रिका/2022-23

दिनांक-29.11.2022

सेवा में,

वरिष्ठ लेखाधिकारी (हिन्दी अनुभाग)  
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), बिहार,  
महालेखाकार भवन, वीरचन्द पटेल मार्ग, आर. ब्लाक,  
पटना -800001

विषय- हिन्दी पत्रिका "चेतना" के 33वें अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी ई-पत्रिका "चेतना" का 33वाँ अंक प्राप्त हुआ, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रूपरेखा अत्यधिक आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और रोचक हैं हैं, विशेषकर निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएं अत्यधिक प्रशंसनीय हैं:-

| क्रम | रचनाकार         | रचनाएँ                               |
|------|-----------------|--------------------------------------|
| 1.   | संजय कुमार ओझा  | वास्तु वर्णन : संस्कृति का एक अध्याय |
| 2.   | श्रीराम पाण्डेय | किराए का घर                          |
| 3.   | अर्चना          | गुहार एक लड़की की                    |
| 4.   | रंजीत कुमार     | छूट गया जो बचपन                      |
| 5.   | धीरज कुमार      | मन की शांति अनमोल है                 |

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चकोटि बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

यह पत्र निदेशक लेखापरीक्षा के अनुमोदन से जारी किया गया है।

भवदीया,

*महोदय*  
(कीर्ति श्री)  
हिन्दी अधिकारी

सी.जी.ओ कॉम्प्लेक्स, डी.एफ ब्लॉक, सॉल्ट लेक, 5 वां तल, कोलकाता - 700064

3<sup>rd</sup> MSO Building, 5<sup>th</sup> Floor, CGO Complex, DF Block, Salt Lake, Kolkata - 700 064

Phone : (033) 2358-6886/92; FAX : (033) 2337-6966, E-mail: agauwestbengal2@cag.gov.in



# अनुक्रमणिका

| क्र० सं० | शीर्षक                                                       | रचनाकार (सर्व सुश्री/ श्रीमती/श्री) | पृष्ठ संख्या |
|----------|--------------------------------------------------------------|-------------------------------------|--------------|
| 1.       | भू-मंडलीकरण के दौरान नारी सशक्तिकरण (लेख)                    | प्रियंका कुमारी                     | 1 - 3        |
| 2.       | डॉ राजेंद्र प्रसाद: आधुनिक बिहार के प्रेरणा स्रोत (शोध)      | धीरज कुमार                          | 4 - 7        |
| 3.       | गरीबी (कहानी)                                                | मनमीत कुमार                         | 9 - 10       |
| 4.       | भ्रूण- हत्या एक अभिशाप (कविता)                               | विश्वपति सिंह                       | 11 - 13      |
| 5.       | झारखंड भ्रमण (यात्रा-वृत्तांत)                               | सन्नी कुमार                         | 14 - 17      |
| 6.       | चिड़ियों को दाना डालने के बहाने (कहानी)                      | श्रीराम पाण्डेय                     | 19 - 20      |
| 7.       | अंतर्द्वंद (लेख)                                             | बंशीधर मिश्र                        | 21 - 22      |
| 8.       | मातृभूमि (कविता)                                             | पूर्णन्दु कुमार झा                  | 23 - 24      |
| 9.       | गजल (कविता)                                                  | राम सिंगार चौहान                    | 26           |
| 10.      | ट्रान्सफर (एकाँकी)                                           | सन्नी कुमार                         | 27 - 30      |
| 11.      | पापा (कविता)                                                 | प्रतिमा कुमारी                      | 31           |
| 12.      | मुकदमा (कहानी)                                               | चन्द्र किशोर तिवारी                 | 33 - 34      |
| 13.      | कुछ ना बदला (कविता)                                          | आभा झा                              | 35 - 36      |
| 14.      | गौतम बुद्ध (जीवनी)                                           | सोनी कुमारी                         | 37 - 40      |
| 15.      | समाज की सोच (लेख)                                            | हेमलता कुमारी                       | 43 - 44      |
| 16.      | एक छोटा बच्चा (कहानी)                                        | उदयभान विश्वकर्मा                   | 45 - 46      |
| 17.      | एक भक्त की ललकार - ए खुदा, तेरी खुदाई मुझे पसंद नहीं (कविता) | राजेश कुमार बाजपेयी                 | 47           |
| 18.      | सनातन बनाम धर्म-निरपेक्ष (लेख)                               | उत्तम कुमार                         | 49 - 50      |



| क्र० सं० | शीर्षक                                               | रचनाकार (सर्व सुश्री/ श्रीमती/श्री) | पृष्ठ संख्या |
|----------|------------------------------------------------------|-------------------------------------|--------------|
| 19.      | मातृभूमि के सपूत (कविता)                             | मनीष कुमार-IV                       | 51           |
| 20.      | जनरल कम्पटीशन (कहानी)                                | मुरली मनोहर झा                      | 52 – 53      |
| 21.      | बिहार में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग की संभावनाएं (लेख) | प्रीति कुमारी                       | 55 – 56      |
| 22.      | नारी (कविता)                                         | प्रतिमा कुमारी                      | 57           |
| 23.      | बनो तो ऐसा रतन टाटा जैसा (लेख)                       | सोनी कुमारी                         | 58 – 61      |
| 24.      | संगति का असर (कहानी)                                 | हेमलता कुमारी                       | 63 – 64      |
| 25.      | पर्यावरण-प्रदूषण (लेख)                               | आयुष राज                            | 65 – 67      |
| 26.      | धीरुभाई अंबानी (जीवनी)                               | मुकेश शंकर                          | 68 – 69      |
| 27.      | अलविदा (कविता)                                       | संजय कुमार ओझा                      | 71 – 72      |
| 28.      | ईमानदारी का पौधा (कहानी)                             | ऋषव मांझी                           | 73           |
| 29.      | सुखांत (कहानी)                                       | संगीता कुमारी                       | 74 – 77      |
| 30.      | वीणापाणि एवं शिव प्रार्थना (कविता)                   | राजेश कुमार बाजपेयी                 | 79           |
| 31.      | विस्मृत पल (कहानी)                                   | अमरेन्द्र कुमार पाण्डेय             | 80 – 84      |
| 32.      | फेमिनिज्म (लेख)                                      | राकेश कुमार रौशन                    | 85 – 88      |
| 33.      | सीमा प घमासान (कविता)                                | विश्वपति सिंह                       | 90 – 93      |
| 34.      | देश में निकला होगा चाँद (लेख)                        | संजय कुमार ओझा                      | 94 – 97      |
| 35.      | ये भारत की नदियां (कविता)                            | आदित्य राज                          | 98           |





# भू-मंडलीकरण के दौरान नारी सशक्तिकरण

सशक्तिकरण की अवधारणा एक असमंजस उत्पन्न करने वाली अवधारणा है। इसके संबंध में प्रत्येक व्यक्ति द्वारा अलग-अलग अर्थ लगाया जाता है। सामाजिक संदर्भ में महिला सशक्तिकरण की आशाएं महिलाओं को अधिक सामर्थ्यवान, बलशाली, शौर्यवान एवं पराक्रमी बनाने से हैं। भारतीय परिदृश्य में महिलाओं को पूर्व से ही आर्थिक, शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से कमजोर समझा जाता है तथा इन्हें सामाजिक दासता एवं बंधन में रहने के लिए विवश कर दिया गया है।

तो आज हमें महिला सशक्तिकरण की बात करने की आवश्यकता महसूस नहीं होता क्योंकि समाज हमेशा अपने पूर्ववर्ती समाज को देखते हुए ही अपनी परंपराएं बनाता एवं बिगाड़ता है। केवल भारतीय समाज ही नहीं अपितु विश्व की किसी भी जाति, संप्रदाय या वर्ग का समाज प्राकृतिक रूप से पुरुष सत्तात्मक समाज रहा है, और वर्तमान में भी है। यदि ऐसा ना होता तो देशों में तमाम स्त्री लेखिकाओं को समाज से बिकाऊ को नारीवाद का संज्ञान आदि नहीं की गई होती और उन्हें पुरुषों द्वारा बनाई गई तमाम परंपराएं न तोड़नी पड़ती।

जबकि-नारी मानव जाति की जननी और दो पीढ़ियों को जोड़नेवाली एक कड़ी है। भारतीय संस्कृति में महिलाओं को सदैव अधिक महत्व दिया गया है। हमारे धार्मिक ग्रंथों और पुराणों में नारी को देवीतुल्य माना गया है। नारी के संबंध में मनुस्मृति में कहा गया है “यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः” किंतु आदिकाल के इस कहावत से ही सिर्फ स्त्रियों की सामाजिक स्थिति का आकलन नहीं हो जाता है। मुगल साम्राज्य की स्थापना के बाद ब्राह्मणों द्वारा हिंदू धर्म की रक्षा एवं स्त्रियों के अस्तित्व तथा रक्त की शुद्धता बनाए रखने के लिए महिलाओं के संबंध में नियम बना दिया गया था। महिलाओं की आर्थिक पराधीनता तथा पर्दा प्रथा के कारण शिक्षा एवं संयुक्त परिवार की सुदृढ़ता के चलते महिलाओं की स्थिति निम्नतर होती चली गई। यदि आदि काल में ऐसा ना होता



श्रीमती प्रियंका कुमारी  
पति -श्री धीरज कुमार  
वरिष्ठ लेखाकार





विश्व प्रसिद्ध फ्रांसीसी लेखिका सिमोना-द-वोउकार, इस्लामी अध्ययन के प्रो० डॉ० अमीना वदूद और बंगलादेशी लेखिका तस्लीमा नसरीन जैसी सैकड़ों लेखिकाओं को मुक्ति के लिए आंदोलन क्यों करना पड़ रहा है। इस तरह भारतीय समाज स्त्रियों के मामले में रूढ़िवादी ही रहा है। मनु स्मृति में उद्धृत है:-

“पिता रक्षति कौमारेमती रक्षति योवने ।  
रक्षन्ति स्थविरे पुत्राः न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति ।।”

अर्थात् स्त्री को बचपन में पिता के अधीन, जवानी में पति के अधीन, बुढ़ापे में पुत्र के अधीन रहना पड़ता था अर्थात् कमोबेश यही स्थिति स्त्रियों की आज भी बनी हुई है। जिसके चलते समाज में अशिक्षा, कुपोषण, अस्वास्थ्य, बलात्कार, दहेज एवं भ्रूणहत्या आदि जैसी सामाजिक कुरीतियाँ दृष्टिगोचर होती हैं। महिलाएं आर्थिक पराबलवान, अशिक्षा, अज्ञानता, रूढ़िवादिता के फलस्वरूप पुरुष प्रधान समाज में अपनी स्थिति ज्यों की ज्यों स्वीकार करके संतोष करने पर विवश है। ऐसी परिस्थिति में मानव समाज की लगभग इस आधी जनसंख्या की भागीदारी जिस तरह समाज और देश के विकास में होनी चाहिए, वो नहीं हो पा रही है। अतः महिलाओं का सर्वांगीण विकास किए बगैर देश के विकास में उनकी भागीदारी सुनिश्चित नहीं की जा सकती। सुप्रसिद्ध विचार स्त्रोत ने कहा है-

“नारी की उन्नति या अभिनति पर ही  
राष्ट्र की उन्नति अवनति निर्धारित है।”

महिला सशक्तिकरण का प्रश्न दुनिया भर के नेताओं और विवेकशील व्यक्तियों के लिए कई दशकों से चिंता का विषय रहा है। महिलाओं की स्वतंत्रता, समानता, आर्थिक प्रगति एवं उन्नति किसी भी देश के सर्वांगीण विकास का परिचायक है। किंतु अनेक प्रयासों के बावजूद भी महिलाएं पुरुषों के समान इस भूमंडलीकरण के दौर में अपना अस्तित्व बनाए रखने में सक्षम नजर नहीं आ रही है।

महिला सशक्तिकरण जो महिलाओं के सामाजिक उद्घाटन, शैक्षिक, उन्नति, स्वास्थ्य, सुरक्षा, रोजगार उन्मुखता व अधिकारों की रक्षा को स्वयं में समेटे हैं, ने महिलाओं की दशा एवं दिशा दोनों निश्चित की है। पिछले कुछ वर्षों से

सरकारें महिला सशक्तिकरण के अभिमान में जोर-सोर से जुटी है एवं सरकारी नीतियों में महिलाओं की सहायता सुनिश्चित की जा रही है। 73वें संविधान संशोधन के माध्यम से सरकार ने अभी गांव को 33% आरक्षण ग्राम पंचायत से जिला पंचायत तक तो सुनिश्चित कर दिया महिलाओं के विकास के लिए एक समग्र दृष्टिकोण अपनाते हुए महिलाओं को अधिकार प्रदान करते हेतु राष्ट्रीय महिला कोष, राष्ट्रीय महिला संसाधन केंद्र, ग्रामीण महिला विकास एवं सशक्तिकरण योजना राष्ट्रीय महिला आयोग आदि का गठन किया गया है ताकि देश की प्रत्येक महिला को मानसिक एवं शारीरिक रूप से सशक्त बनाया जा सके। संयुक्त राष्ट्र द्वारा 2001 को महिला अधिकार वर्ष के रूप में मनाया गया उसी वर्ष महिलाओं को अधिकार रूप में मनाया गया उसी वर्ष महिलाओं को अधिकार प्रदान करने के बारे में राष्ट्रीय नीति के लक्ष्य को महिलाओं के पूर्व विकास के लिए रचनात्मक और सामाजिक नीतियों के माध्यम से एक ऐसा वातावरण बनाया जिसमें वह अपनी पूर्ण क्षमता हासिल कर सके। महिलाओं को राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और नागरिक सभी क्षेत्रों में पुरुष के समान कानूनी अधिकार और राजनीतिक जीवन में निर्णय लेने की प्रक्रिया में समान भागीदारी हो, तथा महिलाओं और बालिकाओं के विरुद्ध सभी प्रकार की हिंसा समाप्त हो महिला सशक्तिकरण का सबसे अधिक कारगर उपाय है महिलाओं को शिक्षित करना या इस बात से भी साबित होता है कि देश के राज्यों में महिला साक्षरता दर ऊंची है वहां जनसंख्या, मातृ मृत्यु बाल विवाह जैसी मानक भी उसी अनुपात में ऊंचे हैं। अतः शिक्षा महिला सशक्तिकरण की अनिवार्य आवश्यकता है।

प्रयास नियंत्रण हमारे सामने आ रहे हैं। कुछ समय पूर्व तक जहां कुछ क्षेत्रों पर केवल पुरुषों का एकाधिकार समझा जाता था उन क्षेत्रों में भी महिलाओं ने सफलता पाई है। चाहे एवरेस्ट का शिखर हो, प्रशांत महासागर हो या अंतरिक्ष सभी जगह महिलाओं ने अपना परचम लहराया है। आज ऐसा कोई भी कार्य क्षेत्र नहीं है, जहां महिलाएं ना पहुंच रही हो। सभी जगह महिलाओं ने अपनी



योग्यता को साबित कर दिखाया है। इस बदलती तस्वीर के पीछे सरकारी नीतियों एवं उनके समाज सुधारकों की उत्कृष्ट लालसा छिपी है। संविधान में महिलाओं को न केवल पुरुषों के समान मौलिक अधिकार दिए गए हैं बल्कि उन्हें परंपरागत बंधनों से मुक्त कराने के लिए विशेष और प्रोत्साहन का प्रावधान भी किया गया है। आज भारतीय महिलाएं/पुरुषों की तरह, हर क्षेत्र में नौकरी एवं व्यवसाय कर स्वावलंबी हैं और देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही हैं। किंतु फिर भी वर्तमान समय में समाज द्वारा ही विकसित कुछ ऐसी समस्याएं हैं, जो महिला सशक्तिकरण में बाधक हैं। महिला सशक्तिकरण तभी संभव है जब तक सरकारी योजनाओं तथा कार्यक्रमों के अलावा, समाज के लोगों तथा उनकी मानसिकता में सुधार नहीं होगा। आवश्यकता इस बात की है कि महिलाओं के प्रति मानवीय संवेदनाओं को जगाया जाए।

महिला में अपार शक्ति है इन्हीं कारणों से इन्हें शक्ति के अवतार के रूप में पूजा जाता है। महिलाओं में अपार क्षमताएं हैं। इन क्षमताओं को इन्हें पहचानने की आवश्यकता है। महिलाएं इन्हीं शक्ति के बल पर नैतिक, सामाजिक एवं आर्थिक सशक्तिकरण के अपने मार्ग को स्वयंपरास्त कर सकती हैं।

“नारी शीतल नीड़ मनुज का, नारी नेकी मृदुल सरिता पावस की बदली है रिमझिम, नर के निविड़ तिमिर की तड़िता।।”

नर और नारी दोनों ही जीवन रूपी रथ के दो पहिए हैं। दोनों

का अस्तित्व है शिक्षा समाज का दर्पण है और दर्पण का प्रतिबिंब। अतः नारी को शिक्षा से वंचित रखना जीवन के संतुलित विकास में व्यवधान उपस्थित करना है। स्त्रियों को शिक्षा से वंचित रखने से ना केवल भारतीय समाज का अपितु समाज का बड़ा अहित हुआ है। परिवार सामाज की सर्वोत्तम शिक्षिका है। सबसे पहली शिक्षा बच्चे को मां से ही मिलती है प्रसिद्ध अमेरिकी दार्शनिक एमरसन के शब्दों में “We are what their mother made them” मनुष्य वही होते हैं, जो उनकी माताएं बनाती हैं। नेपोलियन के शब्दों में तो बच्चों का भाग सदैव उसकी मां की वृत्ति है। “The further destiny of child is always the work of the mother” इन सब बातों से नारी शिक्षा की अनिवार्यता का पता चलता है। आज नारी को तकनीकी और स्वरोजगारोन्मुख शिक्षा देने की जरूरत है। सब जगह नारी शिक्षा के प्रति उदासीनता व्याप्त है। आज नारी शिक्षा दायित्वपूर्ण चुनौती के रूप में उभरा है। हर जगह नारी शिक्षा का जय-जयकार हो रही है। पर हर जय-जय कार में कार्य छिपा रहता है। शिक्षा के नाम पर नारी का शोषण, अपहरण, बलात्कार और दहेज हत्या का शिकार बना दिया जाता है। आज की नारी को अधिकार और सम्मान चाहिए ना कि तलाक और अग्नि दाह। आज की नारी को अपने दायित्व एवं चुनौती को स्वीकार करते हुए अपनी शिक्षा के प्रति जागरूक होकर यह संकल्प लेना होगा कि-

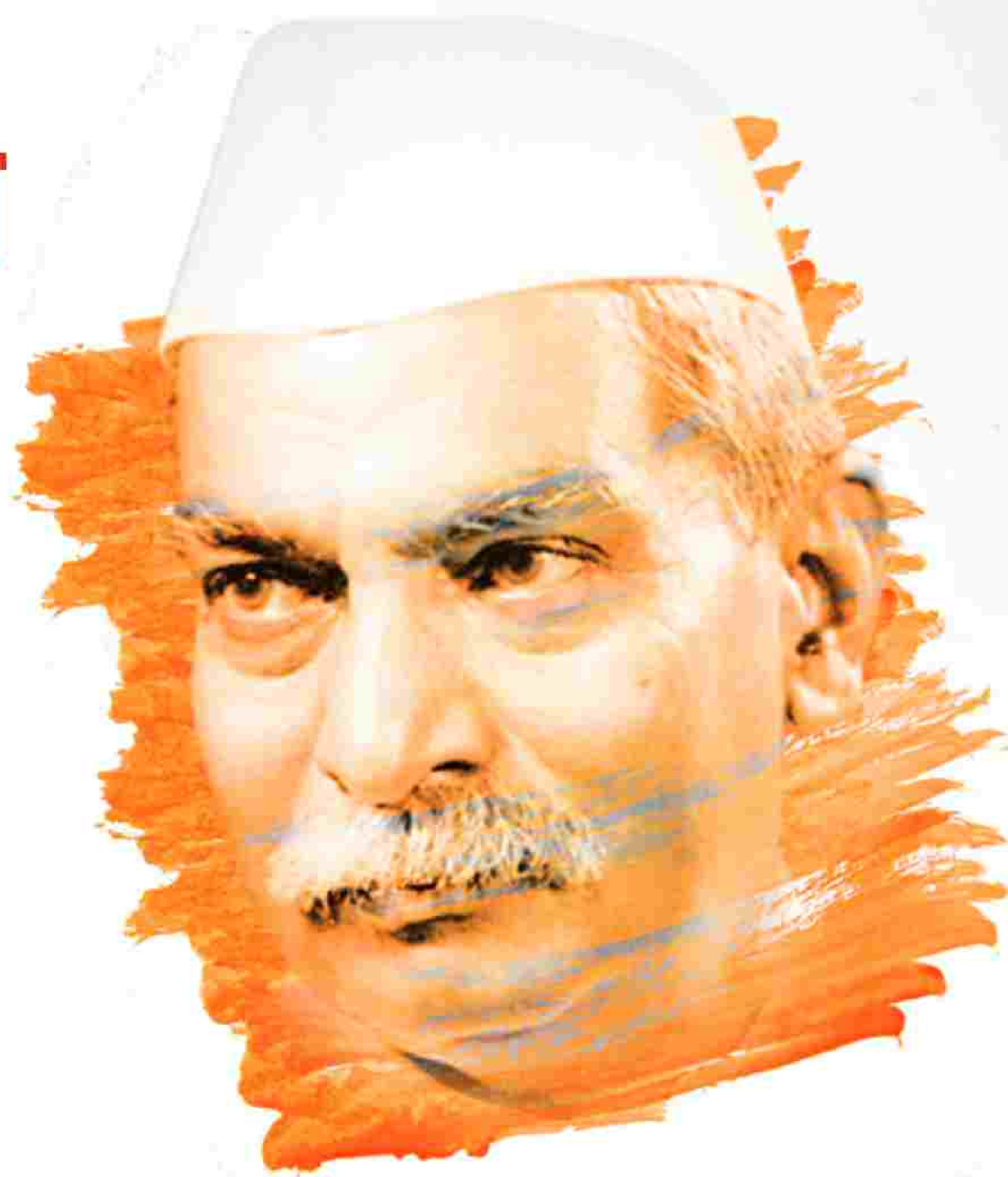
“अग्नि ज्वाला में जलती आयी, नारी आगे नहीं जलेगी।  
अनुचित राजाज्ञा राम की, सुन लो आज से नहीं चलेगी।”





# डॉ राजेंद्र प्रसाद आधुनिक बिहार के प्रेरणा स्रोत

“संवेदना जगाने की एक चुभन काफी है,  
धरा दुलारने को एक गगन काफी है।  
हताशा के इस दौर में एक दीप तो जलाओ,  
अंधेरा मिटाने की एक किरण काफी है।”



श्री धीरज कुमार  
वरिष्ठ लेखका

उ पर्युक्त कविता की पंक्तियां नालंदा विश्वविद्यालय के वीजीटर एवं पूर्व राष्ट्रपति डॉ ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम के द्वारा रचित हमारे देश के प्रथम राष्ट्रपति सादगी की प्रतिमूर्ति डॉ राजेंद्र प्रसाद पर शत-प्रतिशत सही प्रतीत होती है। अंग्रेज दूशासन के विरुद्ध रणतुर्य बज उठा साबरमती के संत, महान राजनीतिज्ञ महात्मा गांधी ने ऊद्घोष किया, मुझे देश के कोने-कोने से महारथी चाहिए।

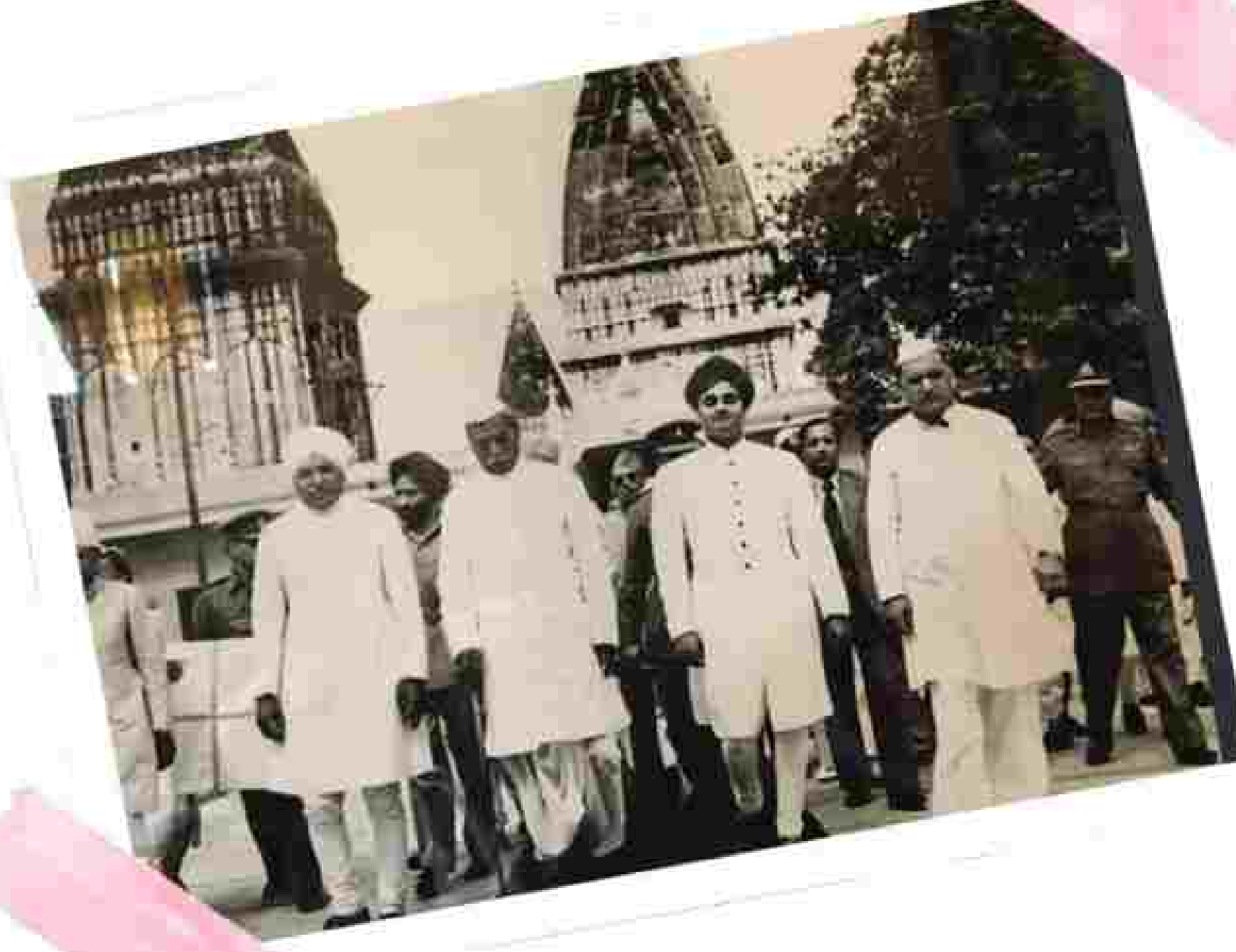
जनक और याज्ञवल्क्य, गौतम, महावीर, चाणक्य और चंद्रगुप्त के बिहार ने कहा-सब मणिरत्नों के ऊपर मेरा या लघु दान और उसने इस राष्ट्रीय दान के रूप में राजेंद्र की आज बढ़ा दिया किंतु आज भारत का बच्चा-बच्चा भी जानता है कि यह दान कितनी कीमती था सबसे अनूठा, सबसे निराला।

राजेंद्र बाबू का नाम लेते हैं ऐसा अनुभव होने

लगता है मानो किसी वीतराग शांत एवं सरल सन्यासी का नाम लिया जा रहा हो और सहसा एक भोली भाली निश्छल, निष्कपट, निर्दोष, सौम्य मूर्ति सामने आती है। भागीरथी के पवित्र जल के समान उनका पुनीत एवं अकृत्रिम आचरण आज भी मनुष्य के हृदय को पवित्र बना रहा है। वे उन योगीराजों में थे, जो वैभव एवं विलासिता में रहते हुए भी पूर्ण विरक्त होते हैं। वे राष्ट्रपति के सर्वोच्च गौरव एवं गरिमा के पद पर आसीन होते हुए भी गर्वरहित थे। वे गीता में वर्णित अनासक्त कर्म योग की साक्षात् प्रतिमूर्ति थे।

बिहार राज्य में भी सौभाग्यवती है छपरा जिले की जीरादेई की वह धरती जिसकी धूल में लोट-लोट कर बड़े हुए थे, हमारी आँखों के तारे देश रत्न राजेंद्र प्रसाद। 3 दिसंबर 1884 ई० को राजेंद्र बाबू के जन्म से बिहार प्रांत की भूमि गौरवान्वित





हुई थी और सारण जिला का एक संभ्रांत कायस्थ परिवार जगमगा उठा इस अभूतपूर्व शिशु को गोद में लेकर। उनकी प्रारंभिक शिक्षा उर्दू माध्यम से प्रारंभ हुई थी। इसके बाद वे जिला स्कूल छपरा के छात्र हुए। “होनहार विरवान के होत चिकने पात” वाली कहावत के अनुसार ये प्रारंभ से ही प्रबुद्ध और मेधावी छात्र थे। हाई स्कूल से एम० ए० तक सभी परीक्षाएं इन्होंने प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की थी, एल० एल०बी और एल० एल० एम परीक्षाओं में भी वे प्रथम रहे। वे छात्र जीवन के 11 सोपान पर पाँव बढ़ाते गए और सफलता उनकी ग्रीवा में जयमाला डालती गई। यदि किसी भारतीय नेता के विद्यार्थी जीवन में उसकी उत्तर पुस्तिकाओं का परीक्षण कर यह अभिशंसा की गई हो परीक्षार्थी परीक्षक से अधिक योग्य है तो वे हैं, आदर्श कुशाग्र बुद्धि राजेंद्र बाबू।

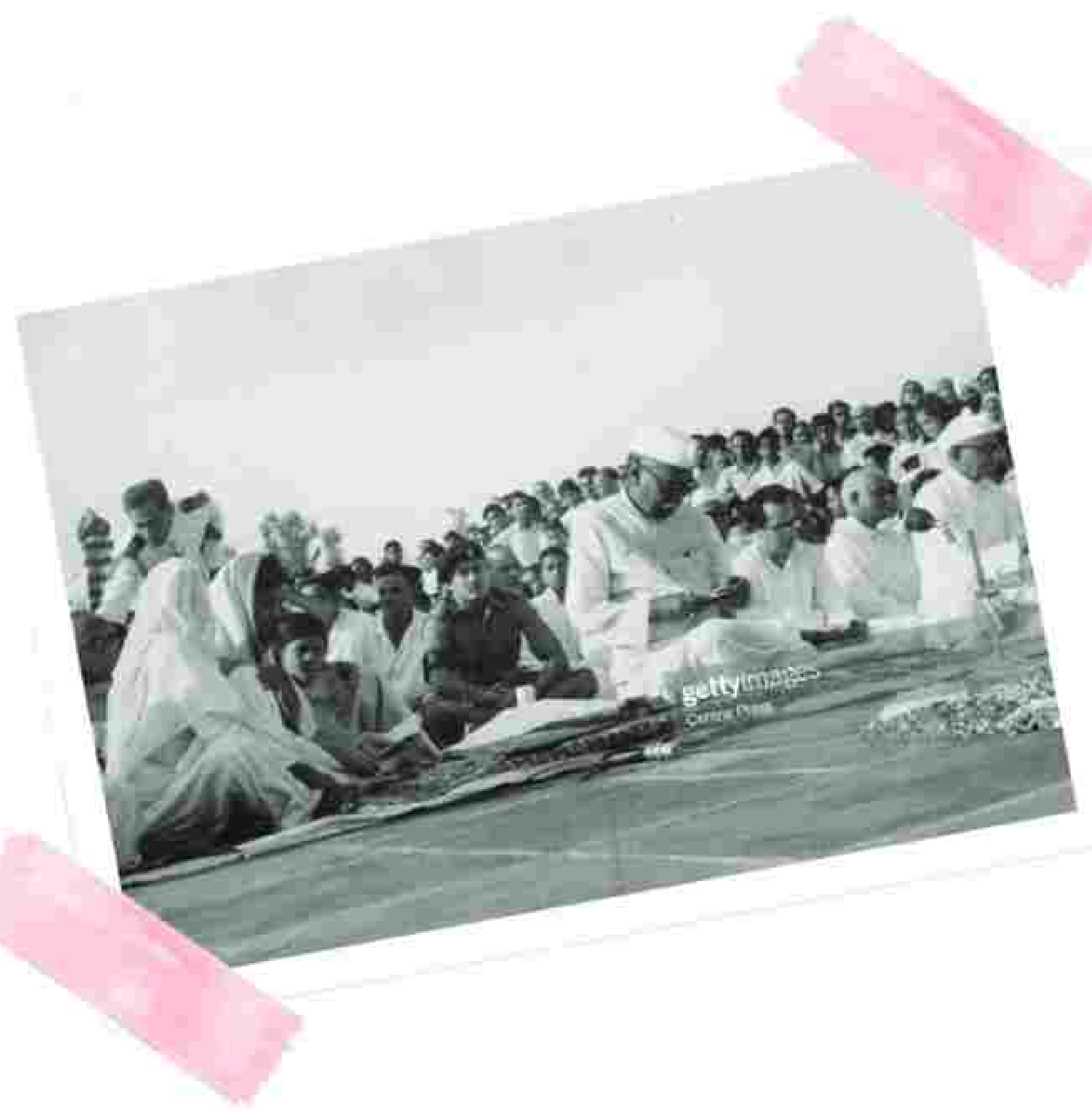
राजेंद्र बाबू अपने विद्यार्थी जीवन से ही राजनीति में हिस्सा बढ़ाने लगे थे। कोलकाता में सन 1906 ई० में उन्होंने बिहारी छात्रों की संगठित करने के लिए बिहारी क्लब स्थापित किया था। सन 1905-06 ईस्वी में बंग भंग आंदोलन ने उन्हें बड़ा पीड़ित किया और उनके मन में अंग्रेजों से लोहा लेने का संकल्प दृढ़ होने लगा। इसी वर्ष उन्होंने पटना में बिहार प्रांतीय छात्र सम्मेलन का आयोजन किया आज जो देश में छात्रों के इतने संगठन है उनके आदि जनक राजेंद्र बाबू ही हैं। अपना छात्र जीवन समाप्त कर वे मुजफ्फरपुर के जी० बी० कॉलेज में अंग्रेजी के अध्यापक नियुक्त हुए। यहां से वे कोलकाता चले गए और वहां सिटी कॉलेज में अर्थशास्त्र के अध्यापक हुए। वकालत पास करने के बाद वे कोलकाता हाईकोर्ट में प्रेक्टिस करने लगे। उसके बाद पटना में हाईकोर्ट बना तो वे यहां चले आए। वे बड़े ही मेधावी तथा उद्योगी थे। उद्योगी पुरुषों के पास लक्ष्मी स्वयं

चली आती है। संस्कृत में कहा भी गया है- ‘ उद्योगिनः पुरुष सिंहमुपौती लक्ष्मी; उनकी गणना चोटी के वकीलों में की जाने लगी।

रोलेक्ट एक्ट बनने के पश्चात उन्होंने वकालत को तिलांजलि दे दी और गांधी जी के असहयोग आंदोलन में सम्मिलित हो गए। प्रारम्भ में राजेंद्र बाबू का जीवन गोपाल कृष्ण गोखले से प्रभावित था। गोखले उन्हें “सर्वेंट्स ऑफ़ इंडिया सोसाइटी” का सदस्य बनाना चाहते थे। गांधी जी के सिद्धांतों और आदर्शों से आकर्षित होकर राजेंद्र बाबू तन, मन, धन से उनके अनुयायी हो गए और देश सेवा का व्रत लिया। अकबर इलाहाबादी ने कहा है - “कमी नहीं कद्रदानों की अकबर करें तो कोई कमाल पैदा” गांधी जी जैसे कद्रदान ने राजेंद्र बाबू को पहचाना। जब सन 1917 ई० में महात्मा गांधी चंपारण सत्याग्रह आंदोलन के सिलसिले में बिहार आए तो राजेंद्र उन्हें पूरा-पूरा सहयोग दिया लोगों ने उन्हें बिहार गांधी कहकर उनके प्रति अपनी श्रद्धा प्रदर्शित की।

राजेंद्र बाबू बिहार में सत्याग्रह की प्रगति देखने के लिए यात्रा कर रहे थे। छपरा में पटना की घटना जिसमें गुलजार बाग में नमक सत्याग्रह के दौरान स्वयं सेवकों पर पुलिस द्वारा प्रहार किए जाने की खबर मिली। उनके साथ आचार्य कृपालानी, अनुग्रह नारायण सिंह और मथुरा प्रसाद भी थे। यह घटना 16 अप्रैल 1930 की है। उन्होंने देखा कि स्वयंसेवक सड़क पर सोये हुए थे और पुलिस वहाँ कुछ दूर पर खड़ी थी। उन्होंने स्वयं सेवकों को संबोधित करते हुए कहा कि वह पुलिस की मारपीट या दुर्व्यवहार का दृढ़तापूर्वक सामना करें और अहिंसा ना त्यागे। राजेन्द्र बाबू देश की जनता से आत्मरक्षा के लिए स्थानीय रक्षादल तथा खाद्य सामग्री एवं वस्तु में स्वतः संपूर्णता हासिल करने हेतु उपयुक्त कारवाइयाँ करने को कहते थे। 11 मई





1942 को राजेंद्र बाबू छपरा आए और अगले दिन एक जनसभा में लोगों से रचनात्मक कार्य करते रहने एवं अन्न संचय की व्यवस्था करने को कहा।

देशरत्न राजेंद्र प्रसाद ने देशसेवा को ही अपना एकमात्र व्रत मान लिया। उन्होंने बिहार में राष्ट्रीय कांग्रेस के संगठन में खून पसीना एक कर दिया। युवा किसी राष्ट्र के कर्णधार होते हैं। अतः युवकों को प्रशिक्षित करने के लिए उन्होंने बिहार विद्यापीठ की स्थापना की। मजहूरल हक ने जब पटना में 'सदाकत आश्रम' खोला तो राजेंद्र बाबू ने उन्हें पूरा सहयोग दिया। कांग्रेस का महारथ गतिशील रहे, इसके लिए उन्होंने खादी और चरखे का व्यापक प्रचार किया। प्रांत के नगर-नगर, डगर-डगर उसके श्री चरणों से संचरित हुए। मादक द्रव्य निषेध, अछूतोद्धार, हिंदू-मुस्लिम एकता, राष्ट्रभाषा प्रचार आदि अनेक आंदोलनों को वे त्वरा प्रदान करते रहे।

अनगिनत विशेषताओं के कारण ही वे कांग्रेस के महामंत्री बनाए गए। इस समय भी उन्होंने अपनी अद्भुत क्षमता का प्रमाण दिया। कुछ दिनों बाद वे पटना नगर पालिका के अध्यक्ष हुए। सन 1934 ई० में बिहार में भूकंप हुआ। राजेंद्र बाबू की अध्यक्षता में 'सेंट्रल रिलीफ कमेटी' बनाई गयी। जिस लगन से उन्होंने भूकंप पीड़ितों की सेवा की वह चिरस्मरणीय कहानी बन गई। ऐसे त्यागी कार्य कुशल नेता को इसी वर्ष कांग्रेस ने अपने मुंबई के अधिवेशन में सभापति का मर्यादा पूर्ण पद प्रदान किया। अब राजेंद्र प्रसाद देश रत्न हो चुके थे, राष्ट्र के कंठहार बन चुके थे।

सन 1942 ईस्वी की अगस्त क्रांति देश के कोने-कोने में इस क्रांति की मशाल जल उठी। अंग्रेजों ने राजेंद्र बाबू को भी 3 वर्षों के लिए कारागार में डाल दिया। जब देशरत्न कारागार से बाहर आए तो उनमें और

नया उत्साह था, नई उमंग थी। जैसे सोना आग में तपने पर ही कुंदन बनता है, मेहंदी पीसे जाने पर ही लाली लाती है उसी तरह देशरत्न राजेंद्र प्रसाद कारागृह यातना नल में तपकर भी दीप्त हो उठे।

सन 1945 ई० में उन्होंने शिमला कॉन्फ्रेंस में भाग लिया। उसमें उन्होंने अपनी अकथनीय कार्यकुशलता दिखलायी। अब स्वतंत्रता का विहान आने ही वाला था। राष्ट्र संचालन के निमित्त विधि निर्मात्री सभा का आयोजन हुआ। राजेंद्र बाबू उसके अध्यक्ष चुने गए। 1946 ई० में केंद्रीय मंत्रिमंडल में उन्होंने खाद्य मंत्री का पदभार संभाला।

भारत में गणतंत्र का सूरज चमका तो सारे राष्ट्र ने उनकी त्याग तपस्या से वशीभूत होकर सन 1950 ईस्वी में उन्हें पूर्ण स्वतंत्र राष्ट्र के सर्वोच्च राष्ट्रपति सिंहासन पर समारूढ़ किया। शताब्दियों से परतंत्रता की चक्की में पिसता हुआ राष्ट्र उनकी छत्रछाया में फूले ना समाया। तब से 14 मई 1962 ई० तक वे भारत के गौरव- गढ़ के समान अधिपति बने रहे। इस अवधि में राजेंद्र बाबू ने अनेक कार्य किये। उनका सहयोग पाकर प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू सारे संसार में अपनी 'पंचशील' के दिव्यमंत्रों का उपदेश करते रहे।

सन 1962 ई० में उनकी आयु 78 वर्ष की हो चुकी थी। उनका स्वास्थ्य बहुत ही गिरने लगा और वे सर्वपल्ली राधा कृष्णन को अपना राष्ट्रपति पद देकर दिल्ली के भव्य प्रसाद को छोड़कर सदाकत आश्रम की अपनी पुरानी कुटिया में आप विराजे। जहां से उन्होंने राजनीतिक जीवन और तूफानी कार्यक्रम का आरंभ किया था, वहीं आकर उन्होंने अपना शेष शांत जीवन बिताने का विचार किया।





20 अक्टूबर 1962 ई० को जब विस्तारवादी चीन ने भारत की पवित्र धरती को पैरों तले रौंदना चाहा तो देशरत्न क्रुद्ध सिंह की तरह दहाड़ उठे। '80 वर्षों की हड्डी में जागा जोश जवानी का'। पटना के गांधी मैदान तथा पटना विश्वविद्यालय के हिलर सीनेर हॉल में उनके ओजस्वी भाषणों को सुनकर शांतचित्त व्यक्तियों का भी खून खौलने लगा। किंतु भगवान ने इस अभिनव कुंवर सिंह को जयनाद करने के लिए हमारे बीच अधिक दिनों तक नहीं छोड़ा और 28 फरवरी 1963 ई० को उन्होंने पटना के 'सदाकत आश्रम' में अंतिम सांस ली।

उनकी शवयात्रा में लाखों की भीड़ उमड़ चली। जिस पथ पर लोगों ने खड़े होकर कभी चंद्रगुप्त, अशोक, बुद्ध और महावीर की विदाई सही होगी, उसी पथ पर दौड़ दौड़ कर अश्रुओं का दान देकर लोगों ने अपने राष्ट्र देवता देशरत्न को अंतिम विदाई दी।

राजेंद्र बाबू सादा जीवन उच्च विचार में विश्वास रखते थे। राष्ट्रपति भवन के ऐश्वर्यमय वातावरण में रहकर भी उनके सादा जीवन उच्च विचार पर कोई आंच नहीं आई। राजेंद्र बाबू भारतीय संस्कृति के जीवित प्रतिमूर्ति थे। राष्ट्र भाषा हिंदी के लिए उन्होंने जो किया है, उसे हम भूल नहीं सकते। राष्ट्रभाषा के आह्वान पर अपने स्वास्थ्य की परवाह न कर वे दौड़ पड़ते थे। अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन के नागपुर अधिवेशन में सभापति पद से जो उन्हें भाषण दिया था, उसमें हिंदी के विशेषताओं को व्यक्त करने वाली अमिट कहानी है।

उन्होंने मनसा, वाचा, कर्मणा हिंदी की सेवा की। उनकी 'खंडित भारत', 'आत्मकथा', 'बापू के कदमों में', 'गांधी जी की देन', 'साहित्य और संस्कृति' जैसी रचनाएं हिंदी का शृंगार करती हैं। आज बिहार की भूमि उदास है, पता नहीं वह राजेंद्र जैसे प्रतिभा संपन्न सपूत फिर कब दे पाएगी।

देश के प्रथम राष्ट्रपति देश रत्न डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद की याद में पटना में राजेंद्र इंस्टीट्यूट आफ मैनेजमेंट खुलेगा। बिहार विद्यापीठ राजेंद्र स्मृति संग्रहालय समिति द्वारा केंद्र सरकार से मिले अनुदान से इस संस्था की स्थापना होगी। संग्रहालय स्थित सभागार का भी विस्तार होगा देश रत्न डॉ राजेंद्र प्रसाद की 47वां पुण्यतिथि पर संग्रहालय में आयोजित समारोह पी० एस० सहाय जस्टिस साई ने यह घोषणा की थी।

अतः डॉ राजेंद्र प्रसाद के विभिन्न कार्यों से हमारे राज्य बिहार को प्रेरणा लेनी चाहिए। इस भारत को आधुनिक बनाने में डॉक्टर प्रसाद का योगदान शरीर में आत्मा के समान है। किसी कवि ने ठीक ही कहा है: -

*"Hights by great man reached and  
kept were not attained by sudden flight.*

*But they while their companions slept*

*Were toiling upward in the right."*







कार्यक्रम को संबोधित करते उपमहालेखाकार महोदय



हिंदी पखवाड़ा कार्यक्रम की झलकियां



# गरीबी



**श्री मनमीत कुमार**  
उपमहालेखाकार (प्रशासन)



सोहन अपने पिता के साथ बाजार जा रहा था। उसके चेहरे पर मुस्कान एकदम साफ झलक रही थी। खुश भी क्यों न हो आज जो उसके लिए एक गाड़ी खरीदा जाने वाला था। वह अपने पिता से रोज कहता था कि मुझे एक रिमोट वाला गाड़ी खरीद दीजिये। आज वो दिन आ गया था। तन पर फटे कपड़े, नंगेपाव वह इतराता हुआ चल रहा था, और चले भी क्यों ना उसके लिए पूरी दुनिया पाने जैसा था। सोहन के पिता कबाड़ बीनने का काम करते थे। वह दिनभर शहर में चारो तरफ बोरी लिए घूमते-फिरते रहते थे, जो कुछ मिलता शाम को बेच देते थे। कभी खुद का पेट नहीं भरता। लेकिन, बच्चों का पेट भरने में सफल हो पाते थे।

वह रास्ते में पिता से बार-बार पूछ रहा था कि कब बाजार आएगा? पिता उसकी ललक देखकर कहते कि बस अब कुछ दूर और चलना है। जो लड़का थोड़े चलने के बाद थक जाता था आज उसका थकान भी कुछ नहीं कर पा रहा था। वह अपने पिता से आगे दौड़ते हुए चल रहा था। इतना खुश शायद वह पहले कभी नहीं हुआ था।

कुछ समय चलने के बाद खिलौनों का बाजार आ ही गया। चारों तरफ खूब बड़े-बड़े खिलौने की दुकानें थीं। सोहन इतने सारे खिलौनों को देखकर आश्चर्यचकित हो गया, पहली बार जो देख रहा था। वह खुशी में तल्लीन होकर कभी इधर भागता तो कभी उधर भागता। ऐसा लग रहा था कि शायद उसे इसी दुनिया की तलाश थी। वह मंत्रमुग्ध हों गया था। उसे क्या







खरीदना है वह भूल गया था। कभी कहता कि ये लेना है तो कभी कहता कि वो लेना है। हजारों तरह के खिलौने उसके नज़र के सामने थीं। पिता भी हैरान हो गए।

कूछ दूर दौड़कर एक दुकान पर गया और कहा मुझे यह लेना है। उसने एक रेलगाड़ी के तरफ इशारा करते हुए बोला। उसकी कीमत 2000 रुपये थी। लेकिन पिता के पास सिर्फ 100 रुपये

थे। बेटा तुम ये वाला गाड़ी ले लो, पिता बोले। लेकिन सोहन वही लेने की जिद करने लगा। पिता के लाख मनाने पर भी नहीं मान रहा था। वह रोने लगा और रो-रो कर कह रहा था कि मुझे यही गाड़ी चाहिए.... मुझे यही गाड़ी चाहिए। पिता धर्मसंकट में फंसे गए। सोच रहे थे कि मुझे ही गाड़ी खरीद कर ले जाना चाहिए था। इसे नहीं लाना चाहिए था। पिता बोले बेटा पैसा कम है, लेकिन एक पाँच साल के बच्चे को इससे क्या करना? उसे तो

बस वह रेलगाड़ी चाहिए थी। पिता सोहन को ज़ोर से डांटते हुए बोले वह खिलौना बहुत महंगा है। हम वो नहीं ले सकते। एक 10 रुपये की गाड़ी खरीद कर बोले यह सही है, ले लो। सोहन लिया नहीं। वह सिसक-सिसक कर रो रहा था। पिता मजबूर थे। कर भी क्या सकते थे? गरीबी क्या होती है कैसे बताएं? आँख में आँसू लिए, बेटे का हाथ पकड़, खरीदा हुआ खिलौना ले कर चल दिये।





# भ्रूण- हत्या

## एक अभिशाप

तेरे गर्भ में पल रही माँ, मुझ पर प्रेम लुटाओ तुम,  
मुझ पर करो विश्वास माँ, मुझे धरा पर लाओ तुम।

तुम जैसा चाहोगी वैसा, बनकर तुझे दिखाऊँगी,  
जिस क्षेत्र की बात करो, उस क्षेत्र में अव्वल आऊँगी।

धरा पर आने से पहले, तुम कैसे ये जान लिया?  
मैं मरने के काबिल हूँ, तुम कैसे ये मान लिया?

एक बार तुम मौका दे दो, मेरी जान बचाओ तुम,  
मुझ पर करो विश्वास माँ, मुझे धरा पर लाओ तुम।

भैया के जैसे मैं भी, क्रिकेट में छक्का जड़ूँगी,  
ओलंपिक में भेजकर देखना, मैं भी कुश्ती लड़ूँगी।  
आईएस, आईपीएस के साथ-साथ, संगीत की तान भी छेड़ूँगी,  
अगर तुम चाहोगी तो, अंतरिक्ष को भी भेदूँगी।

हर क्षेत्र की महारथी हूँ, प्राण- वायु पिलाओ तुम,  
मुझ पर करो विश्वास माँ, मुझे धरा पर लाओ तुम।

तेरे कोख में पल रही हूँ, मेरी भी अभिलाषा है,  
पापा के गोद में खेलने की, मैंने बाँधी आशा है।  
चिंता न करो तुम माँ, पढ़ लिखकर आगे निकलूँगी,  
इंदिरा, लता, कल्पना जैसे, मैं भी दुनिया बदलूँगी।

बहुत सारे उदाहरण देकर, पापा को समझाओ तुम,  
मुझ पर करो विश्वास माँ, मुझे धरा पर लाओ तुम।



श्री विश्वपति सिंह  
वरिष्ठ लेखा अधिकारी







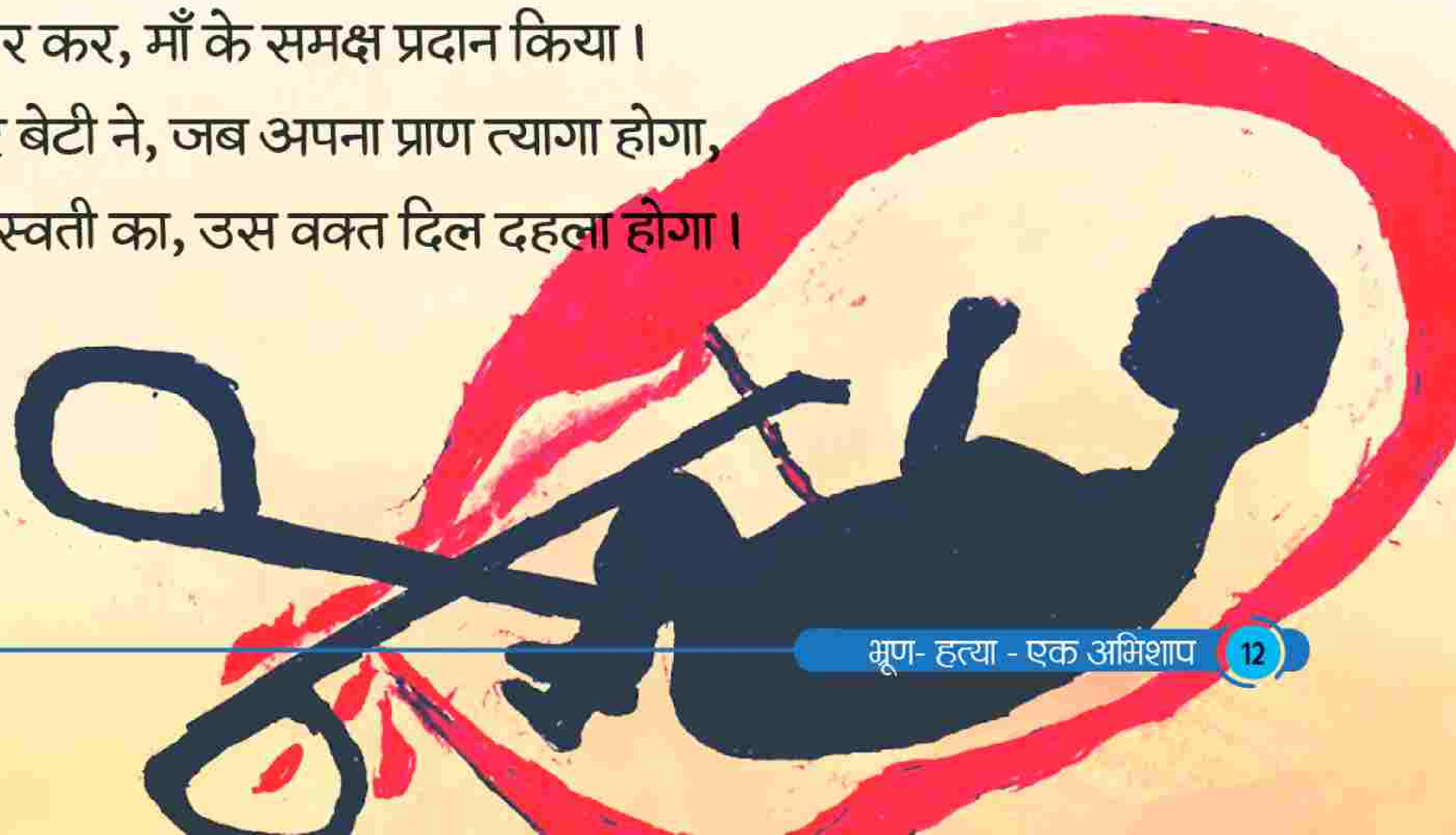
माँ के दिल में न जानें क्यों, ममता का न प्रवाह हुआ ?  
भ्रूण हत्या करने के लिए, पूरा घर तैयार हुआ ।  
अस्पताल में इसके लिए , चल रही तैयारी है,  
भ्रूण- हत्या कराने की, यह कैसी लाचारी है ।

कोख से बेटी फिर बोली, माँ मुझे बचाओं तुम,  
मुझ पर करो विश्वास माँ, मुझे धरा पर लाओ तुम ।

डॉक्टर को तुम मना करो माँ, कोख में न करे प्रहार,  
हांथ- पांव, धड़ चिथेड़ कर, क्यों करता मेरा संहार ?  
मोम से कोमल बेटी हूँ, तुम पत्थर दिल न बना करो,  
ममतामयी माँ तो तुम, अब भी डॉक्टर को मना करो ।

तड़प रही मैं तेरे कोख में, डॉक्टर को समझाओ तुम,  
मुझ पर करो विश्वास माँ, मुझे धरा पर लाओ तुम ।

इसी बीच डॉक्टर ने, बेटी का काम तमाम किया,  
भ्रूण को बाहर कर, माँ के समक्ष प्रदान किया ।  
तड़प-तड़प कर बेटी ने, जब अपना प्राण त्यागा होगा,  
दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती का, उस वक्त दिल दहला होगा ।







अब आगे मैं कहता हूँ, मेरी बात मान जाओ तुम,  
बेटी पर विश्वास करो, उसे धरा पर लाओ तुम।

कहाँ से आएगी कन्या, नवरात्र में पूजे जाने को ?  
कहाँ से आएगी बहना, राखी बाँध इतराने को ?  
कहाँ से आएगी बेटी, कन्यादान कराने को ?  
कहाँ से आएगी पत्नी, घर का वंश बढ़ाने को ?

भ्रूण हत्या रोको भाई, बेटियों को बचाओ तुम,  
बेटी पर विश्वास करो, उसे धरा पर लाओ तुम।

बेटी हीं विद्या, लक्ष्मी है, ऊषा, संध्या, अन्नपूर्णा है,  
बेटी हीं निंदिया, सपना है, स्नेह, ममता करुणा है।  
बेटी हीं श्रद्धा, शांति है, पूजा, आरती, वंदना है,  
बेटी हीं गायत्री, गीता है, प्रेम, क्षमा, भावना है।

बेटी बिना अधूरा सब, ऐसा अलख जगाओ तुम,  
बेटी पर विश्वास करो, उसे धरा पर लाओ तुम।





# झारखंड भ्रमण



**श्री सन्जी कुमार**  
कनिष्ठ अनुवादक

मई का महीना था। मैं और मेरी पत्नी घूमने का प्लान कर रहे थे। तभी मेरी मां बोलती है कि “ कहां जाओगे घूमने सबसे बढ़िया झारखंड जाओ, और मेरी पोती का मुंडन भी बाबा धाम में करा देना। मैंने मां की बातें सुनकर मन बना लिया कि अब तो झारखंड ही जाएंगे और बेटी का मुंडन भी करवाएंगे। मेरी पत्नी भी इस निर्णय से खुश थी।

अगले ही दिन हमलोग प्लानिंग शुरू कर दिये। पहले यह तय करना था कि हम लोग किस माध्यम से जाएंगे साथ ही कितने लोग इसमें शामिल होते हैं। मेरी पत्नी ने अपने

मायके फोन किया और वहां से जाने वालों के बारे में पूछा और इस तरह से सूची तैयार हो गई। मेरी पत्नी, मां, बेटी और मेरी पत्नी के मायके से जाने के लिए मेरी सास, दो सालियाँ तथा साले साहब ने झारखंड भ्रमण करने हेतु अपनी मंजूरी जताई। कुल मिलाकर हम 8 लोग हो गए। सभी ने रोड के माध्यम से झारखंड जाने का प्लान बनाया। इस तरह से झारखंड जाने का प्लान बना।

शुक्रवार का दिन था, हम लोग घर से प्रातः 10:00 बजे निकल गए अर्थात् पटना से झारखंड घूमने का सफर का आगाज हो गया था।





सभी ने तय किया कि पहले हम लोग बाबा धाम यानी कि देवघर जाएंगे, जहां पर बेटी का मुंडन भी होना था। मैं ड्राइवर के बगल वाली सीट पर बैठ गया तथा बाकी चार लोग पीछे बैठ गए तथा बाकी बचे लोग सबसे पीछे बैठ गए। गाड़ी में 10 लोग आसानी से बैठ सकते थे। पटना NH-22 से गाड़ी निकल पड़ी। हम लोग फतुहा के रास्ते नालंदा जिला में प्रवेश कर चुके थे। गाड़ी चलते चलते लगभग 4-5 घंटे हो चुके थे। हम लोग शेखपुरा-बिहारशरीफ सड़क मार्ग पर मार्केट एरिया के पास रुके। करीब 3:00 बज रहे थे सभी गाड़ी से उतरकर होटल में प्रवेश किए। मई का महीना था। गाड़ी से उतरते ही बहुत तेज धूप लग रही थी। हम लोगों ने वहां खाना खाया। गाड़ी में बैठने से पहले हम लोगों ने तरबूज, खरबूज, अंगूर, केले, खीरा, ककड़ी आदि खरीदें, ताकि इसका लुत्फ गाड़ी में बैठे-बैठे उठा सके। मेरी बेटी का सबसे पसंदीदा अंगूर है, वह बहुत खुश हो गई।

करीब शाम 5:00 बजे हम लोग झारखंड में प्रवेश कर गए। चारों तरफ पहाड़ देखकर मन प्रसन्न हो उठा। इसी बीच काले बादल घिर आए और हल्की-हल्की बारिश शुरू हो गई। ए.सी. बंद करके खिड़कियों के शीशे नीचे कर दिया गया। पेड़-पहाड़ों के बीच से हम लोग स्नै-स्नै आगे

बढ़ते जा रहे थे। गालों को छूती वह ठंडी हवा व मिट्टी की सोंधी खुशबू सफर को अत्यधिक मनोरम बना दिया था। शाम को 7:00 बजे हम लोग देवघर पहुंच गए। वहां पर सबसे पहला काम था रात बिताने के लिए होटल लेना। दो-तीन होटलों में कमरा खाली नहीं मिला। बाद में मालूम पड़ा कि कल यानी शनिवार को मुंडन का अच्छा लगन निकला है। इस कारण से वहां होटल में कमरा मिलना मुश्किल हो रहा था। करीब आधे-पौने घंटे मशक्कत करने के पश्चात हमें एक होटल में कमरा खाली मिला। मैं डबल बेड के तीन कमरे बुक कर दिया तब जाकर सांस में सांस आई। सभी लोग फ्रेश हो कर हल्का नाश्ता किए। मैं और ड्राइवर होटल के बाहर गए तथा देवघर बाबा धाम में अंदर जाने के बारे में लोगों से पूछताछ करने लगे। बात करने से मालूम पड़ा के मंदिर में जाने के लिए सुबह 4:00 बजे से ही लाइन लगाना पड़ता है तब जाकर 7-8 बजे तक दर्शन हो पाता है। मैं वापस होटल में आया और यह बात सबको बतायी। हमें सुबह 11:00 बजे होटल भी खाली करना था। तभी मेरी पत्नी ने कहा कि अभी मंदिर घूम आते हैं। कुछ सामान भी खरीद लेते हैं, सुबह 8-9 बजे तक सारा कार्य हो ही जाएगा। सब इस बात पर राजी हो गए। हम लोग मंदिर के तरफ रात को लगभग 9:00 बजे चल दिए। कुछ खरीदारी करने के बाद मुंडन हेतु पंडित





जी तथा नाई से बात भी कर लिए। फिर हम लोग रात को 11:00 बजे के आसपास होटल आ गए। खाना खाने के बाद हम लोग सोने चले गए। सुबह 3:00 बजे हैं लोग उठने लगे। मुझे काफी नींद आ रही थी। सबके शोरगुल से मैं भी उठ गया। सुबह 4:00 बजे हम लोग मंदिर के द्वार पर लाइन में लग गए। करीब 7:00 बजे बाबा धाम के दर्शन प्राप्त हुए। काफी भीड़ था, परंतु दर्शन और जल चढ़ाने के बाद मानो सारी थकान मिट गई हो। इसके बाद मुंडन कार्यक्रम शुरू हुआ। रात को जिस पंडित और नाई से बात किए थे वह कहीं नहीं दिखाई दे रहे थे साथ ही उनका फोन नंबर भी नहीं लग रहा था। मैंने ज्यादा प्रयास भी नहीं किया और तभी एक नाई मिल गया। मुंडन के नाम पर 5000 का मांग करने लगा जैसे-तैसे वह 750/- पर आया। इस प्रकार मुंडन कार्यक्रम शुरू हुआ। मुंडन शुरू होते ही मेरी बेटी ने जो रोना शुरू किया है, वह रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी। मुंडन खत्म हुआ उसके बाद ही उसका रोना बंद हुआ। लगभग 9:00 बजे हम लोग होटल वापस आ गए अपना सामान लिए और होटल से चेकआउट किए। ऐसी अवधारणा है कि जो बाबा धाम जाते हैं, बासुकीनाथ के भी दर्शन करते हैं। इससे मनोकामनाएं पूरी होती हैं। अवधारणा है। बाबा धाम से बासुकीनाथ के लिए हम लोग कूच कर गए। बाबा धाम जितना भीड़ यहां नहीं था इस कारण से यहाँ पूजा करने में कोई परेशानी नहीं हुई साथ ही दर्शन भी अच्छे से हुआ।

लगभग 2:00 बज चुके थे, सभी सुबह से कुछ खाएं नहीं थे। मंदिर परिसर में ही कुछ होटल थे। वहां पर चावल, दाल, सब्जी, भाजा, पापड़, पूड़ी आदि जैसे व्यंजन मौजूद थे। भोजन करने के बाद कोई रसगुल्ला खा रहे हैं तो कोई जूस पी रहे हैं। वही मेरी बेटी को एक खिलौना पसंद आता है, उसकी मां उसके लिए खरीद देती है। बासुकीनाथ में करीब 4:00 बज गए थे। वहां पर हमने प्रसाद की भी खरीदारी की। बाबा धाम एवं बासुकीनाथ के प्रसाद में चूड़ा एवं पेड़ा प्रसिद्ध होता है। मुझे लग रहा था कि अब हम लोग वापस घर की ओर लौट जाएंगे। परंतु ऐसा किसी ने सोचा नहीं था कि यह सफर तो अभी शुरू ही हुआ है। तभी मेरी सास कहती है “घर से तो निकल ही चुके हैं, चलो रजरप्पा चलते हैं यहां मैं 2010 के आसपास आई थी तुम लोग भी घूम लो।” सभी को यह बात पसंद आई और हम लोग झारखंड राज्य के रामगढ़ जिले में अवस्थित मां छिन्नमस्तिका मंदिर की ओर चल दिए।

बासुकीनाथ से करीब शाम को 4:00 बजे हम रामगढ़ की तरफ बढ़ने लगे। रास्ते में अनेकों पहाड़ मिले। ज्यादातर लोग भेड़-बकरी का पालन करते नजर आए। बंजर भूमि, खप्पड़ के बने घर आदि दिखाई दिए। शाम को 7:00 बजे हम लोग एक ढाबे पर रुके वहां हल्का-फुल्का नाश्ता किए। वहीं बगल में कुल्हड़ चाय बिक रहा था। किसी ने चाय पिया





तो किसी ने लस्सी। लस्सी तो पता नहीं, लेकिन कुल्हड़ वाली चाय बहुत ही स्वादिष्ट था। आसमान साफ था। चांद और तारे स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे। मेरी बेटी कहती है “पापा चंदा मामा पीछा कर रहे हैं साथ-साथ चल रहे हैं”। इस बात को सुनकर सब हंसने लगते हैं। रात 10:00 बजे हम लोग रामगढ़ पहुंच गए हैं। वहां के आसपास के लोगों से मालूम पड़ा कि वहां से छिन्नमस्तिका मंदिर लगभग 15 किलोमीटर है। लोगों ने बताया कि मंदिर के आसपास रहने के लिए कोई होटल नहीं है। जो भी है यही मिलने वाला है। फिर हम लोगों ने निर्णय लिया कि इसी स्थान पर होटल में रहेंगे और सुबह मंदिर के लिए रवाना होंगे। रामगढ़ का वह मार्केट एरिया काफी छोटा था। वहां पर रहने लायक होटल नहीं मिल पा रहा था। एक-दो लॉज मिला, लेकिन साफ सुथरा नहीं होने के कारण पसंद नहीं आया। रात 11:00 बज गए, बाकी लोगों को खाना खाने के लिए ढाबे पर उतार देने के बाद मैं और ड्राइवर होटल ढूंढने निकल पड़े। मुख्य सड़क से कुछ 2 किलोमीटर एक मैरिज हॉल मिला अंदर जाकर पूछने से मालूम हुआ कि आज कोई भी विवाह नहीं हुआ था इस कारण से वहां कमरे खाली थे। मैंने

कमरे का जायजा लिया कमरा काफी साफ-सुथरा एवं मॉडर्न लुक के साथ बना हुआ था। ऐसे छोटे से ग्रामीण क्षेत्र में इस तरह का कमरा मिलना काफी चौंकाने वाली बात थी। मैंने देरी न करते हुए तीन कमरा बुक कर लिया। फिर ढाबे पर पहुंचकर खाना खाने के बाद हम लोग सीधा उस मैरिज हॉल की ओर चल दिए। वहां रात बिताने के बाद सुबह 8:00 बजे हम लोग छिन्नमस्तिका मंदिर की ओर चल दिए।

करीब 9:00 बजे हम लोगों ने गाड़ी पार्क किया। वहां पर दो नदियों का संगम है जो मंदिर के पीछे ही था। वहां पर स्नान करने के बाद मंदिर में जाने की प्रथा है। ऐसा माना जाता है कि यहां मांगी हुई मन्नत पूरी होती है।

पाठकों के लिए इस भ्रमण का आगे का अनुभव इस पत्रिका के अगले अंक में प्रकाशित की जाएगी। झारखंड में कई प्रकार के दर्शनीय स्थल हैं। यहां भ्रमण करना मानस पटल पर एक अमिट छाप छोड़ती है। झारखंड पधारे और दृश्यों का सुखद अनुभव करे।







हिंदी पखवाड़ा - 2022 में उपस्थित उच्च अधिकारीगण



हिंदी पखवाड़ा- 2022 के निर्णायक मंडल को पुरस्कृत करते हुए प्रधान महालेखाकार



# चिड़ियों को दाना डालने के बहाने



**श्री श्रीराम पाण्डेय**

सहायक लेखा अधिकारी

जब भी सुबह उठने में देर हो जाती है, मैं टहलने एवं व्यायाम आदि का काम छत पर ही कर लेता हूँ, ताकि जल्दी निबटाकर सुबह का अन्य कार्य भी जल्दी हो जाये और ऑफिस समय पर पहुँच सकूँ। और इस जल्दी के चक्कर में अब यह नियमित रूप से छत पर ही होने लगा है। इस क्रिया-कलाप में घटित एक प्रतिक्रिया से मैं पहले असहज हो जाता था। जाते ही छत पर विचर रहे कबूतर पंख फड़फड़ाकर उठ जाते और तब मुझे लगता जैसे कोई पाप कर आया हूँ। छोटी ही सही, इस घटना से कभी कबूतरों पर तो कभी अपने ऊपर खीज होने लगती है। हालांकि निरीह अबोल पंछियों पर चिढ़ना कहीं से सही नहीं था। ये बेचारे क्या जानें कि किस रूप में कौन आया है ?

उस पाप अथवा खीज से मुक्ति के लिये मैंने एक युक्ति निकाली। रात की बची रोटी, दो-

तीन बिस्कुट के टुकड़े एवं थोड़े चावल लेकर जाता एवं छत पर उन्हें बिखेर देता और कबूतर जो पहले डरे-सहमे से रहते थे, धीरे-धीरे उन दानों के आस-पास मंडराने लगते। फिर तो खुशी-खुशी भावविभोर होकर मैं वहाँ से थोड़ा दूर हटकर इस दृश्य का आनंद लेने लगा और अब तो छत और उन अबोध परिंदों को छोड़ कहीं और जाने के लिये मैं सोचता तक नहीं हूँ। सुबह उठते ही लगता है जैसे उनका कलरव मुझे अपनी ओर खींच रहा है। मैं गाने लगता हूँ- रामजी की चिरई, रामजी का खेत, खालअ चिरई भर-भर पेट। कभी-कभी भावातिरेक में उसी गीत को घर में भी दुहराने लगता हूँ और न जाने क्यों पत्नीजी चिढ़-सी जाती है।

अब कबूतर ही नहीं, काकवृंद, पहाड़ी मैना और न जाने कौन-कौन से पंछी भी सुबह के मेरे उस सहभोज में शामिल होने लगे हैं। इस





कारण मुझे अन्न के दानों की मात्रा भी बढ़ानी पड़ जाती है और इसी कारण श्रीमतीजी से खिच-खिच भी होने लगी है- किसी दिन अपने लिये भले ही खाना न बनाऊँ, पर आपके देवी-देवताओं (पत्नीजी की डिक्शनरी में पंछियों का नया नाम) के लिये तो रोटी बनानी ही पड़ेगी न! पता नहीं, चिड़ियों को दाना डालने जाते हैं कि.....

महिलाओं में किसी बात को बीच में ही छोड़कर न जाने कितना कुछ कह देने की अद्भुत प्रतिभा होती है। और श्रीमतीजी तो इसमें अव्वलतम थीं। सबकुछ समझकर भी मैं ज्यादा विरोध नहीं कर पाता कुछ सुनाकर ही सही, रोटी तो बना दे रही हैं।

खैर, सबकुछ भूल मैं चिड़ियों की गतिविधि, उनकी भाव-भंगिमा में तपस्वी की भांति ध्यानस्त हो जाता हूँ। एक काला कबूतर, जिसे अत्यंत ध्यान से देखने पर ही पता चलता है कि वह कौवा नहीं है, बाकी सभी कबूतरों से अलग है। वैसे तो मेरे जाते ही अगणित पंछी छत पर मंडराने लगते हैं, सबसे पहले वही नीचे उतरता है। परंतु दाना चुगना तब शुरू करता है, जब सभी पंछी उतर जाते हैं। काश हम मानवों में भी ऐसा ही संतोष देखने को मिलता।

सबसे ज्यादा उत्पात कौवे मचाते हैं। कबूतरों को चोंच मार-मारकर उन्हें खाने से रोकने की कोशिश करते रहते हैं। कभी-कभी मन

करता है कि उन्हें जाकर उड़ा दूँ, परंतु सुना है कि कौवे हमारे पूर्वज हैं, इस कारण चूप रह जाना ही अधिक ठीक लगता है। शायद यही हमारी ओर से पितृतर्पण हो जाये।

किसी-किसी दिन, खासकर शनिवार-रविवार के दिन, मुझे सुबह उठने में देर हो जाती तो पंछियों की चहचहाहट बहुत बढ़ जाती है। मैडमजी की भुनभुनाहट सुन मेरी नींद टूटती-छुट्टी के दिन भी चैन से सो नहीं सकती। हाय रे मेरा नसीब मुझसे तो अच्छी किस्मत मेरे सौतनों की है। उनकी कर्कश आवाज मेरे लिये अलार्म का काम करती और मैं दनदनाता हुआ छत पर भागता।

एक छोटी-सी काली चितकबरी चिड़िया, जिसके माथे पर मयूर (कलगी) बना हुआ है, अक्सर छत के पानी की टंकी पर बैठकर सुरीली आवाज में न जाने क्या गाती रहती है? मुझे लगता है जैसे गाते-गाते ही वह मुझे उलाहना दे रही हो कि मुझे भी क्यों नहीं दाना डालते हो कभी-कभी मैं उस टंकी पर भी कुछ दाना बिखेर देता हूँ। पर वह या तो उड़ जाती या थोड़ा दूर हटकर उसी आवाज में गाती रहती है।

कितना भी लिख डालें, उन निरीह, नादान, चंचल मेरे अपने परिंदों की बात कभी खत्म न होगी। बस इतना ही कहूँगा कि उनकी हरेक गतिविधि से इतना अधिक परिचित हो गया हूँ, जैसे लगता है, यदि अपने बचपन से इन्हें दाना चुगाता होता तो पक्षी विज्ञानी डॉक्टर सलीम अली

से कम न होता। यदि इस रूप में जन्म न लेकर पंछी में ही मेरा जन्म हुआ होता तो इस आजाद परिंदों की तरह नील गगन में विचरण करता रहता न किसी बात की चिंता न कोई लोभ स्वार्थ न किसी से वैर-वैमनस्य। **बस्ती-बस्ती, पर्वत-पर्वत गाता जाये बंजारा, लेके दिल का एकतारा काश!** ऐसा हो पाता।

बीमार पड़ जाने के कारण कुछ दिनों तक मेरा छत पर जाना न हो सका। उस अवस्था में अपने अस्वस्थ होने से ज्यादा मुझे इस बात की चिंता होती कि मेरे बिना पंख पखेरूओं का क्या हाल हो रहा होगा, परंतु मेरी बीमारी का बहाना बनाकर, शायद, पत्नी मुझे छत पर न जाने देती। उस अवधि में जब एक भी दिन उनकी चहचहाहट सुनाई न पड़ी, पहले तो अफसोस हुआ, पर बाद में उनपर क्रोध आने लगा एकाध घंटे विलंब हो जाने पर जो मेरे लिये तड़पने लगते थे, कुछ दिनों में ही भूल गये। मेरा बीमार मन और बीमार हो जाता।

एक दिन अचानक नींद टूटी तो देखता हूँ कि श्रीमतीजी बिछावन पर नहीं है। शायद नहाने गई होगी। यह सोचकर कि उन्हें पता न चले, जल्दी में थोड़े दाने लेकर छत पर भागा। अरे यह क्या! देखता हूँ कि श्रीमतीजी छत पर दाना बिखेर रही है और नादान परिंदों को चुगते हुए देखकर मेरी ही तरह बोले जा रही है- रामजी की चिरई, रामजी का खेत, खाल चिरई भर-भर पेट।





# अंतर्द्वंद



श्री बंशीधर मिश्र  
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

“

अंतर्द्वंद” दो शब्दों को मिलाकर बना है-अंतर और द्वंद। मतलब स्पष्ट है - अंतर अर्थात हृदय और द्वंद जो विचारों का झंझावात जो मन में आ रहा होता है, वही मिलकर कहलाता है अंतर्द्वंद। अतः किसी विषय को लेकर हमारे मन में बहुत से विचार आते हैं कि हम जो निर्णय लेने जा रहे हैं वह सही है या गलत है। इसके दूरगामी परिणाम अनुकूल निकलेंगे या प्रतिकूल, आदि-आदि।

अंतर्द्वंद को ऊहापोह; कशमकश; मानसिक संघर्ष; अंदर ही अंदर चलनेवाला द्वंद;  
दुविधा; परस्पर विरोधी भावों का संघर्ष भी कहा जाता है।

इसको परस्पर विरोधी इच्छाओं, आदर्श तथा लक्ष्य उपस्थित होने पर उससे संबन्धित सही निर्णय या सही चुनाव कर पाने में अपने-आप को असमर्थ पाना भी माना जा सकता है। अंतर्द्वंद को समझने हेतु आधार शब्द द्वंद को ही माना जाता है। द्वंद ही मानव जाति की आशाओं के प्रति नकारात्मकता/निराशा पैदा करने का मूल स्रोत है। द्वंद को दो प्रकार से देखा जा सकता है- (i) सकारात्मक एवं (ii) नकारात्मकता। दो

परस्पर आपस में विरोधी लक्ष्य लेना ( जैसे- मीठा/मिठाई आदि खाने की इच्छा है, पर मधुमेह की स्थिति में सुगर लेबल बढ़ने का डर है। ऐसी स्थिति में मीठी चीजें कम खाऊँ या सुगर लेबल बढ़ने की परवाह न करते हुए इच्छानुसार भरपूर मिठाई/मीठी चीजें खाऊँ। द्वंद की स्थिति में ही लक्ष्य की प्राप्ति में विलंब या बाधा उत्पन्न होती है। मन में किंकर्तव्यविमुद्धता की स्थिति बन जाती है। ऐसी स्थिति में भय, चिंता, व्यवहार में लचीलेपन का अभाव, मानसिक तनाव आदि उत्पन्न होते हैं। द्वंद यदि आंतरिक रूप में हो तो वह काफी कठिन माना जाता है। कभी-कभी यह अवसाद (Depression) का भी रूप ले लेता है, जिसका घातक परिणाम भी निकल आता है।



**द्वंद के कुछ मुख्य स्रोत भी हो सकते हैं-**

**लक्ष्य की प्राप्ति :-** अनेक बार ऐसी स्थिति पैदा होती है कि लक्ष्य प्राप्ति होने की अवस्था में अन्य लोगों को निराशा का सामना करना पड़ता है। कायदे से ऐसी स्थिति में भावनाओं में समरूपता रहनी चाहिए। समभाव की स्थिति में यश-अपयश दोनों समरूप में रहते हैं। गीता में कहा गया है-“ सुख दुःखे समेकृत्वा लाभौ जयाजयौ”।

**आजादी:-** आधुनिक युग में अनेकों व्यक्ति जो माता-पिता के साथ रहने के कारण इस द्वंद में घिर जाते हैं कि उनके साथ रहने में पूर्ण आजादी नहीं है। हम अपनी मन-मर्जी से सारी बातें नहीं कर सकते। साथ रहें या अलग हो जाएँ।

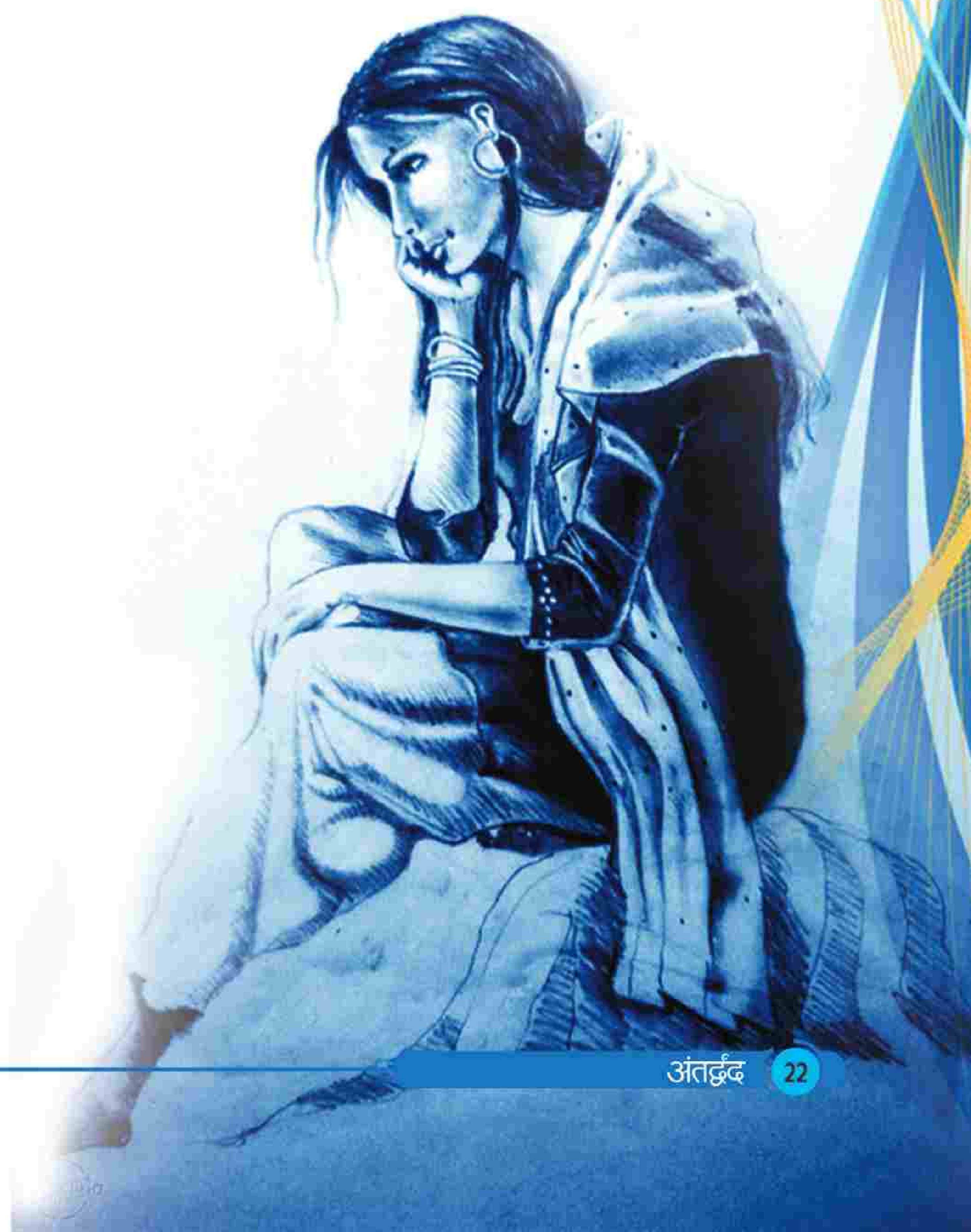
**नैतिकता का दबाव:-** आधुनिक युग में द्वंद की स्थिति युवाओं में अपनी यौन संबंधी इच्छाओं का पुरा न होना भी माना जा सकता है। सोशल मीडिया इसमें आग में घी डालने का भी काम करती है।



**शत्रुता की भावना:-** जाने अनजाने यदि किसी व्यक्ति से किसी अन्य के कार्य में बाधा उत्पन्न होती है तो उसके प्रति शत्रुता का भाव मन में आना स्वाभाविक है। ऐसी स्थिति में मन में द्वंद पैदा होती है कि दुश्मनी निकालें या न निकालें और घुटते रहें, सहते रहें।

अंतर्द्वंद की परेशानी से बचने के कुछ उपाय भी जानकारों द्वारा सुझाए गए हैं। इसमें जानकारों द्वारा योग, काउन्सिलिंग, सफल व्यक्तियों की सलाह/संपर्क, अकेलापन से बचाव आदि के साथ-साथ अन्य कई तरह के सलाह दिये जाते हैं।

कुल मिलाकर देखी जाए तो सबसे अच्छा है कि जीवन में अंतर्द्वंद की स्थिति बनने ही न दिया जाए या कम-से-कम स्थिति बने और सही सलाह/ सही जगह से सही व्यक्ति की सलाह से उसका निबटारा हो।





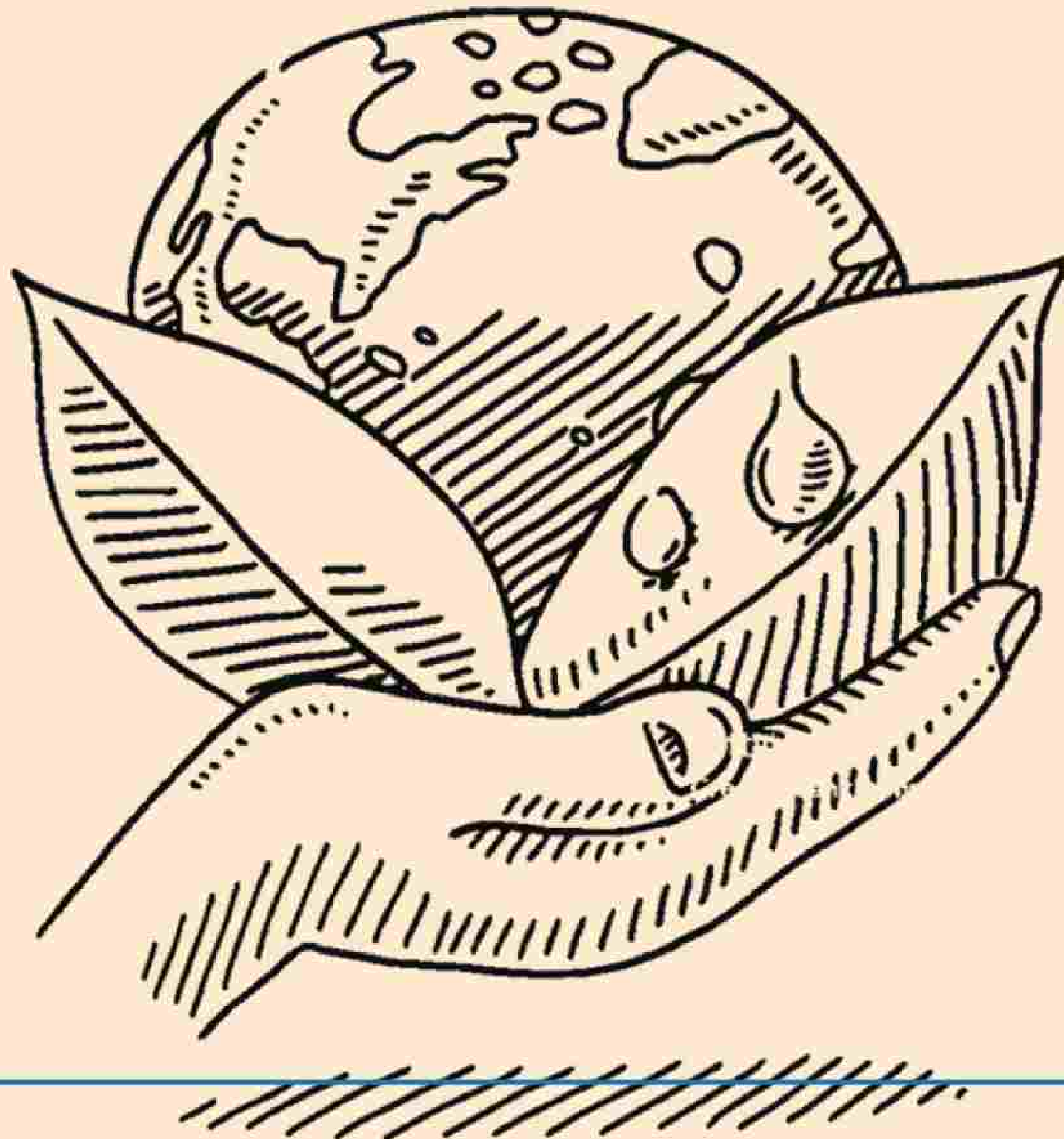
# मातृभूमि

कल कल छल छल जीवनधारा,  
आगे इस जीवन में आस!  
मातृभूमि से खूब सहारा,  
जीवन में सुख का अहसास!!  
आसजहाँ से पोषित जीवन,  
ठौर ठिकाना स्नेह हुलास!  
अपनापा जननी में खासा,  
मातृभूमि आनंदनिवास!!



श्री पूर्णेन्दु कुमार झा  
द्वारा श्री अविनाश कुमार ठाकुर  
सहायक लेखा अधिकारी

हिमगिरि से आती हैं नदियाँ,  
स्नेहसलिल से खूब जहान!  
हँसते-खिलते बाग-बगीचे,  
अम्बर नील हरित परिधान!!  
भिन्न कहाँ जननी से धरती,  
खूब यहाँ जीने की आस!  
आसमान से बढ़कर माता,  
मातृभूमि आनंदनिवास!!





जन्मभूमि-जननी से जितना,  
इस जीवन को है उपकार!  
क्या हमसे संभव है उतना,  
मातृभूमि का प्रत्युपकार!!  
क्षिति जल पावक गगन समीरा,  
पंच तत्व का निज तन खास!  
पंच तत्व की भूमि हमारी,  
मातृभूमि आनंदनिवास!!

खूब बनाया भाग्यविधाता,  
धरती पर जीवनसंसार!  
सर्वयोनि का राजा मानव,  
आसकुसुम कितना भकरार!!  
शरणदायिनी भूमि हमारी,  
मोक्षदायिनी खूब झाकास!  
प्रकृति की सुरक्षा से ही संभव,  
मातृभूमि आनंदनिवास!!

जन्मसिद्ध अधिकार हमारा,  
मातृभूमि पर घर-परिवार!  
धर्मोचित कर्तव्य अपेक्षित,  
सहज प्रकृति से सुखसंचार!!  
निज धरती की छाती उर्वर,  
खूब जहाँ में चलती साँस!  
इस जीवन में नूर जहाँ है,  
मातृभूमि आनंदनिवास!!





पुरस्कार प्रदान करते हुए उपमहालेखाकार



पुरस्कार प्रदान करते हुए उपमहालेखाकार



# ग़ज़ल



ज़िंदगी कट जाएगी चलते रहो आराम से  
बस सफ़र में रक्खो मतलब सिर्फ़ अपने काम से

मेरी जानिब प्यार से देखा जो उसने बज़्म में  
आज कल जलने लगे हैं लोग मेरे नाम से

जब कभी गुज़रूँ गली से तेरा हो दर्शन मुझे  
मेरी खातिर तेरी चौखट कम नहीं है धाम से

गर मेरी हाथों की रेखाओं में तू शामिल नहीं  
तू इशारा दे तो तुझको माँग लूँ मैं राम से

ये ज़बाँ कट जाए या फिर सर करे कोई कलम  
प्यार जो करते हैं कब डरते हैं वो अंजाम से

साहिबे मसनद को बस मसनद से ही मतलब रही  
इनको मतलब कब रहा है देश के आवाम से

तुम ज़रा बेचैन हो के हम ज़रा बेताब से  
यूँ मलक मिल जाएँ राधा ज्यूँ मिली थी श्याम से



**श्री राम सिंगार चौहान**  
सहायक लेखा अधिकारी





# ट्रान्सफर



## पात्र

रोहन : केन्द्रीय कर्मचारी [आयु 40 वर्ष, लंबा कद-काठी]

श्रद्धा : रोहन की पत्नी [आयु 36 वर्ष, मध्यम ऊंचाई]

सूर्या : रोहन का पुत्र [आयु 10 वर्ष]

श्रेया : रोहन की पुत्री [आयु 06 वर्ष]

नितिन, आसिफ, एवं सोरेन : रोहन के मित्र



**श्री सन्नी कुमार**  
कनिष्ठ अनुवादक

## दृश्य :- प्रथम

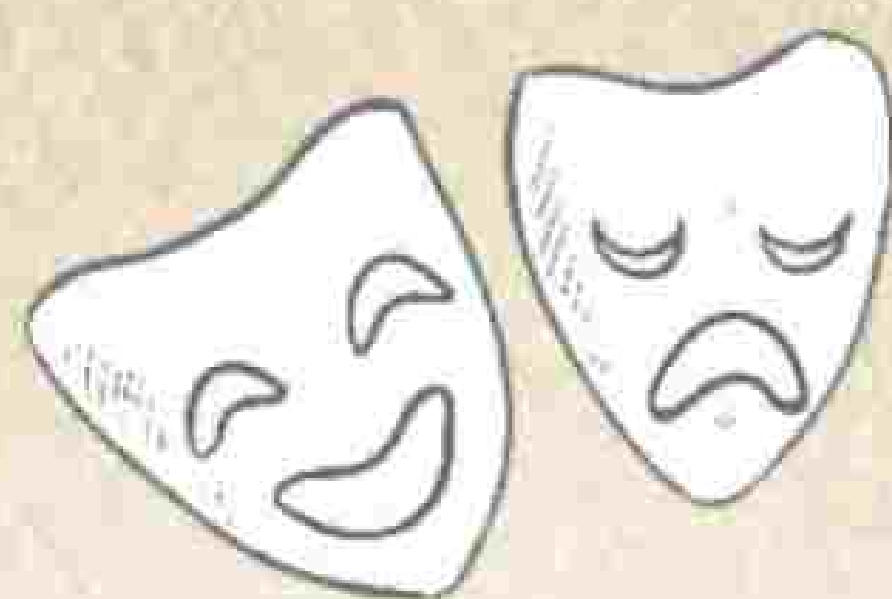
[चेन्नई सीपीडबल्यूडी क्वार्टर का फ्लैट सं. 55, मुख्य दरवाजा खुलने पर हॉल दिखलाई पड़ता है जिसमें एक सोफा और एक राउंड टेबल रखा हुआ है। हॉल की दीवार पर एक टी.वी. टंगा हुआ है। हॉल से एक दरवाजा खुलता है जो डाइनिंग रूम की तरफ जाता है वहाँ एक डाइनिंग टेबल ओर तीन कुर्सियाँ लगी हुई हैं। एक कोने में फ्रीज

रखा हुआ है। इस रूम से तीन दरवाजे खुलते हैं जिसमें एक किचन, और दो बेड रूम हैं। साथ में एक वॉशरूम भी है तथा एक दक्षिण दिशा में खुलने वाली बाल्कनी। दिन शनिवार रोहन बाल्कनी में समाचार पत्र पढ़ रहा होता है।]

## [पर्दा उठता है]

रोहन :- श्रद्धा ! इधर आओ देखो तो जरा अंडों से





चिड़ियाँ के बच्चे निकल रहे है !

जल्दी आओ।

श्रद्धा :- ( हाथ में ग्लास लिए हुए आती है )। हाँ दिखाओ किधर ?

रोहन :- वहाँ देखो। पेड़ के उस टहनी पर कैसे अंडे से बाहर निकल रहे हैं। कितना प्यारा है।

श्रद्धा :- रुको मैं डीएसएलआर कैमरा लेकर आती हूँ। (श्रद्धा रूम में चली जाती है)।

श्रेया :- (दौड़ते हुए आती है।) क्या हुआ पापा, मम्मी कैमरा क्यों लाने गई है।

रोहन :- उधर देखो बेटा, वहाँ एक चिड़ियाँ अंडे से निकल रही है। कितनी प्यारी है !

श्रेया :- मम्मा, जल्दी आना।

श्रद्धा :- आ गई बाबा। (फोटो खींचती है।)

रोहन :- (रोहन के मोबाइल पर एक संदेश आता है, वह देखता है।) श्रद्धा अगले सप्ताह मेरा ट्रान्सफर होने वाला है। किस राज्य में मिलेगा यह उसी दिन मालूम पड़ेगा।

श्रद्धा :- क्या ? यहाँ से अगले हफ्ते जाना होगा। सूर्या और श्रेया का



पढ़ाई, अभी फ़ाइनल परीक्षा भी शुरू नहीं हुआ है। इस शहर में रहते-रहते यहाँ सब व्यवस्थित हो गया था। घर से दूर हैं फिर भी अपनापन हो गया था। और अब फिर से नया शहर।

रोहन :- अब क्या किया जा सकता है ? कल से बिजली कनेक्शन, पानी कनेक्शन, गैस कनेक्शन, नाना प्रकार के एनओसी, बाबू लोग का टी.सी. आदि जैसे काम को कर लेना होगा।

श्रद्धा :- कोई बात नहीं। नया शहर नया

अनुभव नये लोग नया परिवेश जैसे अच्छी अनुभूति का समावेश हमारे जीवन में होगा। देखो कितनी अच्छी तस्वीर आई है। (सभी लोग कैमरे में कैद तस्वीर को देखते हैं)।

रोहन :- मैं बगल के ग्राउंड पर जा रहा हूँ। आज शनिवार है, आस पड़ोस के दोस्तों से भी मिल लूँगा। मुझे आने में समय लगेगा। बच्चों का ध्यान रखना।

(रोहन घर से निकलता है)।





## दृश्य :- द्वितीय

[ हरे-कोमल घास चारों ओर मैदान में उगे हैं। मैदान के उतरी भाग में लोग योगा कर रहे हैं, बीच भाग में कुछ बच्चे क्रिकेट खेल रहे हैं। रोहन के मित्र नितिन, आसिफ और सोरेन जॉगिंग कर रहे हैं। ]

नितिन की नजर रोहन पर पड़ती है ।

नितिन :- क्या भाई रोहन आज देर कर दिये इधर आने में । और सब बताओ घर में सब अच्छा चल रहा है न ।

रोहन :- हाँ भाई सब बढ़िया ही चल रहा था और अचानक ट्रान्सफर का फरमान आ गया ।

सभी मित्र एक साथ आश्चर्य से बोल उठते हैं – क्या ट्रान्सफर मतलब यहाँ से चले जाओगे ।

सोरेन :- हम्म ! अरे यार तुम्हारे विभाग में तो ट्रान्सफर नहीं है, वो शर्मा जी तो उसी ऑफिस में चपरासी से क्लास 1 के अधिकारी बन गए। मजाल है कि उनका ट्रान्सफर हो। एक ही खूँटे से बंधे रहें एक ही ऑफिस में ।

रोहन :- सही कहा दोस्त।

आसिफ :- लेकिन यार, मैंने पेपर में पढ़ा था



कि तुम्हारे कार्यालय के ज़्यादातर कर्मि कहीं पर अत्यधिक मात्रा में कहीं पर बहुत अल्प मात्रा में हैं ट्रान्सफर तो उनका होना चाहिए था और यह मामला लोकहित का भी है।

नितिन :- जीवन भर परिवार, शिक्षा, दोस्त, घर, रिश्ते-नाते आदि रूपी समान को टोकरी में डाल अपने सिर पर रख कर एक स्थान से दूसरे स्थान भटकते रहोगे।

सोरेन :- मन दुखी हो गया है अब तुमसे

मिलना भी न हो सकेगा । दो पैसे कम सही पर एक जगह चाकरी करना ज्यादा लाभकारी है ।

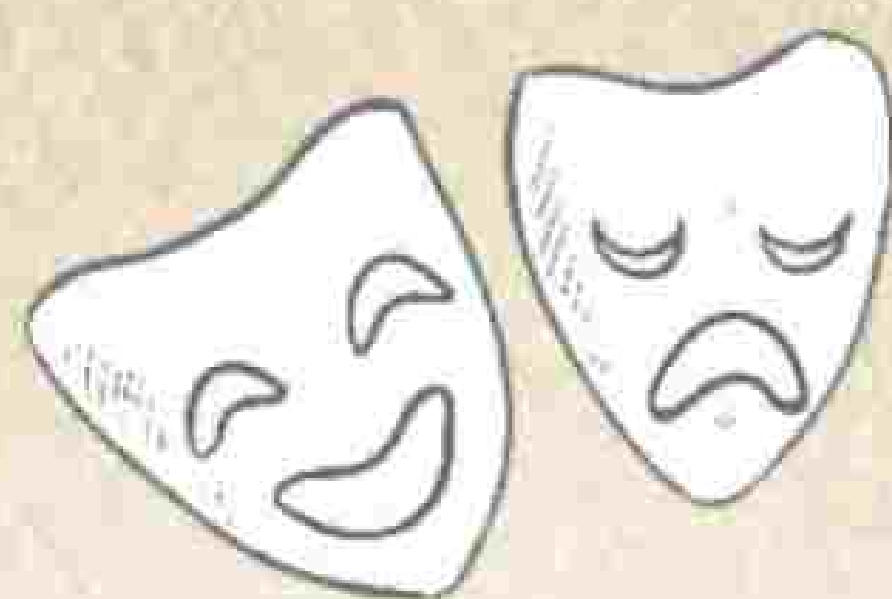
सब बोलते हैं :- बहुत याद आओगे, दोस्त !

[ फिर सभी लोग इधर उधर कि बातें करते हुए जॉगिंग करने लगते हैं और कुछ घंटों बाद अपने-अपने घर चले जाते हैं । ]

## दृश्य :- तृतीय

[ रोहन का क्वार्टर – रोहन कमरे में प्रवेश करता है। ]





श्रद्धा :- आ गए आप। फ्रेश हो जाइए  
नास्ता तैयार है ।

रोहन :- अच्छा ठीक है ।

श्रेया :- पापा । देखिये न एक बड़ा पक्षी  
आया और उस पक्षी के घोंसलें  
को बर्बाद कर दिया उसके बच्चे  
भी नीचे जमीन पर गिरे पड़े हैं।

रोहन :- क्या ?

(रोहन दौड़कर नीचे जाता है और छोटे-  
छोटे चिड़ियों को उठाकर ले आता है।  
रोहन अपने बाल्कनी में एक घोंसला तैयार  
करता है और चिड़ियों को उसी में रख देता  
है। रोहन का बाल्कनी उस पेड़ से नजदीक  
ही था । इस वजह से चिड़ियों की माँ ने  
आसानी से अपने बच्चे को ढूँढ ली और  
उसी घोंसले में सभी रहने लगे ।)

श्रद्धा :- अच्छा किया आपने । यह  
देखकर मुझे भी अपने बच्चों पर  
तरस आ रहा है। इस ट्रान्सफर के  
कारण हमें अपने बच्चों का भी  
जीवन इसी प्रकार समेटना होगा ।

रोहन :- सही कहा तुमने ।

(दो हफ्ते हो गए रोहन का ट्रान्सफर हो गया  
इस वजह से इस शहर को छोड़कर नए



शहर जाना था । वह और उसका परिवार  
घर से निकलने वाले थे। एक तरफ पैकर  
एंड़ मुवर वाले घर का समान निकाल रहे  
थे वहीं दूसरी तरफ इस घर से जुड़े सामानों  
को निकलता देख रोहन और श्रद्धा के मन  
में एक अजीब बिछड़न का एहसास हो रहा  
था। इस शहर में बिताए हर पल की यादें  
उनके आँखों के सामने एक-एक करके  
दिखलाई पड़ रहे थे । सभी रेलवे स्टेशन

पहुँच जाते हैं और ट्रेन में बैठ जाते हैं ।  
एक नया शहर, नया वातावरण, बच्चों का  
भविष्य आदि अनेकों नई जिम्मेदारियों का  
निर्वहन करने संबंधी विचार रोहन और  
श्रद्धा के मन में आ रहे थे और इसी बीच  
ट्रेन खुल जाती है ।)

**[पर्दा गिरता है।]**





# पापा



श्रीमती प्रतिमा कुमारी  
सहायक पर्यवेक्षक

अतुलनीय अनुपम तेरा प्यार  
जीवन सारा दूँ मैं वार ।  
उंगली पकड़ चलना सिखाया,  
गिरि जब-जब उठाया ।  
याद आती जब तेरा त्याग,  
भर आती है मेरी आँख ।  
मेरी खातिर अपनी नींद,  
हर सुबह की आपने खराब ।  
कभी प्यार से कभी फटकार से,  
तूने उस साँचे में ढाला,  
कोई झंझावात डिगा न सका,  
ऐसा मुझे बना डाला ।  
जब काली बदली ने था घेरा,  
दिख रहा नहीं था दूर-दूर तक कहीं सवेरा,  
तेरी अनमोल शिक्षा ने हीं,  
तब था वो प्रकाश भरा,  
रौशन हुई राह मैंने पग धरा ।  
स्वावलंबन का ये जो आधार है,  
पापा! स्तम्भ आपके ही संस्कार हैं ।





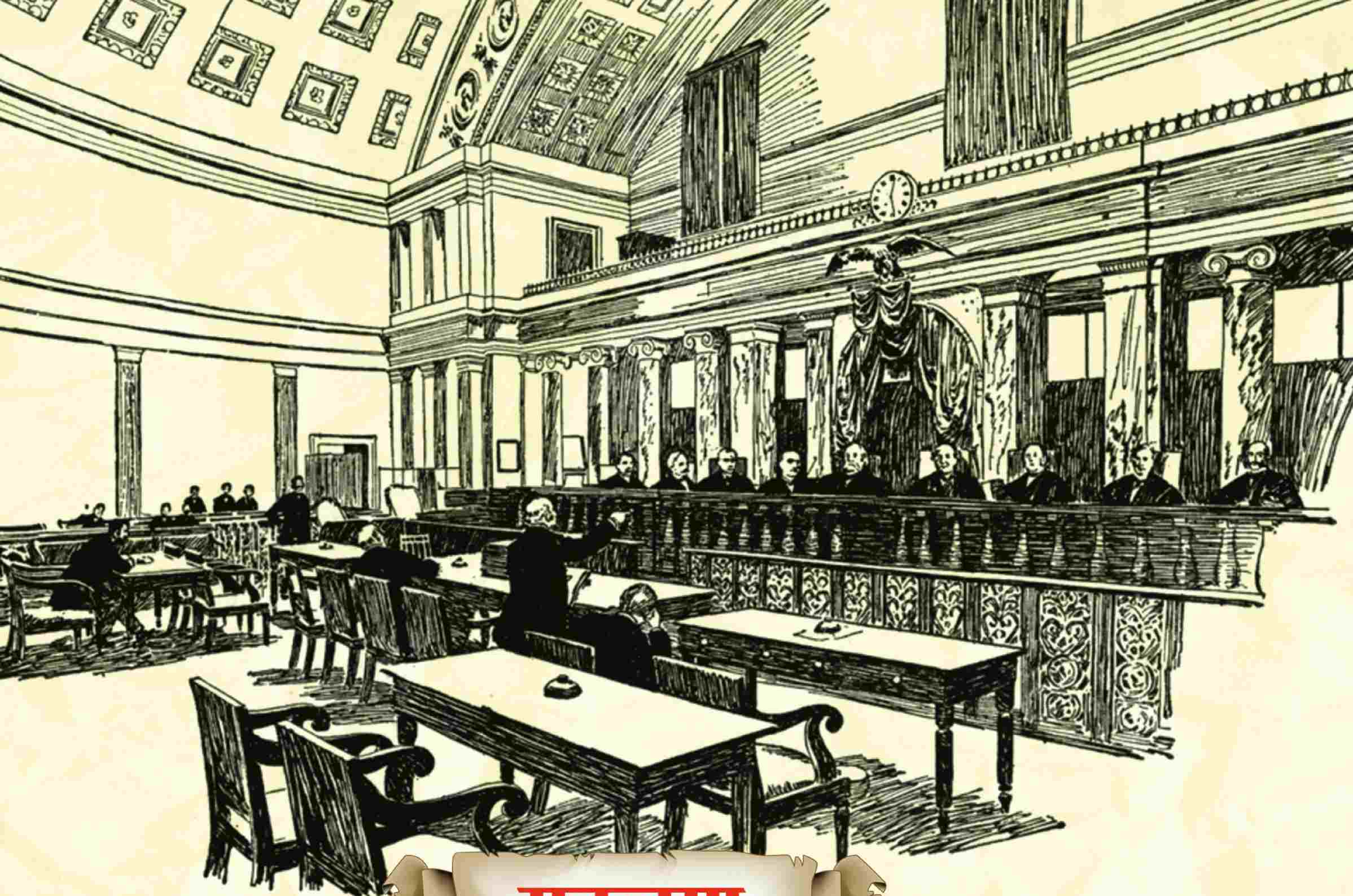


पुरस्कार प्रदान करते हुए उपमहालेखाकार



पुरस्कार प्रदान करते हुए उपमहालेखाकार





## मुकदमा



**श्री चन्द्र किशोर तिवारी**  
सहायक लेखा अधिकारी

आज का युग सूचना तकनीक का युग है तथा इस युग में सोशल मीडिया भावनाओं की अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम है। इसमें कभी-कभी इतने अच्छे संदेश पढ़ने या सुनने को मिलते हैं जो अंतर्मन में प्रविष्ट कर जाते हैं। कुछ दिन पहले मैंने एक संत के प्रवचन को सुना जिसमें उन्होंने एक ऐसे प्रसंग को सुनाया जो अत्यंत ही भावुक करने वाला था। सर्वप्रथम उस प्रसंग की मैं चर्चा करूंगा फिर अपनी बात कहूंगा। एकबार किसी न्यायालय में एक ऐसा केस दर्ज हुआ जिसे सुनकर न्यायाधीश महोदय स्वयं आश्चर्यचकित थे। एक 70 वर्ष के छोटे भाई ने अपने 80 वर्ष के बड़े भाई पर यह मुकदमा किया था कि बड़े भाई साहब उन्हें माँ की सेवा करने का मौका नहीं दे रहे हैं, मैंने उनसे कई बार निवेदन किया लेकिन वो

नहीं मानते हैं, इसीलिए मुझे न्यायालय की शरण में आना पड़ा। पिछले 40 वर्षों से भाई साहब माँ को अपने पास रख रहे हैं। माँ की उम्र 103 वर्ष हो गई है, बिस्तर से उठ भी नहीं पाती है। उनका वजन मात्र 30 किलो रह गया है। मेरे भाई साहब भी अब काफी वृद्ध हो चुके हैं, उनका हाथ काँपता है। मैं उनसे 10 वर्ष छोटा हूँ। अतः मैं माँ की सेवा उनसे बेहतर कर सकता हूँ। मैं चाहता हूँ कि भाई साहब को अब आराम करना चाहिए। उन्होंने बखूबी अपने कर्तव्यों का निर्वहन किया है। अब मुझे यह अवसर मिलना चाहिए। जज साहब केस पढ़कर अचंभित थे। उन्हें समझ में नहीं आ रहा था कि इसका फैसला कैसे करें, प्रेम का बंटवारा कैसे करें। अबतक जमीन-जायदाद, संपत्ति के बंटवारों से संबन्धित बहुत सारे केस का निपटारा उन्होंने



किया था लेकिन माँ का बंटवारा अभी तक नहीं कराया था। काफी मनन के बाद भी जज साहब किसी निर्णय पर नहीं पहुँचे, तब उन्होंने माताजी को कोर्ट में बुलाया और उन्हीं से पूछा कि आप क्या चाहती हैं? माताजी बोलीं, मैं इस विषय में क्या बोलूँ हजूर, ये दोनों ही मेरे प्यारे फूल हैं। मैं जितना इन्हें प्यार करती हूँ उससे कहीं ज्यादा ये दोनों मुझे प्यार और सम्मान देते हैं। मैं तो धन्य हूँ तथा अपने भाग्य पर इतराती भी हूँ कि ईश्वर ने किसी सुकर्म के उपहार स्वरूप मेरे गोद में इन दोनों पुत्रों को दिया। आप जो फैसला सुनाएँगे मैं उसे शिरोधार्य करूँगी। जज साहब अभी भी असमंजस में थे लेकिन चूँकि मुकदमा हुआ था उसका तो फैसला सुनाना ही था। जज साहब ने निर्णय सुनाते हुआ कहा कि मेरे कोर्ट में इस तरह का पहला मुकदमा दर्ज हुआ है। जिसे पढ़कर मैं आश्चर्यचकित हूँ वैसे तो यह मुकदमा कलियुग में दर्ज हुआ है लेकिन मुझे ऐसा आभास होता है कि मैं सतयुग में आ गया हूँ। मैं माताजी को नमन करता हूँ जिन्होंने ऐसे संस्कारी पुत्रों को जन्म दिया। चूँकि छोटे भाई की उम्र कम है तथा उन्हें माता की सेवा का अवसर कभी नहीं मिला। अतः उन्हें अब माता की सेवा का अवसर दिया जाय। बड़े भाई ने अपने कर्तव्य का पालन कर लिया है। अब छोटे भाई को कर्तव्य निभाने का मौका दिया जाय। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि संसार में सभी कोर्ट में इस तरह का मुकदमा प्रतिदिन दर्ज हो।

उक्त प्रसंग वास्तविक है या काल्पनिक – ये तो पता नहीं लेकिन यह समाज को एक बहुत ही महत्वपूर्ण संदेश देता है। आज अधिकांश घरों में वृद्ध माता-पिता की अवस्था अत्यंत दयनीय है। कोई उनसे स्नेहपूर्वक बात करने वाला नहीं है। वृद्धाश्रम में रहने वाले

बुजुर्गों की संख्या दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। इस परिपेक्ष्य में ये प्रसंग समाज को आईना दिखाने वाला है।

हमारे ग्रन्थों में कहा गया है कि हमारे ऊपर तीन तरह के ऋण होते हैं मातृ ऋण, पितृ ऋण एवं गुरु ऋण इसमें गुरु दक्षिणा से गुरु ऋण तथा पितृ कर्म से पितृ ऋण चुकाया जा सकता है लेकिन एक मातृ ऋण ही है जिसे चुकाया नहीं जा सकता, हाँ, उनकी सेवा से उन्हें प्रसन्न कर कुछ कम किया जा सकता है।

आजकल हमलोग प्रतिदिन मोबाईल पर एक से एक ज्ञान कि बातें पढ़ते और सुनते हैं लेकिन इसका अनुसरण करने का प्रयास नहीं करते हैं। अंत में, मैं सभी से निवेदन करूँगा कि आप जो भी अच्छा प्रसंग, कहानी आदि किसी भी माध्यम से पढ़ते या सुनते हैं तो इसे अपने बच्चों को जरूर सुनाएँ। इसका सुप्रभाव बच्चों पर जरूर पड़ेगा। बच्चे तो कच्ची मिट्टी के होते हैं उन्हें हम जैसे ढालेंगे वो वैसे बन जाएंगे तथा कहानी के रूप में सुनाई गयी कोई ज्ञान की बातें उनके मन में शीघ्र घर कर जाता है। एक दिन हम सभी वृद्ध होंगे अगर हमारे बच्चे संस्कारवान होंगे तो हमारा अंत भी सुखमय होगा तथा हमारा परिवार एवं समाज भी सुंदर होगा। देश, समाज, परिवार की सारी विकृतियाँ दूर होंगी तथा वृद्धजन, असहाय एवं महिलाओं के प्रति सम्मान की भावना जागृत होगी।





# कुछ ना बदला..!



वही दरिंदे, वही है खंजर  
कुछ ना बदला वही है मंजर  
आखिर कब तक सहन करें हम  
कुढ़ता है मन अंदर-अंदर  
वही दरिंदे, वही है खंजर ...!

गली गली रैलियाँ चलेंगी, बस यूँ ही  
लाखों मोमबत्तियाँ जलेंगी, बस यूँ ही  
सत्ता लोलुप नेता रंज उगलता है  
मुद्दा हल ना होता, सिर्फ उछलता है  
पता नहीं अब किसकी बारी  
दहशत बैठ गई है अंदर ...  
वही दरिंदे, वही है खंजर !



**श्रीमती आभा झा**  
द्वारा श्री अविनाश कुमार ठाकुर  
सहायक लेखा अधिकारी



मिलजुलकर योजना बना लेगा कोई  
क्षत् - विक्षत् करके तड़पाएगा कोई  
फूट - फूट कर रोएगी फिर मानवता  
चीख-चीख दम तोड़ेगी माँ की ममता  
खून से लथपथ लपटें लखकर  
नहीं पिघलती छाती बंजर ...  
वही दरिंदे.... वही है खंजर!

नैतिकता है टंगी हुई दीवारों पर  
बर्बरता है घूम रही चौराहों पर  
हर नुक्कड़ पर खड़ा कोई दुशासन है  
कैसी पुलिस व्यवस्था, कैसा शासन है  
किसे पुकारे यहाँ द्रौपदी ?

कौन बनेगा कृष्ण यहाँ पर ?  
वही दरिंदे.. वही है खंजर  
कुछ ना बदला... वही है मंजर







## गौतम बुद्ध



**श्रीमती सोनी कुमारी**  
पति - श्री सज्जी कुमार  
कनिष्ठ अनुवादक

**मा** रत में अनेक महापुरुषों ने जन्म लिया है। यहाँ महावीर स्वामी, भगवान राम, भगवान कृष्ण और गौतम बुद्ध जैसे समस्त विश्व को सत्य-अहिंसा एवं धर्म की राह दिखाने का कार्य किया।

भगवान गौतम बुद्ध बौद्ध धर्म के संस्थापक एवं प्रवर्तक थे। बुद्ध का जन्म 563 ई.पू. में कपिलवस्तु के निकट लुम्बिनी नामक वन में हुआ था। इनके पिता नाम शुद्धोधन था, जो शाक्य गणराज्य के मुखिया थे। इनकी माता का नाम महामाया था। भगवान बुद्ध के बचपन का नाम सिद्धार्थ था। सिद्धार्थ के जन्म के सात दिन बाद ही उनकी माता का देहांत हो गया था। इस प्रकार उनका पालन-पोषण उनकी मौसी एवं विमाता प्रजापति गौमती द्वारा किया गया। ऐसा माना जाता है कि भगवान गौतम बुद्ध भगवान

विष्णु के नौवें अवतार थे।

महारानी महामाया देवी जब अपने माता पिता के घर जा रही थी, तभी देवदह के मार्ग पर उन्हें प्रसव पीड़ा हुई और वही उन्होंने बालक सिद्धार्थ को जन्म दिया। भगवान बुद्ध का जन्म गौतम गोत्र में होने के कारण ही वे गौतम के नाम से जाने गए। ऐसा माना जाता है कि भगवान गौतम बुद्ध के जन्म के सात दिन बाद ही उनकी माताजी का देहांत हो गया था। शुद्धोधन की दूसरी पत्नी गौतमी ने भगवान बुद्ध का पालन पोषण किया तथा उनका नाम सिद्धार्थ रखा जिसका अर्थ होता है जो सिद्धि प्राप्ति के लिए जन्म लिया हो। चूंकि सिद्धार्थ एक राजकुमार थे, उनका पालन-पोषण में किसी भी प्रकार की कमी नहीं की गई। परंतु सिद्धार्थ का



मन राजकीय वस्तुएँ तरफ आकर्षित नहीं होता था। वे सांसारिक भोग विलास में विश्वास नहीं रखते थे। उनका मन-मस्तिष्क आत्म चिंतन में डूबा हुआ रहता था। उनकी स्थिति को देखकर शुद्धोधन का मन अत्यंत चिंतित रहता था।

सिद्धार्थ जब 16 वर्ष की आयु के थे तभी उनका विवाह यशोधरा नाम की कन्या से किया गया था। उनके पिता को विश्वास था कि वे वैवाहिक जीवन की मोह माया में आकर सांसारिकता के प्रति उनका मन लगने लगेगा। विवाह के कुछ समय के पश्चात उन्हें एक पुत्र की प्राप्ति हुई जिसका नाम राहुल रखा गया। पुत्र प्राप्ति के पश्चात भी सिद्धार्थ का झुकाव सांसारिक जीवन के प्रति नहीं हुआ। वे आत्म मनन-चिंतन में ही खोये हुए रहते थे। वे सांसारिक जीवन से अत्यंत खिन्न थे। एक दिन अपनी पत्नी एवं पुत्र को रात में सोते हुए छोड़कर घर से निकल गए। वे इस तरह से अपने मन में उत्पन्न नाना-प्रकार के प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने अर्थात् ज्ञान की खोज में निकल पड़े। उस समय उनकी आयु केवल 29 वर्ष की थी। यह घटना **महामिनिष्क्रमण** के नाम से प्रसिद्ध है।

शुरुआत में सिद्धार्थ ने वैशाली के विद्वान आलार कालाम तथा राजगृह के विद्वान

उद्रक रामपुत्र से ज्ञान प्राप्त करने का प्रयत्न किया। परन्तु, उनकी मन की कुंठा तृप्त नहीं हुई। इसके पश्चात वे पाँच ब्राह्मण मित्रों के साथ उरुवेल के जंगल में तपस्या करने लगे। तप करते करते उनका शरीर कमजोर हो गया था साथ ही वे अत्यंत पतले भी हो गए थे। परन्तु, मन अभी भी अशांत था। उनको अपने प्रश्नों के उत्तर अभी तक प्राप्त नहीं हुए थे। लेकिन, वे हार मानने वाले नहीं थे। उनकी इच्छा शक्ति काफी प्रबल थी। उनका मन अंधकार में खोया हुआ था, चैन तभी आएगा जब ज्ञान रूपी प्रकाश से वे अपने मन के अंधकार को दूर करेंगे।

अंत में सिद्धार्थ एक पीपल के वृक्ष के नीचे ध्यान की अवस्था में बैठ गये। सात दिन अखंड समाधि में लीन रहने के बाद वैशाखी पूर्णिमा की रात को उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुआ, उन्हें सत्य के दर्शन हुए और वे बुद्ध कहलाने लगे। इस घटना को **सम्बोधि** कहा जाता है। जिस वृक्ष के नीचे उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ, उसे बोधिवृक्ष कहा जाने लगा और गया **बोधगया** के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

ज्ञान प्राप्त करने के बाद भगवान बुद्ध ने सारनाथ पहुँचकर उन पाँच ब्राह्मणों को उपदेश दिया, जो उन्हें छोड़कर चले आए थे।



ये पाँचों ब्राह्मण बुद्ध के अनुयायी बन गये तथा इस घटना को **धर्मचक्र प्रवर्तक** के नाम से प्रसिद्ध हुआ। वे 45 वर्ष की आयु तक बौद्ध धर्म का प्रचार करते रहे। अंत में 483 ई पू में 80 वर्ष की आयु में कुशीनगर में भगवान बुद्ध का देहांत हो गया। बौद्ध परम्परा के अनुसार यह घटना को **महापरिनिर्वाण** के नाम से जानी जाती है।





## गौतम बुद्ध के सिद्धान्त

### 1. चार आर्य सत्य :

महात्मा बुद्ध ने संसार को दुःखमय कहा और इस संबंध में चार आर्य सत्य के बारे में बताया है।

1. दुःख- संसार दुःखों से भरा हुआ

है, जन्म, मृत्यु, बुढ़ापा और रोग सभी दुःख हैं, इच्छा वस्तु प्राप्त ना होना भी एक दुःख है।

2. दुःख समुदाय- संसार में हर दुःख का कोई ना कोई कारण होता है, बुद्ध के अनुसार दुःखों का मुख्य कारण तृष्णा है।

3. दुःख निरोध- उन्होंने बताया कि तृष्णा के बिना प्रत्येक दुःख का विनाश संभव है।

4. दुःख निरोध गामिनीप्रतिपदा- यह वह मार्ग है, जिसके द्वारा दुःखों पर विजय प्राप्त की जा सकती है। बुद्ध ने अपने इस सिद्धान्त के अंतर्गत 8 मार्गों का प्रतिपादन किया, इसे बुद्ध के अष्टांग मार्ग भी कहते हैं—  
1. सम्यक् दृष्टि, 2. सम्यक् संकल्प  
3. सम्यक् वाणी 4. सम्यक् कर्मान्त  
5. सम्यक् अजीव 6. सम्यक् प्रयत्न  
7. सम्यक् स्मृति 8. सम्यक् समाधि।

### 2. दस शील :

बुद्ध ने आचरण की शुद्धता हेतु दस शील के पालन पर विशेष बल दिया। यह दस

शील इस प्रकार है:-

1. अहिंसा
2. सत्य
3. अस्तेय (चोरी ना करना)
4. ब्रह्मचर्य
5. अपिरग्रह (संग्रह ना करना)
6. नृत्य व संगीत का त्याग
7. सुगंधित पदार्थों का त्याग
8. असमय में भोजन का त्याग
9. कोमल शय्या का त्याग
10. कामिनी कंचन का त्याग

### 3. अनीश्वरवाद :

महात्मा बुद्ध अनीश्वरवादी थे। उनका ईश्वर की सत्ता में विश्वास नहीं था। उनका विश्वास था कि संसार की उत्पत्ति के लिए किसी कर्ता की आवश्यकता नहीं होता है। संसार का संचालन कार्य करने से होता है।

### 4. अनात्मवाद :

आत्मा के विषय में उन्होंने मध्यम मार्ग अपनाया। आत्मा के विषय में महात्मा बुद्ध मौन ही रहे।



## 5. वेदों में अविश्वास :

महात्मा बुद्ध और उनके अनुयायियों ने वेदों की प्रमाणिकता का खंडन किया और वेदों में कही गई बातों का भी स्वीकार नहीं किया।

## 6. कर्मवाद :

महात्मा बुद्ध कर्मवादी थे। उनका कहना है कि मनुष्य को उसके कर्मों के अनुसार ही परिणाम भुगतने होते हैं। मनुष्य का यह लोक और परलोक उसके कर्म पर निर्भर है। परंतु बुद्ध के कर्म का अर्थ वैदिक कर्मकांड नहीं था, वह मनुष्य के समस्त वार्षिक और मानसिक चेष्टाओं को कर्म मानते हैं।

## 7. पुनर्जन्म :

बुद्ध का पुनर्जन्म में विश्वास था उनका कहना था कि कर्मों के अनुसार ही मनुष्य का अच्छा बुरा जन्म होता है। उनका यह मानना था कि पुनर्जन्म तो होता है, लेकिन आत्मा का नहीं मनुष्य के अहंकार का होता है।

## 8. क्षणिकवाद :

महात्मा बुद्ध संसार को नित्य ना मानकर क्षणभंगुर मानते थे। उनके अनुसार

संसार की हर वस्तु परिवर्तनशील है।

## 9. जातिवाद का खंडन :

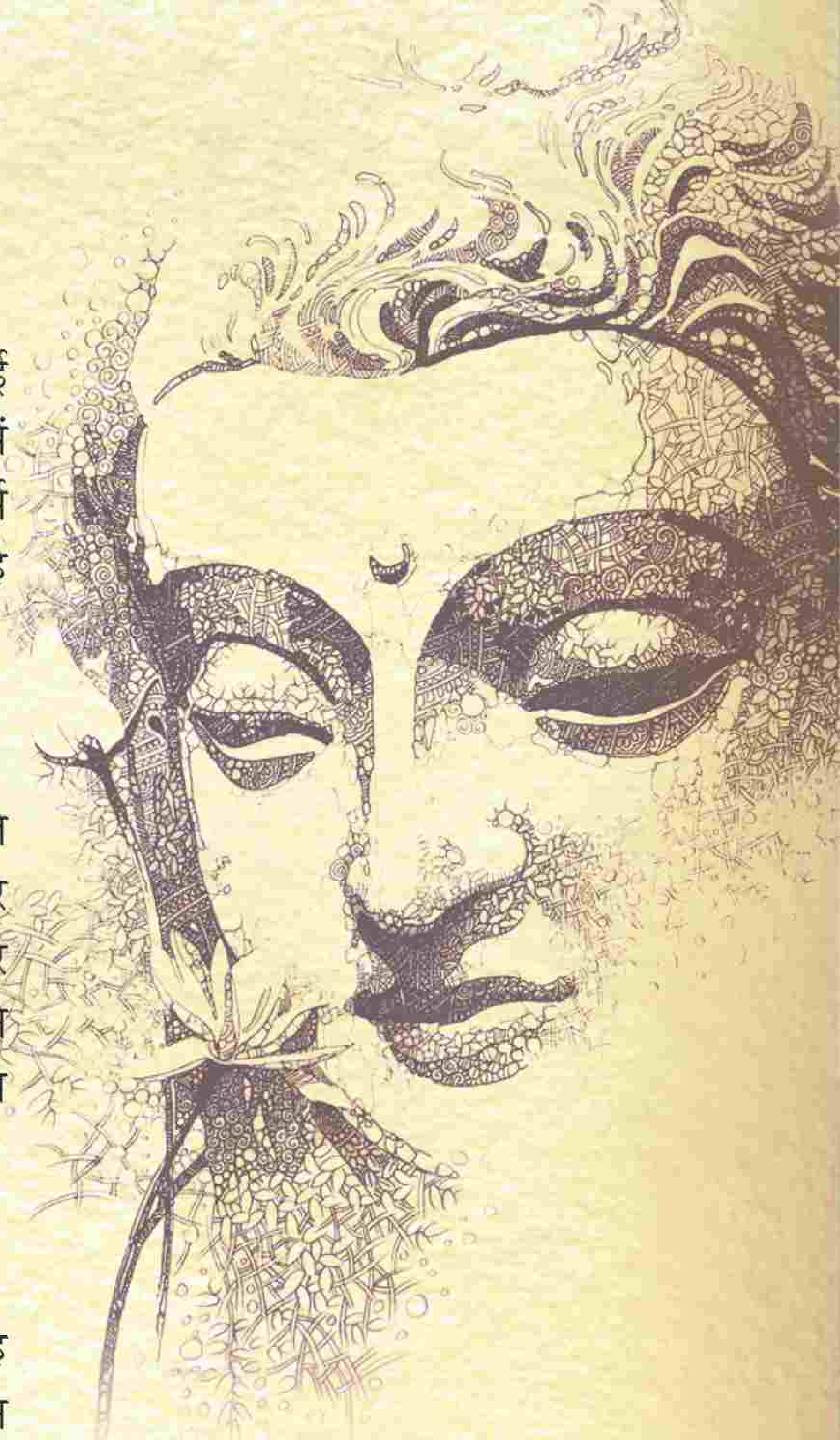
महात्मा बुद्ध का जाति पाति में कोई विश्वास नहीं था, लेकिन वह समाज एकता में विश्वास रखते थे। उनका कहना है कि बौद्ध धर्म का अनुसरण कोई भी व्यक्ति कर सकता है चाहे वह किसी भी जाति का हो।

## 10 अहिंसा पर बल :

महात्मा बुद्ध अहिंसा पर बल देते थे। उन्होंने ज्ञान प्राप्त करने के बाद जीवन भर 'अहिंसा परमोधर्म' के सिद्धांत का प्रचार प्रसार किया। उनका कहना था कि मनुष्य को अपने मन, वचन और कर्म से किसी भी जीव को दुःख नहीं पहुंचाना चाहिए।

## 11. निर्वाण :

महात्मा बुद्ध के अनुसार निर्वाण वह अवस्था है जिसमें ज्ञान की ज्योति द्वारा अज्ञान रूपी अंधकार की समाप्ति हो जाती है। मनुष्य की समस्त वासनाओं और तृष्णाओं का नाश हो जाता है। महात्मा बुद्ध ने लोगों को उपदेश दिया है कि निर्वाण की प्राप्ति कोई भी व्यक्ति सत कर्मों के द्वारा कर सकता है।





ग्लास ब्रिज, राजगीर





## गुरुद्वारा, पटना सिटी





# समाज की सोच

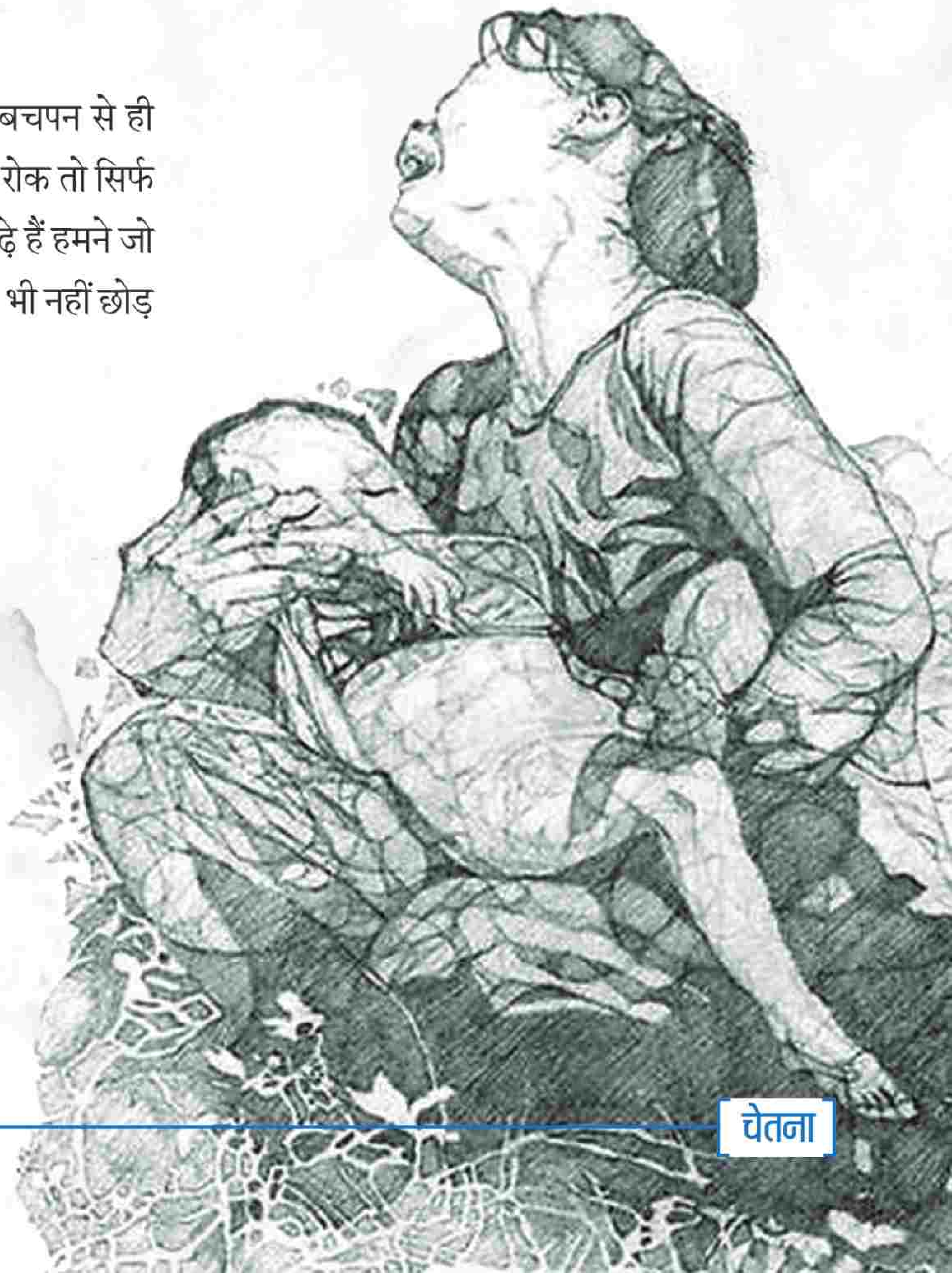
लड़की शब्द सुनते ही समाज के लोग लड़की को चिंता की नजरों से देखना शुरू कर देते हैं। ऐसा महसूस होता है कि लड़कियों का जन्म ही घर के चारदीवारी में बंद होने के लिए ही हुआ है।

क्या लड़कियों के अपने कोई सपने नहीं होते? क्या उनकी कोई अभिलाषा नहीं होती? क्या उनका जन्म समाज के लिए अभिशाप है? बेटियों का जन्म होता है तो पिता की नजरें नीची हो जाती हैं और बेटे का जन्म होता है तो अब आप का सीना गर्व से चौड़ा हो जाता है, यह सोच ही हमारे समाज की सबसे बड़ी कमजोरी है। भले ही आज हम 21वीं सदी में जी रहे हैं, लेकिन अभी भी बहुत सारे लोगों की सोच वही की वही है। भले ही हमारे समाज के लोग पढ़े लिखे हो या गवार कोई ना कोई हमें ऐसा मिल ही जाता है जिसके विचार लड़कियों के बारे में ऐसा रहता है। पहले तो लड़कियां पिता भाई के अधीन रहती हैं और बाद में पति के अधीन हो जाती हैं।

उनकी अपनी कोई सोच कोई आजादी नहीं होती। उन्हें बचपन से ही सिखाया जाता है कि वह ज्यादा बातें ना करें ना ही ज्यादा हंसे। यह रोक तो सिर्फ हम जैसी लड़कियों का ही गहना है। क्योंकि, इसी समाज में पले-बढ़े हैं हमने जो बचपन से देखा है जो हमने महसूस किया है वह हमारा पीछा आज भी नहीं छोड़ रही है।



**श्रीमती हेमलता कुमारी**  
पति - श्री उत्तम कुमार  
वरिष्ठ लेखाकार







आजकल समाज में 2 से ज्यादा बच्चे कोई नहीं रखना चाहता। उन्हें अगर, पहले किसी को लड़का हो जाए तो माता-पिता दोनों को बहुत खुशी होती है। अगर, दोनों लड़की हो जाए तो यही समाज हमें ताने मारने से बिल्कुल नहीं हिचकते। समाज परिवार दबी आवाज में यही कहते हैं कि इनके यहां कुल का दीपक नहीं है। क्या लड़का और लड़की होना मां-बाप के हाथों में होता है, लेकिन फिर भी समाज के दबाव में माता-पिता दोनों ही दबे रहते हैं।

माता-पिता को भी यही लगने लगता है कि एक लड़का हो जाता तो हमें समाज के ताने नहीं सुनने पड़ते यानी लड़के के लिए उनके मन में भी कसक रह जाती है।

आज के जमाने में लड़कियां किसी मायने में लड़कों से कम नहीं हैं। बल्कि, हर मायने में वह लड़को से कहीं आगे हैं। चाहे वह पढ़ाई लिखाई हो या खेलकूद हर चीज में वह नंबर

वन हैं। फिर भी, माता-पिता को यही उम्मीद होती है कि लड़का होता तो अच्छा होता। लेकिन, बहुत हद तक आज की युवा पीढ़ी ने इस सोच को बदलने की कोशिश की है और समाज हमसे या आपसे ही बदलेगा। इसलिए, लड़कियों को आगे बढ़ने में सहयोग करें ना कि उनके बढ़ते कदम को पीछे खींच ले।

वह लड़कियां ही अपना नाम रोशन करेगी इस पर भरोसा रखिए और उन्हें अपनी संस्कृति के बारे में बचपन से ही बताइए कि हमारे इतिहास में कैसी-कैसी वीरांगनाओं ने जन्म लेकर हमारे देश के गौरव को बढ़ाया है।

अपने अपने बच्चों को सही मार्ग उनके माता-पिता ही दिखलाते हैं और सबसे ज्यादा यह उत्तरदायित्व मां का होता है वह अपनी बेटियों को सही मार्ग दिखाकर उन्हें इस लायक बनाए कि वह सिर्फ उनका ही नहीं, बल्कि हमारे देश का भी नाम रोशन करें।





# एक छोटा बच्चा



**श्री उदय भान विश्वकर्मा**  
कनिष्ठ अनुवादक

एक दिन मैं यून ही बगीचे की तरफ जा रहा था। अचानक मेरी नज़र एक छोटे बच्चे पर पड़ी जिसके तन पर कपड़ों का अभाव था। वह अपने चेहरे पर मुस्कान लिए एकटक मेरी तरफ देख रहा था। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि उसकी नज़रें मुझसे कुछ उम्मीद लगायी हुई हैं। कुपोषण क्या होता है मुझे उस दिन आभास हुआ। उसके गाल धँसे हुए थे और आँखें अंदर से झाँक रही थी। मुझसे रहा नहीं गया पूछ ही लिया क्या नाम है? ह...ह...ह...हर... हरी। हकलाते हुए वह बोला। वह आसानी से नहीं बोल पा रहा था। कुछ भी कहने के लिए उसे बहुत कोशिश करना पड़ रहा था। मुझे अब उस पर और तरस आने लगा। ऐसा लग रहा था कि वह कई दिनों से भूखा है। मैंने पूछा यहाँ क्यों बैठे हो? तुम्हारे माता-पिता कहाँ हैं? यह सुनते ही उसके आँखों में आँसू भर गया। पता चला मैं जन्म देते समय दुनिया छोड़ गयी

थी और पिता दो वर्ष पहले स्वर्गवासी हो चले थे।

ऐसा लग रहा था मानो वह अंदर से टूट गया हो। लेकिन, सबसे अच्छी बात यह थी कि उसके चेहरे पर अब भी मुस्कान थी। एक आठ साल का बच्चा कर भी क्या सकता था जो इस मतलबी दुनिया में अकेला हो। वह जैसे-तैसे दिन काट रहा था। मैंने तय किया कि उसकी सहायता करूँगा। उसको एक बच्चों की देख-रेख करने वाली एन.जी.ओ. को सौंप दिया। मैं अक्सर वहाँ जा कर उसकी खबर लेता था। धीरे-धीरे वह सामान्य बच्चों जैसा हो गया। स्वास्थ्य अच्छा हो गया। साथ ही पढ़ने और खेलने लगा।

कुछ समय बाद मैं नौकरी करने के लिए दूसरे शहर चला गया। लेकिन, मैं कभी-कभी उससे फोन पर बात कर लेता

था। जीवन की इस आपाधापी में, व्यस्तता मुझे जकड़ती गई और फोन से संपर्क भी धीरे-धीरे टूट गया। मैं अपने जीवन में पूरी तरह व्यस्त हो गया। रोज़ ऑफिस जाना और वहाँ से आने के बाद परिवार और दोस्तों के साथ समय बिताना। यही मेरी रोज़मर्रा की जीवन हो गई।

गांधी जी ने कहा है कि मन एक अशांत पक्षी के समान होता है जो हमेशा विचरण करता रहता है। बचपन से ही मन में था कि एक दिन मुंबई घूमना है। मैंने इस माया नगरी के बारे में बहुत कुछ सुना था। लेकिन जीवन ने मुझे कुछ यूँ उलझा रखा था कि सुलझने का समय ही नहीं मिल रहा था।

एक दिन ऑफिस से थका-हारा घर आया। कपड़े बदला और हाथ-पैर धो कर आराम करने लगा। कुछ समय बाद फोन बजा, देखा तो स्क्रीन पर राजू लिखा था। मेरा मित्र जो कुछ वर्ष पहले जॉब की तलाश में मुंबई गया था और वही रहने लगा। काफी लंबे समय तक बात हुई। हमलोग एक दूसरे का सुख-दुख सुने। बातों-बातों में उसने बोला आओ कभी हमारे यहाँ भी घूम लो। मैं कुछ समय सोचने के बाद बोला ठीक है। मैंने इस बार मन बना लिया माया नगरी घूमने का। अगले दिन मैं टिकट कराया। टिकट कन्फर्म नहीं मिला। खैर, मैंने मन बना लिया था इसलिए इसपर ज्यादा ध्यान नहीं दिया।







आखिर वो दिन आ ही गया और मैं अपने सपनों के शहर के लिए रवाना हो गया। दिन तो अच्छे से गुजरा, पर रात्री के समय सीट पर बैठना भी मुश्किल था क्योंकि सबलोग अपनी-अपनी सीट पर सो रहे थे। अब मुझे लग रहा था टिकट कन्फर्म हो तभी रात्री यात्रा करना चाहिए। अधिकतर लाइटें बंद कर दी गई थी। ट्रेन अपनी गति में चल रही थी। मैं भी एक तरफ

सहारा लेकर खड़ा हो गया था।

मध्य रात्री हो चुकी थी। मेरे लाख मना करने के बावजूद भी नींद मुझे गले लगा रही थी। आँखें मानो ऐसा कह रही थी कि अभी हमें आराम करने दो। तभी पीछे से आवाज आई। देखा तो एक लम्बे कद का व्यक्ति, काले शूट-बूट में टिकट चेक कर रहा था। रोशनी के अभाव में चेहरा साफ नहीं दिख रहा था। मैं भी अपना टिकट तैयार कर लिया। बोला क्यूँ खड़े हैं दादा? टिकट नहीं है क्या? मैं टिकट दे दिया। देख कर बोला अच्छा तो कन्फर्म नहीं है। कब तक खड़े रहिएगा। कहाँ जाना है? यह कहकर वह मेरी तरफ एकटक देखने लगा। वह कम रोशनी में ही मुझे पहचान गया। लाइट ऑन करके बोला मैं हरी, दादा। पहचाना मुझे। बस इतना कहकर वह रोने लगा। रोते-रोते बोला आज मेरे भगवान मुझे मिल गए। मेरा भी गला

रूँध गया। कुछ भी कहने में असमर्थ था। आँखों से केवल आँसू आ रहे थे। अपने आप को संभाल कर बोला, तू तो बहुत बड़ा हो गया रे हरी। कैसा है? बस आपका आशीर्वाद है जो आज यहाँ लाया है। आप कैसे हैं! घर पर सब लोग कैसे हैं। सब ठीक हैं। मैं भी ठीक हूँ। बस मुंबई घूमने की इच्छा थी तो चल पड़ा। हाथ पकड़ कर एक सीट पर ले जाकर बोला दादा यहाँ बैठिए। अब आपको कोई परेशानी नहीं होगी। हमलोग पूरी रात खूब बात किए, वर्षों बाद जो मिले थे। समय कब बिता पता ही नहीं चला। ट्रेन मुंबई पहुँच गई। हरी, मुझे राजू के निवास स्थान तक छोड़ने गया। मेरे कई बार मना करने के बाद भी उसने खूब सारा खाने-पीने का सामान खरीद दिया। कुछ पैसे दे दिया। मैंने बोला हरी क्या ये सब बहुत जरूरी है? बोला, दादा ये मेरा कर्तव्य है। आप हमेशा खुश रहें।

## सीख

हम अपनी जीवन में जो कुछ भी करते हैं उसका फल हमें यहीं मिलता है। स्वर्ग यहीं है और नर्क भी यहीं है।





**एक भक्त की ललकार**  
**ए खुदा, तेरी खुदाई मुझे पसंद नहीं**

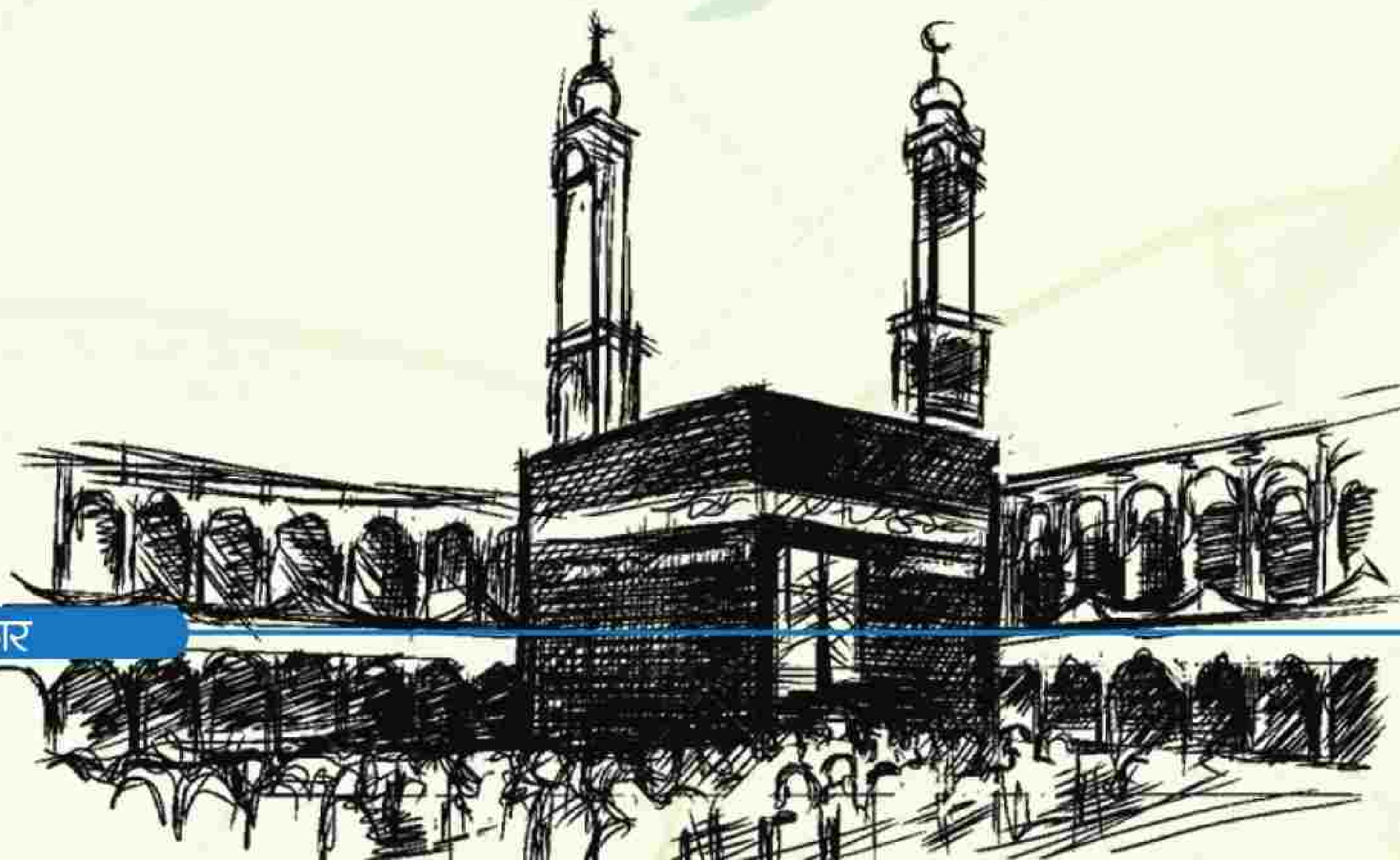
ए खुदा, तेरी खुदाई मुझे पसंद नहीं,  
मैं क्या, मेरे जैसे असंख्यों को नहीं,  
हाँ, इने गिने को है और रहेगा,  
जो तेरे चमचे हैं, कृपापायी हैं,  
सुनते हैं- तुम सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान हो,  
तब सर्वव्यापी के मन में यह खोंट क्यों ?  
क्या यह आदर्श है, पथ-प्रदर्शक का कृत्य ?  
क्यों तेरी नियत हुई खोंटी और मन में है खोंट ?  
तेरी ही रेखाचित्र की कई लकीरें जगमगाती हैं,  
और कोई स्पष्ट नजर ही नहीं आती,



**श्री राजेश कुमार बाजपेयी**  
लेखाकार

क्या यही उचित न्याय है, परवर दिगार की अदालत का ?

अपनी सफाई में अगर तुम न्यायी हो,  
तो बचा लो मुझे तुम, मेरी माँ के चिर विलगाव से,  
दिखा दो, मृत्युभूमि से दुख को हटाकर,  
मिटा दो फिर खाइयाँ, सुख से पटाकर,  
भर दो वह प्रेरणा, जन-जन के मन में,  
मस्ती में जिये जीव तेरा ही होकर ।





घोड़ा कटोरा, राजगीर



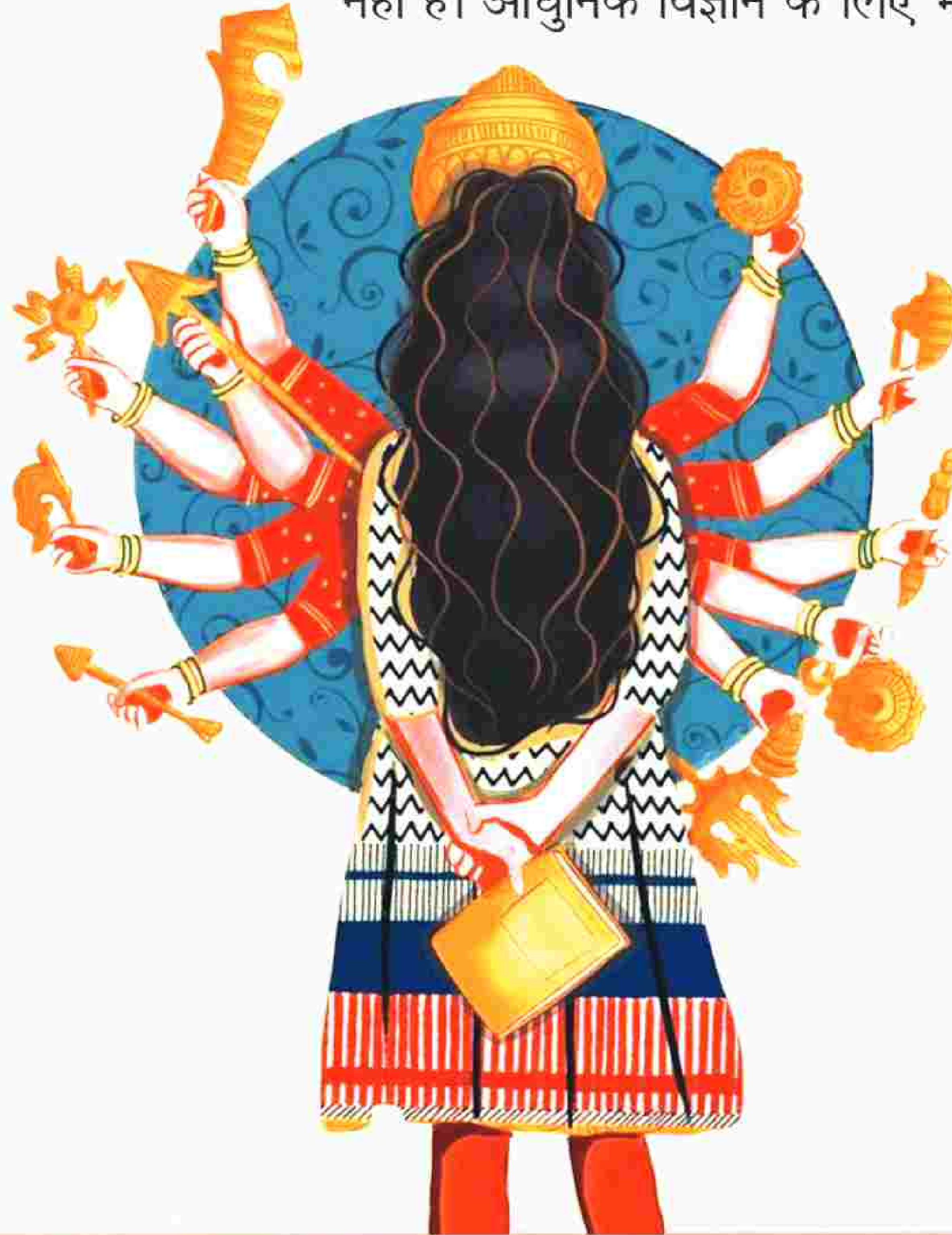


# सनातन बनाम धर्म-निरपेक्ष



**श्री उत्तम कुमार**  
वरिष्ठ लेखाकार

हमारा देश भारतवर्ष, जहां संसार की सबसे पुरानी संस्कृति आज भी विद्यमान है। वैदिक ग्रंथ के अनुसार सनातन धर्म की स्थापना किसी व्यक्ति विशेष द्वारा नहीं की गई है। सनातन धर्म ईश्वर के अस्तित्व के साथ संबंध रखती है। इसकी उम्र का पता लगाना ब्रह्मांड के अंतिम छोर का पता लगाने के समान है, जिसका न प्रारम्भ है और न कोई अंत है। सनातन धर्म आदि और अनंत काल से चला आ रहा है, जो ईश्वर, तत्व और आत्मा को ध्यान से जानने तथा परमात्मा और मोक्ष को प्राप्त करने का मार्ग बताता है। सनातन धर्म के तत्व हैं- आकाश, वायु, जल, अग्नि और पृथ्वी है। ये पाँच तत्व जिन्हें हम देख सकते हैं, अनुभव कर सकते हैं और जिन्हें अभिभूत कर सकते हैं। यही शाश्वत सत्य है अर्थात् सनातन है। ये अपना रूप बदलते रहते हैं, किन्तु समाप्त नहीं होते हैं। यही सनातन सत्य है। भेद भाषाओं में होता है, अनुवादों में होता है, संस्कृतियों में होता है, सिद्धांतों में होता है। लेकिन, सत्य में नहीं होता है। इसलिए सनातन धर्म एकमात्र ऐसा धर्म है जिसका कोई विरोधाभास नहीं है। आधुनिक विज्ञान के लिए भी यह मार्ग दर्शक के रूप में कार्य करती



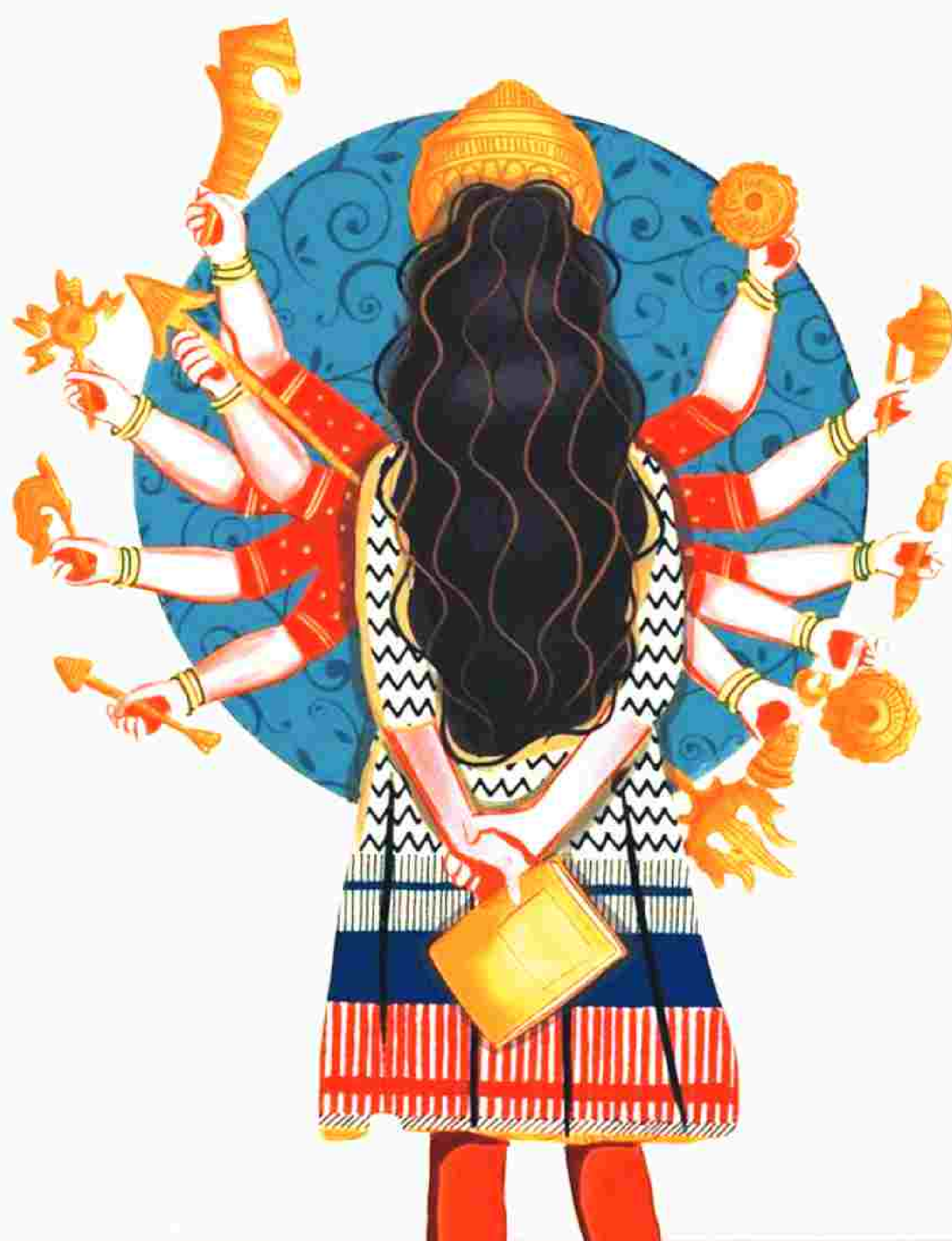


है। क्योंकि ये तार्किक है और तर्क पर आधारित है। हम भारतवासी इसी धर्म का अनुसरण करते हैं। एक ही धर्म है दुनिया में जिसमें नर से लेकर नारी तक, पेड़ से लेकर पर्वत तक, सूरज से लेकर चाँद तक और पशु से लेकर पंछी तक सभी पूजे जाते हैं। संक्षेप में कहें तो हम प्रकृति की भी पूजा करते हैं।

अपितु हमारे ऐसे महान देश में घटना भी बड़ी विचित्र हुई है, जिस देश की प्रजा प्रत्येक जीव पर दया का भाव रखती हो, अतिथि को देवता मानती हो, जहां शत्रुओं का भी आदर किया जाता हो। वहीं हमारे देश के नेता और बुद्धिजीवी हमें धर्म-निरपेक्षता का पाठ पढ़ाते हैं। हमारे पूर्वजों ने तो उन आक्रमणकारियों के वंशजों को भी आत्मसात किया है जिसने हमारे देश की संपत्ति, संस्कृति एवं असहाय नारियों की लाज लूटी, जिसने पूर्वकाल में इस देश में अनाचार किया था। फिर भी हमारा इतिहास रहा है, हमने कभी भी किसी देश पर आक्रमण नहीं किया है और न ही किसी देश पर बलपूर्वक आधिपत्य

स्थापित किया है। ऐसा नहीं है कि हममें शौर्य की कमी थी, बल्कि समस्त संसार हमारा परिवार है, ऐसी हमारी विचारधारा है। क्योंकि, हम मन, कर्म एवं वचन से सहिष्णु हैं और धर्म का पालन करते हैं। कालान्तर में हुए बाहरी आक्रमण, लोभ-लालच एवं आंतरिक वैमनस्य ने इस देश की संस्कृति को बहुत आघात पहुंचाया है, जिससे अन्य वैचारिक मतों के लोगों की संख्या बढ़ती गई। परिणामस्वरूप भारत देश के कई टुकड़े होते चले गये, जैसे- अफगानिस्तान, भूटान, म्यांमार, ईरान, मलेशिया, इंडोनेशिया, थाईलैंड, श्रीलंका, नेपाल, तिब्बत, पाकिस्तान इत्यादि। सबसे ताजा उदाहरण भारत से अलग हुए देश पाकिस्तान का है, जिसका जन्म आजाद भारत के बँटवारे के साथ हुआ है। कहने का तात्पर्य है यह है कि जब-जब भारत देश की संस्कृति पर आघात हुआ है, तब-तब इसके टुकड़े हुए हैं। चूंकि सनातन धर्म अपने आप में ही समावेशी है, जिसका धर्म से अन्यत्र कोई मतभेद नहीं है। जिस देश में कण-कण में ईश्वर को देखा जाता हो, ऐसे राष्ट्र को धर्मनिरपेक्ष की संज्ञा दिया जाना, यह हास्यास्पद है।

सत्यम् शिवम् सुंदरम् ।





# मातृभूमि के सपूत

आसमान भी रोया था  
धरती भी थर्रायी थी  
किसी को ना मालूम था यारों  
किस घड़ी मौत ये आई थी,

माँ का एक टक चेहरा था  
आंखों में बहते आंसू थे  
पुत्र थे उनके शहीद हुए  
जो मातृभूमि के नाते थे।

पत्नी का तिलछना-चिल्लाना  
सीने में तीर चुभता था  
एकमात्र सहारा था उनका  
वह भारत माता का बेटा था।

बेटे के सिर से हाथ गया  
चलना वह जिनसे सीखा था  
कंधों का भी अब राज गया  
वह बैठ जहां जग देखा था।

माँ की सूनी गोद हुई  
पत्नी का भी सिंदूर मिटा  
पिता के दिल में आह उठी  
पुत्र का हाथ भी छूट गया।

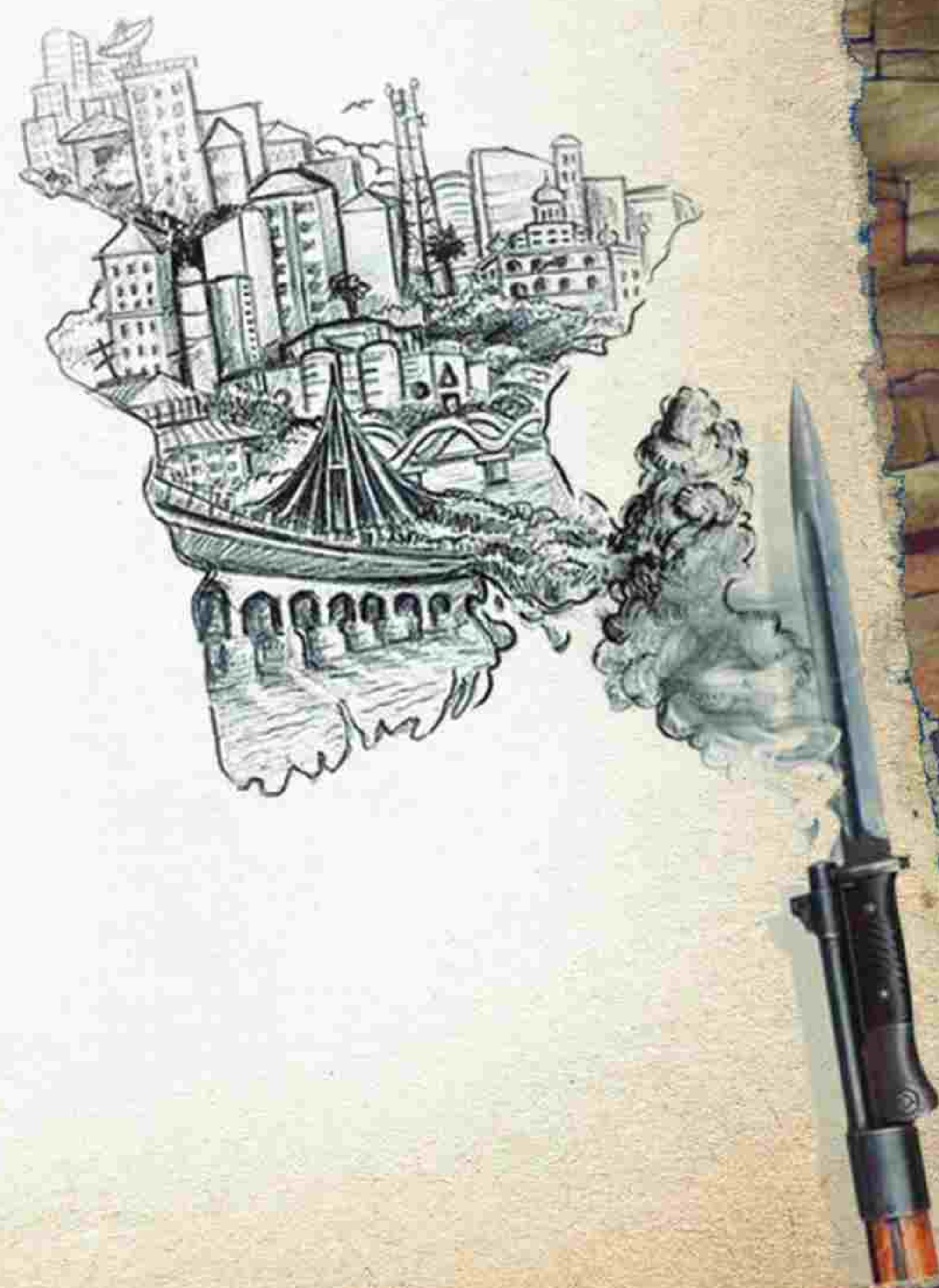
गर्व है इन परिवारों को  
अपनी उन संतानों पर  
मातृभूमि के लिए समर्पित  
हुए वीर बलिदानों पर,

नेताओं क्यों बैठे हो  
बदला लो गद्दारों से  
गर खून में गर्मी बाकी है  
सर बिछा दो तुम तलवारों से।

बदला ले इस बार का तुम  
उन वीरों का सम्मान रखो  
माता-पिता और पुत्र के सर  
मातृत्व का ताज रखो।



श्री मनीष कुमार-IV  
लेखाकार





# जनरल कम्पटीशन



**श्री मुरली मनोहर झा**  
सहायक लेखा अधिकारी

गो ले भरने के लिए कलम को शर्ट की जेब में रखा और प्रवेश पत्र को पैंट की पिछली जेब में संभाल के रखा और अन्य सामग्रियों को अन्य मित्रों के बैग में डाल दिया। मित्रों के सहयोग से बना नाश्ता लेकर सभी चल पड़े। यह दृश्य है आज से लगभग एक दशक पहले का, जब गांव के युवा अभ्यर्थी रेलवे की भर्ती परीक्षाओं में अपना-अपना भाग्य आजमाने के लिए हजारों कोस की यात्रा पर घर से निकलते थे।

बेरोजगार युवा बांधे गए नाश्ता पानी को अपने बैग में लेते और साथ में इमरजेंसी के लिए कुछ बिस्किट, नमकीन भी रख लेते थे। रास्ते में रिवीजन करने के लिए कुछ किताब और गमछा को गर्दन में लपेटना शायद ही कोई मित्र भूलता था। बैग को पीठ पर लादकर एवं भावनाओं को साथ लेकर युद्ध भूमि की ओर निकल पड़े थे। लॉज (रूम) से बाहर

निकलते ही हम लोग की परीक्षा और आरंभ हो जाती थी, क्योंकि परीक्षा का अर्थ केवल प्रश्न पत्र में पूछे गए सवालों का हल करना ही नहीं होता है, परीक्षा की परिभाषा बहुत व्यापक है।

रेलवे स्टेशन की ओर जाने वाली लोकल बस, टाटा मैजिक अथवा जुगाड़ा से जैसे तैसे लटककर स्टेशन पहुंचते थे। 5 किलोमीटर तक भी दूरी तो 11 नंबर की गाड़ी (पैदल) से पहुंच जाते थे।

खटखट करती हुई रेलगाड़ी जब प्लेटफार्म पर आती तो पहले से आ रही भीड़ को देखकर हाथ पैर कांपने लगते थे। किसी तरह से बस रेलगाड़ी में चढ़ जाते थे। बैठने के लिए सीट मिलने की संभावना ना के बराबर होती थी, यदि खड़े होने के लिए ठीक से जगह मिल जाती तो स्वयं को भाग्यशाली समझते थे।





मुंबई, बेंगलोर, भुवनेश्वर, सिकंदराबाद, इलाहाबाद, पटना, कोलकाता, चेन्नई, त्रिवेंद्रम जैसे सुदूर परीक्षा केंद्रों तक पहुंचने के लिए 1 से 3 दिन की रेल यात्रा करनी पड़ती थी। भूख-प्यास से बेहाल हो जाते थे, कई स्टेशन पर ट्रेन रुकते ही पानी की नल की तरफ झपटते थे, कई युवा तो सिर्फ

इसलिए नहीं उतरते थे कि कहीं ट्रेन न छूट जाए। किसी भाग्यशाली को सीट मिल जाती है वह लघुशंका रोक कर चुपचाप बैठा रहता था। गंतव्य स्थान पर पहुंचने के पश्चात अगले दिन परीक्षा केंद्र पर सवालों को हल करने के लिए पर्याप्त नींद की आवश्यकता महसूस होती थी।

खुले आसमान के नीचे सोने वाले युवा स्टेशन के बाहरी हिस्से में फर्श पर पेपर बिछाकर और चप्पल एवं बैग को तकिया बना कर सो जाते थे। अगले दिन प्लेटफार्म पर लगे नल या गंदी पटरियों के पास लगी हुई पानी की पाइप से नहाते थे।

परीक्षा भवन के अंदर की परीक्षा के मुकाबले वहां तक पहुंचने की परीक्षा कई गुना अधिक कठिन होता था। वर्षों की कठिन मेहनत, माता-पिता का परिश्रम गिरवी रखे हुए खेत एवं आभूषण और बुजुर्गों की उम्मीदों पर खरे उतरने का दबाव हुआ करता था। आज मेरे और हमारे कई मित्र भारतीय रेल में एवं अन्य विभागों में महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां निभा रहे हैं।

अंत में मनोज तिवारी की एक गीत कभी कभार स्मरित होती है, एम0 ए0 मे लेके एडमिशन, बबुआ कंपटीशन देता, पाठक से अनुरोध है कि इस कहानी को पढ़ने के बाद संगीत का आनंद लें।





## गांधी सेतू





# बिहार में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग की संभावनाएं



**सुश्री प्रिति कुमारी**  
बहन -श्री धीरज कुमार  
वरिष्ठ लेखाकार

हमारा राज्य- बिहार एक कृषि प्रधान राज है। जनगणना रिपोर्ट हमें बताता है कि यहां की लगभग 89 प्रतिशत जनसंख्या गांव में निवास करती है। अतः यह कहना है कि पर्याप्त नहीं होगा कि बिहार एक ग्राम प्रधान राज्य है। लिहाजा, यहां के लोगों को आजीविका का मुख्य साधन कृषि तथा उससे संबंधित व्यवसाय या उद्योग ही होंगे। खदानों के मामले में बिहार के आकड़े बताते हैं की खदानों के उत्पादन इसकी जनसंख्या की आवश्यकता की पूर्ति हेतु कम हो जाता है। ऐसी स्थिति में जीवन-यापन को चलाने के लिए अन्य व्यवसाय एवं उद्योगों का सहारा लेना आवश्यक यहां पर जान पड़ता है।

आज बिहार में जिन नए उद्योगों का विकास तीव्र गति से संभव है, वह कृषि आधारित

प्रसंस्करण उद्योग है। यह उद्योग आधुनिक खाद तकनीक की मदद से कृषि के कच्चे माल को तैयार आहार अथवा डिब्बा बंद आहार के रूप में विभाजित करता है।

बाजारों में रंग-बिरंगे एवं आकर्षक पैकेटो, बोतलों तथा डिब्बो में उपलब्ध प्रसंकृत उत्पादों की सूची लंबी है। बिहार के खाद प्रसंस्करण उद्योग के परंपरागत उत्पादों में आटा, चावल, दाल, चीनी, बिस्किट, डबल रोटी, घी, पनीर आदि डेरी उत्पाद की गणना की जाती है। खाद प्रसंस्करण उद्योग की विशेषता यह है कि इसमें समाज की खाद्य, खाद्य अभिरुचि में पैदा हुए परिवर्तनों से उत्पन्न नहीं-नई मांगों की आपूर्ति हेतु अपने उत्पादों की शृंखला में निरंतर नई मर्दों को सम्मिलित किया है। इस दृष्टि से इस उद्योग के





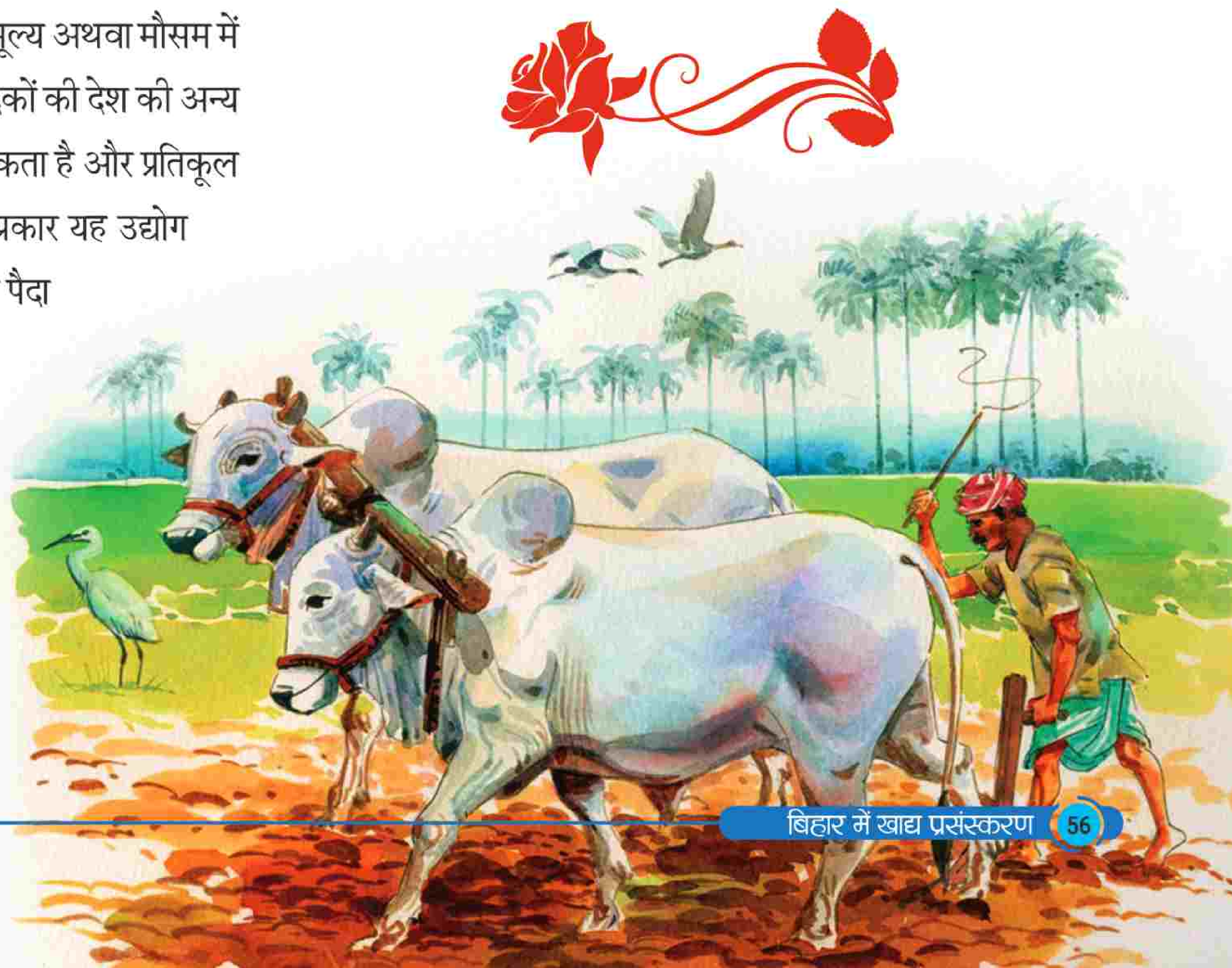
नए लोकप्रिय उत्पाद हैं, पर फल, सब्जी, कॉर्न, फ्लोर, अचार, सोयाबीन, सोया पनीर, पिसे मसाले, शाकाहारी धुप, बेकिंग पाउडर, कस्टर्ड पाउडर, पोटैटो चिप्स एवं विभिन्न चटनियों के साथ-साथ आइसक्रीम भी। यह अनुमान लगाना कठिन नहीं है कि आने वाले समय में इस सूची में अन्य अनेक उत्पादों की सम्मिलित होने की पूरी संभावना है।

इन उद्योग के उत्पादों की लोकप्रियता का प्रमुख कारण इन उत्पादों की अपनी विशिष्ट उपयोगिता है। ये उत्पाद मंत्र विशेष प्रकार की भोजन अभिरुचि की मांग की पूर्ति ही नहीं करते, अपितु समय, धन व स्वास्थ्य की कसौटी पर भी वे पूरे पूरे खड़े उतरते हैं। अत्यंत व्यस्त माहौल में रहने वाले सभी लोगों ने इस उत्पादन/उत्पादों को समय एवं धन की दृष्टि से अपने अनुकूल पाया है। कामकाजी महिलाओं की निरंतर बढ़ती संख्या ने रसोई घर की व्यवस्था से छुटकारे के रूप में इन एवोकाडो का सहारा है और इसी प्रकार अपने मूल स्थान से दूर शहरों में अकेले रहने वाले पुरुषों ने भी इन उत्पादों को अत्यंत अत्यंत सुविधाजनक पाया है। वैज्ञानिक विधि से तैयार किए जाने के कारण ये उत्पादन सामान्य कीटों के प्रकोप से सुरक्षित रहते ही हैं, इनके प्राकृतिक विटामिन व प्रोटीन भी बने रहते हैं।

अपनी विशिष्ट उपयोगिता के कारण इस उद्योग को बिहार के जनसंख्या के एक बड़े भाग को संरक्षण प्राप्त हुआ है, जिसके फल स्वरूप इसके उत्पाद की बिक्री और संबद्ध इकाइयों के लाभ में भी विधि हुई है। यह उद्योग बिहार के ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास में भी सहयोगी है। इस उद्योग ने विभिन्न फलों, सब्जियों आदि के ग्रामीण उत्पादकों को अनेक उत्पादों की लाभ की संभावनाओं को बढ़ाया है। इस उद्योग के विकास में यह आशा जगी है कि अब खेती में बड़ी फसल कम मूल्य अथवा मौसम में बदलाव के कारण नष्ट नहीं होगी। कृषि जनित उत्पादकों की देश की अन्य भागों में प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों के रूप में भेजा जा सकता है और प्रतिकूल मौसम में उन्हें संग्रहीत भी किया जा सकता है इस प्रकार यह उद्योग बिहार के ग्रामीण क्षेत्र में रोजगार के नए अवसरों को पैदा करने में और इस क्षेत्र में जुड़े लोगों की कार्य शक्ति बढ़ाने में सहयोगी सिद्ध होगा। यहां उल्लेखनीय है कि इस उद्योग के संगठन एवं असंगठित क्षेत्र में शहरों में भी प्रत्यक्ष प्रत्यक्ष और प्रत्येक रोजगार के अवसरों में वृद्धि की है इस प्रकार खाद्य प्रसंकरण उद्योग बिहार की संपूर्ण अर्थव्यवस्था के लिए अनुपूरक से

साथ ही उत्प्रेरक कारण की भी भूमिका निर्वहन करता है।

यह आश्चर्यजनक नहीं है कि बिहार में अर्थव्यवस्था के विकास में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग की अहम भूमिका को ध्यान में रखते हुए वर्तमान राज्य सरकार इस औद्योगिक प्रति अत्यंत उदार नीति अपनाना उचित है। उद्योगों की तुलना में कम लागत में स्थापित होने वाले इस उद्योग के विकास का अर्थ है बिहार की ग्रामीण अर्थव्यवस्था को संरक्षण एवं प्रोत्साहन देना, गांव से शहरों की ओर पलायन रोकना, रोजगार की अवसरों को पैदा करना, राज के बाहरी मुद्रा का अर्जन आदि। राज सरकार की ओर से इस उद्योग के विकास एवं संवर्धन हेतु आवश्यक कदम उठाये जा रहे हैं। यद्यपि अभी तक इस उद्योग की विकास की दर प्रसंशनीय नहीं है। इस उद्योग की अपनी कुछ आधारभूत समस्याएं भी हैं, जिनके शीघ्र निराकरण की आवश्यकता है। अभी भी इस उद्योग की उत्पादन लागत की दर उचित है। आम बिहारी की क्रय शक्ति सीमित होने के कारण इस उद्योग की उत्पादन शहरों के उच्च वर्ग एवं उच्च मध्यम वर्ग के तक ही लोकप्रिय हो पाये हैं। खाद्य प्रसंस्करण उद्योग की नई इकाइयों की स्थापना एवं असंगठित क्षेत्र की है इकाइयों को उचित प्रोत्साहन देकर इसके बाजार को छोटे व ग्रामों तक विस्तृत किया जाने की आवश्यकता है। इस दृष्टि से इस उद्योग के लिए विदेशी तकनीक मदद से ज्यादा महत्वपूर्ण है। स्वदेशी तकनीक का विकास करना। प्रसंस्कृत खाद्य-पदार्थ के उचित संग्रहण के लिए आधुनिक भंडारण-व्यवस्था के महत्व को स्वीकारना होगा यही अपेक्षा करना भी अनुचित न होगा की राज्य सरकार इस उद्योग के प्रसंस्करण प्रोत्साहन एवं विकाश के लिए इन समस्याओं के समाधान की ओर भी समुचित ध्यान देगी।





# नारी

नारी! तू प्रकृति की सर्वोत्तम रचना,  
देवता भी करते तेरी सदैव वंदना ।  
पीयूष स्रोत-सी बहा करो इस धरा पर,  
जीवन के सुगम-दुर्गम दोनों ही राहों पर ।  
तुझमें समाया जीवन का समग्र,  
हर कार्य में रह तू सदैव अग्र ।  
न जकड़ों स्वयं को आभूषणों की बेड़ियों से,  
ग्रहण करो ज्ञान के प्रकाश को अन्तर्मन से ।  
अबला नहीं, तू ही तो सबको देती आई संबल,  
तुझमें है अदम्य साहस व अदभूत बल ।  
तू है ममता की वो असीम मूर्त,  
करती रहती जो सेवा बिना शर्त ।  
माँ रूप में सदैव से पूजनीय,  
पत्नी बन करती कार्य सराहनीय ।  
हर युग में बहन रूप तेरा वंदनीय,  
बेटी रूप है घर-घर शोभनीय ।  
हर रूप नारी! तेरा अद्वितीय,  
सदैव-सदैव से ही प्रशंसनीय ।  
दुर्गा, सरस्वती व लक्ष्मी रूप में वंदित,  
युगों से करती आ रही “तू” आनंदित ।



**श्रीमती प्रतिमा कुमारी**  
सहायक पर्यवेक्षक







# बनो तो ऐसा

## रतन टाटा जैसा



**श्रीमती सोनी कुमारी**  
पति श्री सन्नी कुमार  
कनिष्ठ अनुवादक

आज मैं एक ऐसे बिजनेसमैन के बारे में बताना चाहती हूँ जिनको हर आयु वर्ग के लोग गुण गाते हैं। या फिर बूढ़े आयु, मध्य आयु, या फिर युवा क्यों ना हो उनका सम्मान सभी करते हैं, उनकी तरह बनना चाहते हैं। आज मैं उनकी जिंदगी की कुछ अनसुनी बातों के बारे में बताने जा रही हूँ।

हम बात कर रहे हैं रतन टाटा की जिन्हें प्रतिस्पर्धी भी पैर छूकर इनका सम्मान करते हैं। ऐसे हैं, हम सभी के रतन टाटा। रतन टाटा ने अपनी असफलता को सफलता में

बदला। टाटा फर्म अपनी कमाई का 66% दान में देता है। इसलिए तो उन्हें लोकोपकारक भी कहा जाता है। इन्हें प्यार तो हुआ लेकिन किस्मत ने साथ नहीं दिया और शादी नहीं हो पाई। ये सोचते हैं, दिल से बिजनेस करते हैं और दिमाग से चलते हैं इसलिए तो ये इतने प्रसिद्ध हुए हैं। इन्होंने अपने समय आय को 40 गुणा और लाभ को 50 गुणा बनाया।

आप सभी को उनकी जिंदगी के बारे में थोड़ा बहुत अनुभव मिल गया होगा। अब मैं आपको उनके जीवन की हर बात बताने जा



रही हूँ। आप सभी कहानी के अंत तक बने रहेंगे न। टाटा ग्रुप एक भारतीय वैश्विक संगठन है। इसका मुख्यालय मुंबई में है। इसकी स्थापना 1868 में जमशेदजी टाटा द्वारा किया गया था। रतन टाटा जी का जन्म 28, दिसंबर 1937 को मुंबई हुआ था। इनके पिता का नाम नबल टाटा और माता का नाम सुनी टाटा था। इनका बचपन बहुत मुश्किल में बिता था। क्योंकि जब वे 10 साल के थे इनके माता और पिता अलग हो गए थे। और इनका लालन-पालन इनकी दादी जी जिनका नाम नवाजबाई टाटा था उन्होंने किया था। 1962 में रतन टाटा जी को एक कॉल आता है। उनको पता चलता है कि उनकी दादी जी की तबीयत खराब हो गई है। उनको भारत आना होगा। क्योंकि रतन टाटा जी को अपनी दादी से बहुत प्रेम था। इसलिए वह भारत आना भी चाहते थे। उस समय वह एक अच्छी नौकरी कर रहे थे उनके पास खुद का कार था और वे एक आत्म-निर्भर व्यक्ति थे। और उसी समय उनको एक लड़की से प्यार हो जाता है। वह लड़की भी उनको पसंद करती थी। दोनों एक दूसरे से वादा करते हैं कि वह शादी करेंगे। लेकिन उस समय भारत-चीन युद्ध हो रहा था। वो लड़की उनके साथ नहीं जाती है। फिर कुछ समय बाद जब रतन टाटा जी कॉल करते हैं तो उनको पता चलता है कि उस लड़की के माता-पिता ने किसी और से शादी करा दिए हैं। माता-पिता नहीं चाहते थे कि वे अपनी बेटी को भारत जाने दें क्योंकि उस समय भारत-चीन युद्ध हो रहा था। रतन टाटा जी हमेशा अपने शब्दों पर टिके रहते थे जो बोलते हैं वही चीज वो करते भी। उन्होंने कभी शादी नहीं किया क्योंकि उन्होंने वादा किया था कि वह उसी से शादी करेंगे। फिर रतन टाटा जी “टाटा ग्रुप” में एक कार्यकर्ता के रूप में शामिल हुए।

1991 में रतन टाटा जी टाटा उद्योग के अध्यक्ष के पद को संभालने के लिए आए। अध्यक्षता तो उन्हें मिल गई लेकिन उनकी जिंदगी

में बहुत सारे संकट आने वाले थे। रतन टाटा ने कंपनी में कुछ बदलाव लेकर आए लेकिन कंपनी के ऊपर बैठने वाले लोगों को यह बदलाव पसंद नहीं आ रहा था। रतन टाटा ने अधिक आयु के लोगों को हटाना शुरू कर दिया उनकी जगह युवा लोगों को शामिल करने लगे और जो कंपनी नहीं चल रही थी उसे बंद कर दिया जो चल रही थी उसमें नवाचार लेकर आए ताकि कंपनी और ज्यादा आगे बढ़ सके। रतन टाटा कहते हैं कि यदि आप पर पत्थर फेंके जाएँ तो उसका ऐसा उपयोग करें कि आप उससे एक स्मारक बना डालें।

21 साल की अध्यक्षता में रतन टाटा जी ने बड़े-बड़े कंपनियों का अधिग्रहण किया। जैसे कि टाटा चाय ने टेटली कंपनी का अधिग्रहण किया, टाटा मोटर्स ने लैंड रोवर और जैगुआर का अधिग्रहण किया तथा टाटा स्टील ने कोरस स्टील कंपनी का अधिग्रहण किया।





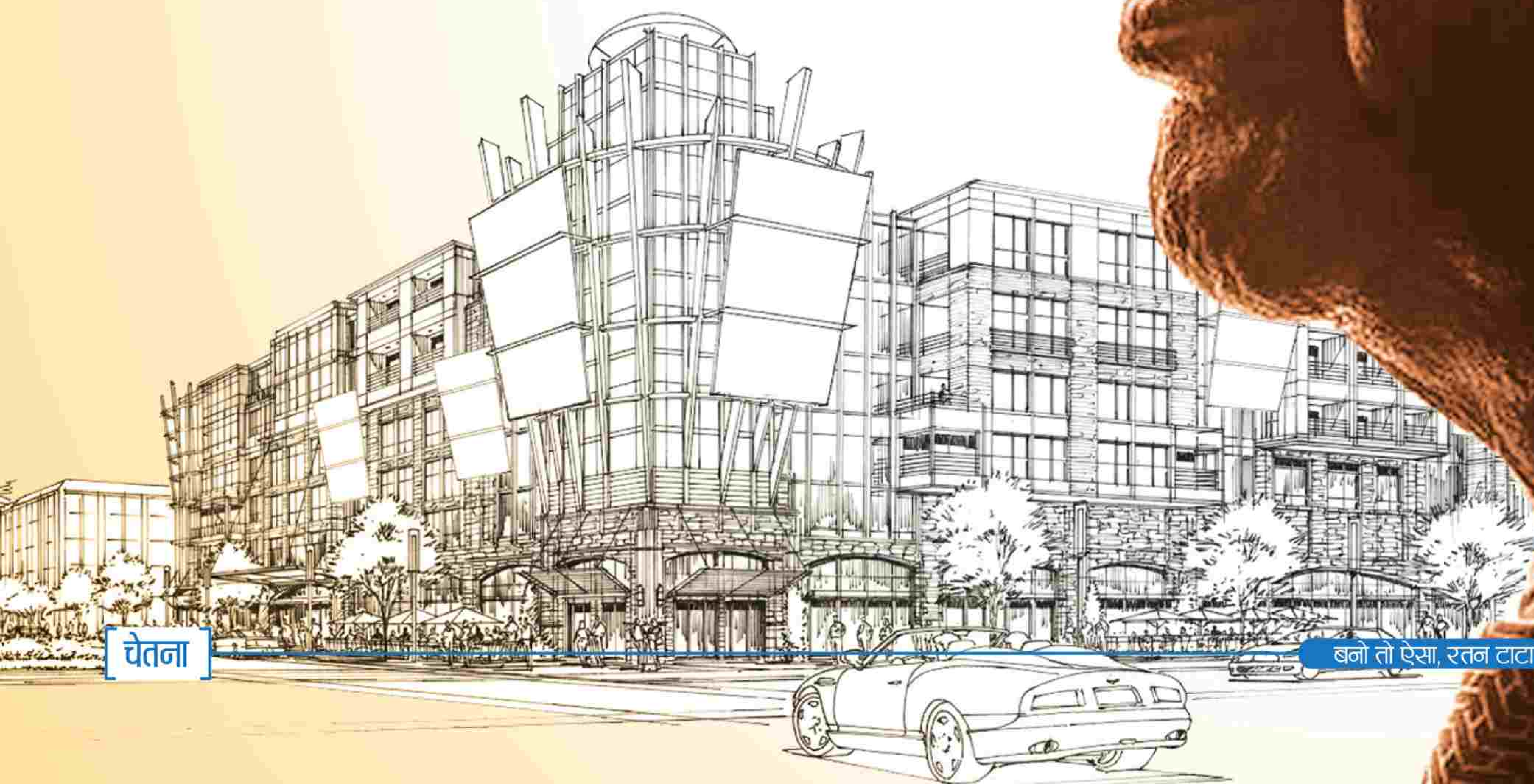
2000 में रतन टाटा जी को पद्म भूषण और 2008 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया। सफलता तो रतन टाटा जी को खूब मिला लेकिन जहां सफलता आती है, वहाँ जोखिम और असफलता भी साथ चलते हैं। तो जानते हैं किस तरह से जोखिम और असफलता को रतन टाटा जी ने संभाला।

टाटा मोटर्स ने कार बनाने का फैसला किया। उन्होंने टाटा इंडिका को बाजार में उतारा लेकिन लोग टाटा इंडिका को उतना पसंद नहीं किए। लेकिन टाटा इंडिका भारत की एक ए.सी. कार थी जोकि भारतीय कंपनी द्वारा निर्मित पहली ए.सी. कार थी। रतन टाटा इस कार को बेचने का मन बना लेते हैं। वे फोर्ड मोटर्स के चेयरमैन बिल फोर्ड के पास जाते हैं ताकि वे इस कार को बेच सकें। परंतु बिल फोर्ड ने कार खरीदने से इंकार कर देते हैं साथ ही साथ रतन टाटा को खड़ी खोटी भी सुनाते हैं। बिल फोर्ड बोलते हैं कि जब

कार बनाने का अनुभव नहीं था तो कार बेचने के लिए क्यों निकल गए। यह सब सुनकर रतन टाटा को बहुत दुख हुआ था।

2008 में फोर्ड मोटर्स की हालत खराब हो जाती है। क्योंकि 2008 में बड़े पैमाने पर मंदी आ गई थी। उस मंदी में बड़े-बड़े कंपनियाँ ध्वस्त हो रही थी जिसमें फोर्ड मोटर्स भी शामिल था। बिल फोर्ड रतन टाटा जी के पास आते हैं और बोलते हैं यह कंपनी आप खरीद कर हम पर उपकार कर दीजिये। और इस प्रकार रतन टाटा जी ने लैंड रोवर और जगुआर का अधिग्रहण किया। यहां उन्होंने अपमान को सफलता में बदलकर दिखाया।

टाटा नैनो कार तो आप सभी ने नाम सुना होगा। रतन टाटा जी ने कम दाम के कार बनाने का फैसला लिया। और उन्होंने बनाया भी लेकिन बाजार में लोग उसे पसंद नहीं किए और वह असफल हो जाते हैं। उनका करोड़ों का नुकसान भी होता है।





लेकिन इस असफलता से रतन टाटा जी ने एक बात सीखी “असफलता कंपनी के लिए सोने की खान है।” रतन टाटा जी द्वारा एक प्रतियोगिता शुरू किया गया। उन्होंने खराब व्यापार से संबंधित सुझाव मांगे। कोई भी व्यापार में कैसी पद्धति अपनाई जाए ताकि वो नीचे-स्तर का हो जाए। ऐसी प्रतियोगिता करवाकर उन्होंने मानो किसी भी व्यापार के नीचे गिरने का अनेक घटकों से अवगत हुए। ऐसी पद्धति से कैसे बचा जाए उनका निवारण भी उन्होंने शुरू कर दिया था।

एक बार की बात है। रतन टाटा जी से सवाल किया जाता है। आपको (बीएमडब्ल्यू) खरीदने में कितना समय लगेगा? रतन टाटा जी जवाब में देते हैं-5 साल। उनका जवाब सुनकर आदमी आश्चर्यचकित हो जाता है। फिर वह पूछता है आपके पास तो इतना सारा धन है तो आपको 5 साल कैसे लगेगा।

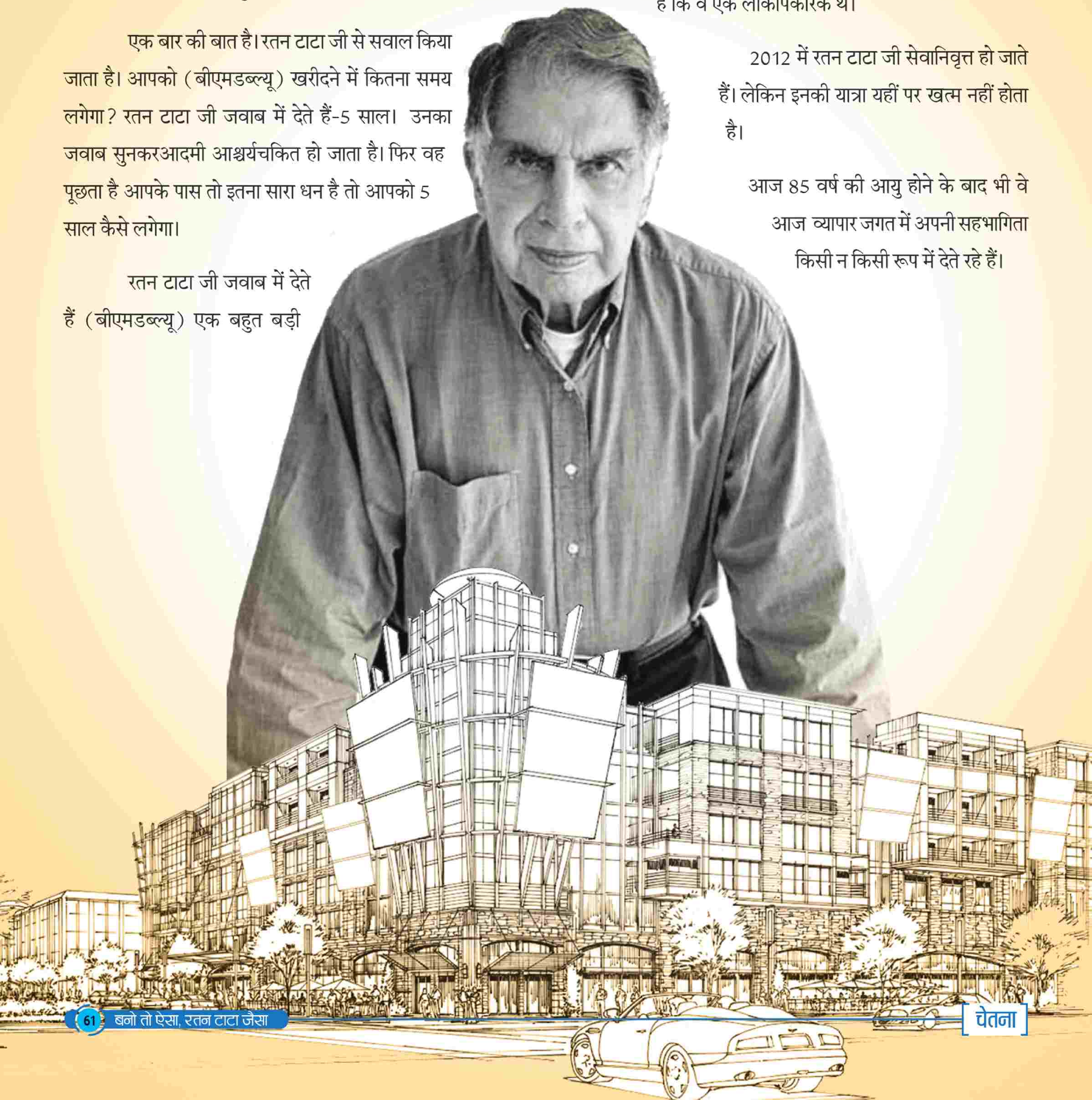
रतन टाटा जी जवाब में देते हैं (बीएमडब्ल्यू) एक बहुत बड़ी

कंपनी है उसे खरीदने में 5 साल तो लग जाएगा। जहां हम और आप एक कार के बारे में सोच रहे थे रतन टाटा जी पूरी कंपनी खरीदने के बारे में सोच रहे थे।

इतनी बड़ी सोच रखते हैं। रतन टाटा जी अपने जीवन में सफलता के साथ-साथ असफलता को भी चखा। टाटा कंपनी के व्यापार को एक ऊंचाई पर लेकर गए। उद्योग को बदल कर रख दिए। उसे भी बड़ी बात यह है कि वे एक लोकोपकारक थे।

2012 में रतन टाटा जी सेवानिवृत्त हो जाते हैं। लेकिन इनकी यात्रा यहीं पर खत्म नहीं होता है।

आज 85 वर्ष की आयु होने के बाद भी वे आज व्यापार जगत में अपनी सहभागिता किसी न किसी रूप में देते रहे हैं।





## नालंदा विश्वविद्यालय अवशेष





## संगति का असर



**श्रीमती हेमलता कुमारी**  
पति - श्री उत्तम कुमार  
वरिष्ठ लेखाकार



यह कहानी एक छोटे से शहर की है उस शहर में राम सागर जी अपने परिवार के साथ बड़े ही आनंद के साथ रहा करते थे। राम सागर जी के तीन बच्चे थे- दो लड़कियां और एक लड़का। लड़कियों का नाम- नैना और सुनैना था और उनके लड़के का नाम रोहन था। राम सागर जी अपने बच्चों और पत्नी के साथ बहुत ही खुशीपूर्वक रहते थे। उनके तीनों बच्चे पढ़ने में बहुत ही होशियार थे। राम सागर जी ने अपने घर के पास वाले स्कूल में ही उन तीनों का दाखिला करवाया था। पर, धीरे-धीरे सुनैना का बर्ताव बदलने लगा वह पढ़ने में अपना ध्यान न लगाकर खेलने-कूदने में अपना ज्यादा ध्यान लगाने लगी। लेकिन नैना पढ़ने में बहुत होशियार थी। नैना की सहेलियां भी पढ़ने में बहुत तेज थीं, लेकिन सुनैना की सहेलियां पढ़ने में बहुत कमजोर थी और सुनैना उन्हीं सहेलियों के साथ ही दिनभर खेलती कूदती रहती। यह सब देख कर नैना और राम सागर जी बहुत परेशान हो गए थे। सुनैना को नैना बहुत समझाती, लेकिन वह समझने का नाम नहीं ले रही थी।

एक दिन सुनैना की सहेलियों ने मेला देखने का प्लान बनाया और उन्होंने सुनैना को भी कहा कि वो भी मेला देखने चले, लेकिन सुनैना को पता था कि वो अपने घर पर पूछ कर जाएगी तो उसे जाने नहीं दिया जाएगा, क्योंकि राम सागर जी उसे जाने की कभी अनुमति नहीं देते तो उसने अपने घर में बिना किसी से पूछे मेला देखने के लिए अपनी सहमति दे दी।

उस दिन के बाद से सुनैना और उसकी सहेलियों का हमेशा घूमने-फिरने का प्लान बनता और सुनैना अपनी सहेलियों के घर का बहाना बनाकर घूमने-फिरने जाने लगी।



इस तरह समय बीतता रहा और स्कूल में परीक्षा का समय आ गया। नैना और रोहन ने तो अच्छी तैयारी करके परीक्षा दिये थे, लेकिन सुनैना ने अपना ध्यान पढ़ाई में लगाया ही नहीं था। इस कारण उसकी परीक्षा अच्छा नहीं जा रहा था। रिजल्ट का भी दिन आ गया।

राम सागर जी को स्कूल बुलाया गया। उन्होंने देखा कि हमेशा की तरह नैना और रोहन अपने क्लास में प्रथम आए हैं, लेकिन सुनैना फेल हो गई है। राम सागर जी को सुनैना के लिए बहुत बुरा लगा। लेकिन, फिर भी उन्होंने सुनैना को बड़े ही प्यार से समझाया।

सुनैना को अपनी गलती का एहसास हो गया था। उसे भी बहुत बुरा लग रहा था कि उसके दोनों भाई बहन अपने क्लास में प्रथम आए हैं और वह फेल हो गई थी। नैना और राम

सागर जी ने सुनैना को समझाया कि कोई बात नहीं तुम इस वर्ष अच्छे से मेहनत करना तो तुम ही प्रथम आओगी।

सुनैना ने पढ़ाई में फिर से मन लगाना शुरू कर दिया था और वह उन गंदी सहेलियों के साथ मिलना-जुलना भी बंद कर दिया था। वह बहुत मेहनत कर रही थी कि उसे प्रथम आना है।

ऐसे देखते-देखते समय बीतता गया और परीक्षा की घड़ी नजदीक आ गई। सुनैना ने भी अपनी मेहनत से अपने क्लास में ही नहीं बल्कि पूरे स्कूल में टॉप किया। यह सब देख कर राम सागर जी ने सुनैना को अपने गले से लगा लिया और कहा कि सुनैना, इसीलिए कहा जाता है कि अच्छे की संगति में अच्छा और बुरे की संगति में ही इंसान बुरा बनता है। हमारे यहां कहावत है कि 'संगत से गुण आत है और संगत से गुण जात'।







# पर्यावरण प्रदूषण



**आयुष राज**

पिता - श्री कृष्ण किशोर  
वरिष्ठ लेखाकार

पर्यावरण का मतलब यह है कि जो हमें चारों ओर से घेरा हुआ है। यह पृथ्वी का पर्यावरण ही है जो हमारे पृथ्वी को बाकी सारी ग्रहों से अलग करता है।

पृथ्वी का पर्यावरण पेड़, पौधे, मानव एवं बाँकि जीव जंतु के लिए प्राकृतिक रूप से अनुकूल है। मानव ने अपनी सुविधाओं के लिए अनेक प्रकार से इसके संतुलन के साथ खिलवाड़ किया है।

बढ़ती आबादी एवं औद्योगीकरण से आज पृथ्वी का बहुत बुरा हाल है। प्रदूषण को हम

लोग पाँच भाग में बाँट सकते हैं।

**वायु प्रदूषण-** हवा के प्रदूषण को ही वायु प्रदूषण कहते हैं। इसका मुख्य कारण वाहन, फैक्ट्री, कचरे को जलाना एवं निर्माण कार्य है। पिछले कुछ वर्षों से वायु प्रदूषण में वृद्धि हुई है। एक सर्वे के अनुसार 2022 में भारत में कुल 326.3 मिलियन चार पहिया वाहनों एवं 21 करोड़ बाइक है। ये संख्या वाहनों की संख्या होने वाले प्रदूषण को साफ़ रूप से जताती है एवं चिंता भी प्रकट करती है। बढ़ते वाहनों की संख्या के साथ-साथ बढ़ते फैक्ट्रीज के कारण वायु में कई प्रकार







के यौगिक जो सेहत के लिए हानिकारक हैं, मिल रहे हैं जिसमें सल्फर डाइऑक्साइड, कार्बन मोनोऑक्साइड आदि आते हैं। जिनसे हमारे बीच अनेक प्रकार की बीमारियाँ फैल रही हैं, उदहारण के लिए अस्थमा, क्रोनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिजीज, इत्यादि।

इससे बचने के काफी उपाए भी हैं, जैसे अधिक से अधिक पेड़ लगाना, फैक्ट्री के चिमनी में फ़िल्टर लगवाना, डीजल वाहनों पर रोक लगाना एवं निर्माण स्थान को चारों ओर से कपड़ों से घेरना।

**जल प्रदूषण-** इसका मुख्य कारण फैक्ट्री से निकलने वाला गन्दगी है जो पैसे बचाने के चक्कर में सीधे नदी में छोड़ दिया जाता है। नदियों में प्लास्टिक कचरा फेंकना, नालों इत्यादि का गन्दा पानी बहाना इत्यादि इसके मुख्य कारण हैं। जल के प्रदूषण से नाना प्रकार के समस्याएँ सामने आते हैं, जैसे पीने के लिए स्वच्छ जल की कमी होना, जल जीवन का नष्ट होना एवं पौधों का नष्ट होना है। पौधे लगभग समस्त धरती को 70% ऑक्सीजन

देते हैं, एवं जल जीवन में छोटे मछलियों का मुख्य आहार होते हैं।

अस्वच्छ जल पीने से अनेक प्रकार की बीमारियाँ हो सकती हैं। जैसे कॉलरा, टाइफाइड, हीपेटाइटिस, डायरिया, इत्यादि।

इसके उपाए भी आसान हैं, पर्यावरण सुरक्षा के तहत जल प्रदूषण करने वाले फैक्ट्री पर कार्यवाही, प्लास्टिक के सामान जिन्हें एक बार उपयोग करके फेंक सके उन पर पाबंदी, एवं नालों के पानी को पहले फ़िल्टर करके फिर नदियों में निष्कासित करना इत्यादि।

**भूमि प्रदूषण-** खाली जगह में कचरे का ढेर लगाना, प्लास्टिक को जमीन के अन्दर दफनाना, खेतों में जरूरत से ज्यादा कीटनाशक का प्रयोग करना जिसके वजह से स्किन डिजीज से लेकर कैंसर तक हो सकता है। जमीन के अन्दर प्लास्टिक कूड़ा दफनाने से बारिश का पानी जमीन के अन्दर नहीं जा पाता जिससे भूजल के स्तर में गिरावट आती है।







**थर्मल प्रदूषण-** आज के समय में थर्मल प्रदूषण भी चर्चा का विषय है। थर्मल प्रदूषण के कारण ग्लोबल वार्मिंग जैसी चीजे हो रहे हैं। ग्लोबल वार्मिंग मीथेन गैस के द्वारा सूरज की गर्मी अवशोषित करने से होती है। इसके कारण वातावरण में अनिश्चिता बढ़ने लगती है। कभी बाढ़ का खतरा होता है तो कभी सूखे का, अनेक प्रकार की प्राकृतिक आपदाएँ आती हैं। आज भी बहुत से छोटे राज्य में कोयलें को जला कर बिजली बनाई जाती है, विज्ञान के विकसित होने के बाद भी हाइड्रो-ईलेक्ट्रिसिटी का उपयोग नहीं हो रहा है। जिससे ना ही केवल गर्मी पैदा होती है बल्कि ओजोन लेयर भी कमजोर होता है।

**रेडियोएक्टिव प्रदूषण-** रेडियोएक्टिव प्रदूषण अपने आप में ही बहुत जानलेवा होता है। यह ऐसी परेशानी का रूप लेता है जो पीढ़ी दर पीढ़ी फैलता रहता है। ये न्यूक्लियर कचरे से पैदा होता है। अगर इसे अच्छी तरह से निष्काषित नहीं किया जाता है तो यह बहुत खतरनाक रूप ले लेता है। जापान में जो बम गिरा था वह इसी रेडियोएक्टिव चीजों से बना था। इससे बचने का बस एक उपाय है। वह है- इसे सतर्कता से प्रयोग करना और सावधानी बरतना ।

हमें अपनी पृथ्वी की रक्षा करनी चाहिए। इसे अपना घर समझकर के इसकी इज्जत करनी चाहिए और अपनी ओर से जो हो सके इसके लिए करना चाहिए। अधिक से अधिक पेड़ लगाने चाहिए, प्लास्टिक का इस्तेमाल कम से कम करना चाहिए एवं दुबारा इस्तेमाल किये जाने वाले प्रोडक्ट्स को इस्तेमाल करने की कोशिश करनी चाहिए।





## धीरूभाई अंबानी

रि लायंस इंडस्ट्रीज हमारे देश का सबसे मूल्यवान कंपनी है। यह केवल भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी फैला हुआ है। कपड़े के उद्योग से शुरू हुई रि लायंस इंडस्ट्रीज आज के समय में एनर्जी, रिटेल से लेकर मीडिया-एंटरटेनमेंट और डिजिटल सर्विस जैसे कई सेक्टर्स में फैल चुकी है।

लवरेज था। कुछ नहीं से बहुत कुछ बनाना अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि है साथ ही, हमारे देश के नौजवानों के लिए एक प्रेरणा भी है। आप किस स्थिति में कहाँ जन्म लेते हैं वो मायने नहीं रखता है, आप कैसे अपने भाग्य को लिखते हैं, अपनी मंजिल के तरफ किस अंदाज में अग्रसर होते हैं, वह मायने रखता है।



**श्री मुकेश शंकर**  
वरिष्ठ लेखाकार

धीरूभाई अंबानी का जीवन-कथा बेहद ही सामान्य रहा है। शुरुआती के दिनों में उन्होंने पेट्रोल पंप पर नौकरी की थी और बाद में देश की सबसे मूल्यवान कंपनी के मालिक बने। धीरूभाई अंबानी का जीवन बहुत ही संघर्षमयी रहा है। मेहनत, लगन, सोच, आत्मविश्वास, कुछ कर जाने का जज्बा आदि से उनका जीवन

धीरूभाई अंबानी का जन्म 28 दिसंबर को सन् 1932 ई0 में हुआ था। 1950 के दशक में धीरूभाई अंबानी ने महज 300 रुपये प्रति माह के वेतन के रूप में नौकरी की शुरुआत की थी। कुछ सालों तक काम करने के बाद ये वहां मैनेजर बन गए थे। हालांकि बाद में उन्होंने उस नौकरी को छोड़ खुद का कारोबार शुरू करने का फैसला



किया। ऐसा माना जाता है कि वे मात्र रु 500 लेकर मुंबई कारोबार करने आए थे। मन में कुछ ठान लिया जाए तो तिनके-तिनके से भी आशियाना बनाया जा सकता है। कुछ कर गुजरने की यदि चाह हो तब किसी भी बाधा को आसानी से पार कर लिया जाता है।

मुंबई आने के बाद वे यहाँ नाना-प्रकार के कारोबार पर ध्यान देने लगे। वे समझना चाह रहे थे कि कौन कारोबार उनके द्वारा करना उचित एवं फलदायी होगा। कई इलाकों के भ्रमण करने के बाद उनको समझ आ गया कि वे पोलिएस्टर और भारतीय मसालों का विदेशों में बेचने का कारोबार शुरू कर सकते हैं। इस प्रकार 8 मई 1973 को उन्होंने रिलायंस कॉमर्स कॉरपोरेशन के नाम से कंपनी की शुरुआत कर दी। यह कंपनी भारत के मसालों को विदेशों में और विदेशों के पोलिएस्टर को भारत में बेचने का काम करती थी। वे बहुत समझदारी से अपने मसालों को विदेशों में तथा विदेशों के पोलिएस्टर को भारत में बेचने लगे। इससे विदेशों से इनके व्यापारिक संबंध काफी अच्छे हो गए।

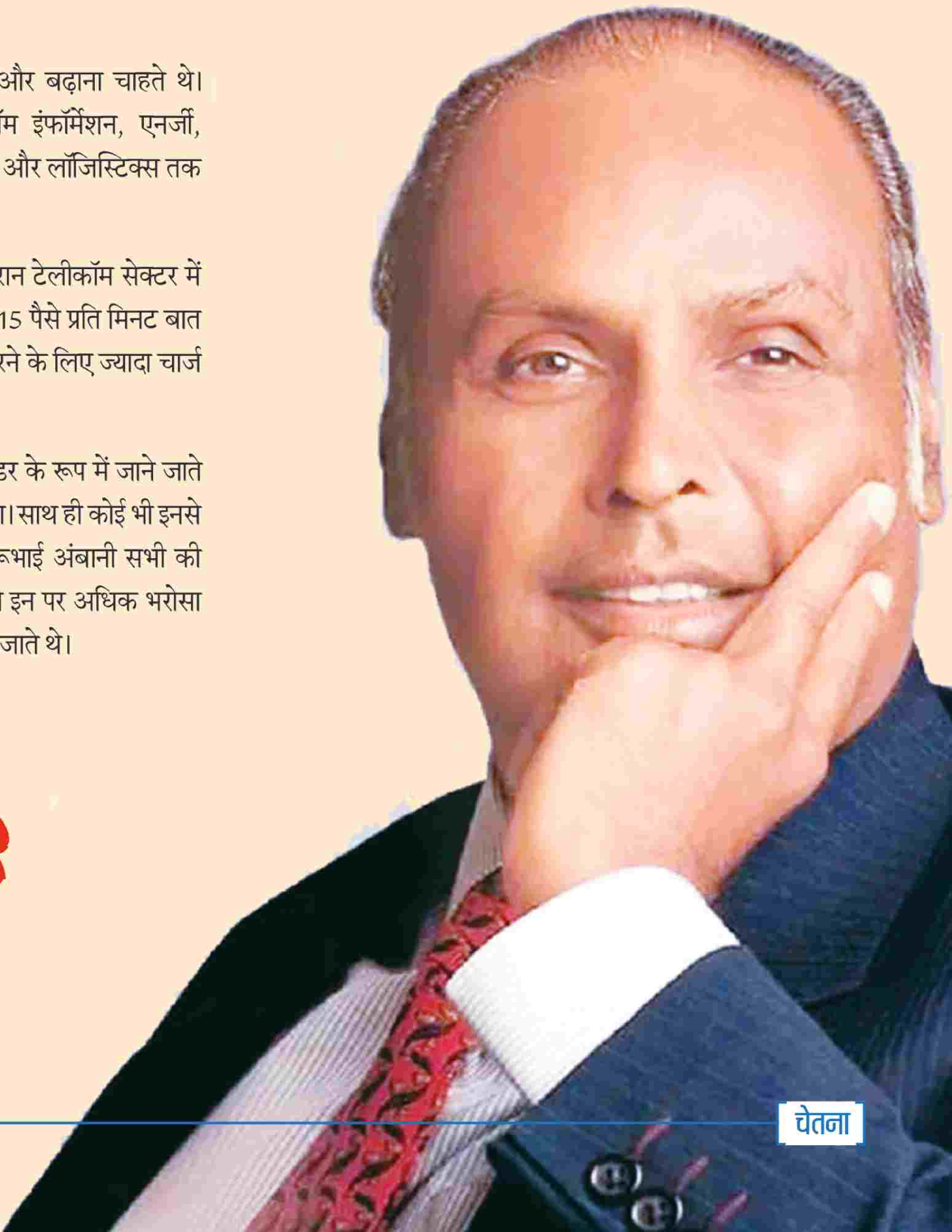
धीरूभाई अंबानी अपने बिजनेस को और बढ़ाना चाहते थे। इस कारण, उन्होंने टेलिकम्यूनिकेशन, टेलीकॉम इंफॉर्मेशन, एनर्जी, इलेक्ट्रिसिटी रिटेल, इंफ्रास्ट्रक्चर, कैपिटल मार्केट और लॉजिस्टिक्स तक कंपनी का विस्तार किया।

धीरूभाई अंबानी ने साल 2002 के दौरान टेलीकॉम सेक्टर में कदम रखा। रिलायंस ने 600 रुपये में सीम और 15 पैसे प्रति मिनट बात करने की सुविधा दी। इससे पहले फोन से बात करने के लिए ज्यादा चार्ज देने पड़ते थे।

धीरूभाई अंबानी एक शानदार टीम लीडर के रूप में जाने जाते थे। कोई भी कर्मचारी इनके केबिन में आ सकता था। साथ ही कोई भी इनसे बात करके अपनी समस्या रख सकता था। धीरूभाई अंबानी सभी की समस्या सुनते और हल करते थे। निवेशकों को भी इन पर अधिक भरोसा था, जिस कारण रिलायंस के शेयर मिनटों में बिक जाते थे।

1955 में धीरूभाई अंबानी ने कोकिलाबेन से शादी की थी। उनके दो बेटे अनिल अंबानी और मुकेश अंबानी, दो बेटियाँ नीना अंबानी और दीप्ति अंबानी हैं। धीरूभाई अंबानी ने सिर्फ 10वीं तक पढ़ाई की थी। 2016 में उन्हें पद्म विभूषण दिया गया था। 6 जुलाई 2002 को धीरूभाई अंबानी का निधन दिल का दौरा पड़ने से हो गया था।

आज भी धीरूभाई अंबानी द्वारा निर्मित कंपनियाँ उनके बेटों द्वारा संचालित किया जा रहा है। इस तरह से वे एक आम इंसान की तरह इस संसार में आये और अपने कर्म, मेहनत तथा लगन से सफल हुए। हमारे देश में अवसरों की कमी नहीं है। संसाधनों को सटीक उपयोग और ईमानदारी से कार्य करने की क्षमता ही आपको सफल बनाने में सहायक सिद्ध होती है। खुद पर विश्वास, संयम तथा धैर्य लक्ष्य के नजदीक पहुंचाने में सहायक होती है।





## उमंग मंदिर, औरंगाबाद





# अलविदा

उसके दर पर मेरे पग की आहट जो हुई  
निश्चल तन में थोड़ी सुगबुगाहट जो हुई ।।

अपनी धुंधली नजर से मुझे देख मौन ।  
बड़ी मासूमियत से मैंने पूछा तुम हो कौन ?

सोचने में कुछ क्षण जो उलझा था काल ।  
स्वयं उत्तर से भी न, सुलझा था सवाल ।।

भय से आई हँसी कुछ ठंडी आहें भर ।  
काली साया बोली, उसकी बाहें पकड़ ।।

बिन राजा के ही सुन, राजरानी हूँ मैं ।  
अबतक पूरी न हुई, वह कहानी हूँ मैं ।।

अंतिम सच हूँ मैं, झूठ के मेले में ।  
भला जीतेगा कौन मौत के खेले में ।।

जिंदगी प्रीत में बस तिजारत करे ।  
करके बेचैन बस यह शरारत करे ।।

दुश्मनी न कोई, हम न यारी रखें ।  
अपनी निशुल्क सेवा हम जारी रखें ।।



श्री संजय ओझा  
वरिष्ठ लेखाकार





सुखी चाहे जितना भी करले जतन ।  
लाल जोरे को मैं ही बनाती कफन ।।

मेरी ताकत में है जोड़ इतना बलम ।  
लिख कर मेरी सजा टूट जाती कलम ।।

खूनी खंजर का मंजर-ए- कत्लेआम हूँ ।  
प्यासी जीवन से छलका हुआ जाम हूँ ।।

अब कोई इच्छा अधूरी हो तो बात कर ।  
जिंदगी से अपनी अंतिम मुलाकात कर ।।

मेरी बातों से नजर उसकी नम सी हुई ।  
चलती सांसों फिर उसकी थम सी गई ।।

वह मेरी आगोश में होकर सोया फिदा ।  
बिन इजाजत लिए कह दिया अलविदा ।।





# ईमानदारी की पौधा



**ऋषभ मांझी**

**पिता- श्री सत्येंद्र मांझी**

लेखाकार

बहुत समय पहले एक शक्तिशाली राजा हुए थे। वे अपनी प्रजा से बहुत प्यार करते थे और बुद्धिमत्तापूर्ण शासन चलाते थे। उनकी कोई संतान नहीं थी। राजा बूढ़े होते जा रहे थे। उन्हें इसी बात की चिंता सता रही थी कि उनके मरने के बाद उनके राज का क्या होगा? जो भी शासक बनेगा वह ईमानदार होगा या नहीं। वह अक्सर इस बारे में महारानी से चर्चा किया करते थे। आज भी वे इसी सोच में डूबे हुए थे। अचानक हरे-भरे पेड़ पौधों को देखकर उन्हें राज के लिए एक योग्य शासक चुनने की युक्ति सूझी।

राजा :- महारानी, मैं सोच रहा हूँ कि प्रजा में से ही मैं अपना उत्तराधिकारी चुनू इसके लिए मैंने एक उपाय भी सोच लिया है।

रानी :- यह तो बहुत नेक विचार है, महाराज ! अगले दिन राजा ने घोषणा करवाया कि वे अपने उत्तराधिकारी का चुनाव करना चाहते हैं। जो कोई भी भाग लेना चाहता है वह आने वाले सोमवार को दरबार में उपस्थित हो जाए। सोमवार के दिन.....

राजा:- आप सभी जानते हैं कि मैंने सबों को यहाँ क्यों बुलवाया है?

प्रजा:- जी महाराजा राज के लिए एक योग्य उत्तराधिकारी का चुनाव करना चाहते हैं।

राजा एक-एक करके लोगों को कुछ बीज देते हैं और एक साल बाद पौधों के साथ आने के लिए कहते हैं।

राजा:- इन बीजों को गमले में बोने के एक साल बाद मैं सभी के पौधों को देखूंगा। जिसका पौधा सबसे अधिक हरा - भरा होगा, उसे इस राज का उत्तराधिकारी घोषित किया जाएगा। तभी, वहाँ खड़ी एक छोटी लड़की राधा बोलती है।

राजा से (राधा:-) महाराज, क्या मैं भी भाग ले सकती हूँ ? राजा छोटी लड़की राधा को भी बीज भेज देते हैं। सभी बीज लेकर अपने-अपने घर लौट जाते हैं।

एक साल बीतने पर सभी अपने हाथों में गमले लिए दरबार में पहुंचते हैं। छोटी लड़की भी अपना गमला पकड़ी थी, किंतु उसके गमले में कोई पौधा नहीं था। सभी उसको देख कर हंस रहे थे और बातें बना रहे थे। राजा ने सभी का स्वागत किया और सभी के सुंदर-सुंदर पौधों की प्रशंसा की। तभी उनकी नजर कोने में खड़ी राधा पर पड़ी। उसका खाली गमला और उदास चेहरे देखकर राजा के होठों पर हल्की-सी मुस्कान फैल गई। उन्हें इस लड़की को आगे आने को संकेत किया।

राधा:- महाराज, मुझे माफ कर दीजिए। मैंने तो दिन-रात इसकी देखभाल की थी, किंतु इसमें कोई पौधा आया ही नहीं। शायद मेरे बीज खराब थे।

राजा:- बेटा, बीज खराब नहीं, नकली थे। ये लोग उत्तराधिकारी बनने की लालच में गमले में दूसरे पौधे लगाकर लाए हैं। राजा ने सभी के सामने उस लड़की को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। सभी के सिर शर्म में झुके हुए थे, किंतु राजा बहुत प्रसन्न थे।





# सुखांत



**श्रीमती संगीता कुमारी**  
सहायक पर्यवेक्षक

ब तौर हेड कंडक्टर काम करने वाले शोएब ने छुट्टी के एक दिन नीरा नाम की एक खास महिला को एक जरूरी बात के लिए अपने घर बुलाया। नीरा चालीस के आस-पास की उम्र वाली प्रभावशाली और दिलेर औरत थी, जो लोगों की शादियां जोड़ने के अलावा भी ऐसे सारे जरूरी बंदोबस्त करती थी, जिनकी चर्चा सभ्य समाज में महज फूसफुसाहटों में होती है। हमेशा विचारों में खोया हुआ गंभीर तथा हास-परिहास से कोसों दूर रहने वाला शोएब कुछ-कुछ शरमाया हुआ सा अपनी सिगरेट जलाते हुए कहने लगा आपसे मिलकर मुझे खुशी हुई। सिमोन ने मुझे बताया कि आप कुछ ऐसे विशेष और अहम मसलों पर मेरी मदद कर सकती हैं, जिनका सीधा वास्ता मेरी जिंदगी की निजी सुख सुविधाओं से है। नीरा जैसा कि आप देख सकती हैं कि मैं पहले से ही 52 की उम्र पार कर चुका हूं, एक ऐसी उम्र जिसमें बहुतों की औलादे भी वयस्क हो चुकी होगी। मैं एक अच्छे ओहदे पर काम करता हूं। हालांकि, मेरे पास बहुत ज्यादा संपत्ति नहीं है, लेकिन फिर भी मैं एक प्रेमिका, पत्नी व बच्चों की परवरिश कर सकता हूं। मैं जरूरी तौर पर यह बताना चाहूंगा कि तन के अतिरिक्त मेरे कुछ पैसे बैंक में भी हैं, जिन्हें मैंने अपनी सीधी-साधी और ईमानदार जिंदगी जीते हुए बचा रखा था। मैं एक गंभीर और संयमी इंसान हूं तथा एक सम्मानजनक और कायदे कानून वाली जिंदगी जीता हूं जो औरों के लिए एक मिसाल भी हो सकती है। आज जो चीज मेरे पास नहीं है वो है एक परिवार का अपनापन और अपनी बीवी। मेरी हालत दर्द घूम कर लोगों के आसपास पहुंच रहे एक फेरीवाला, या फिर ऐसे ही किसी और इंसान की है, जो बिना किसी सुख के जीवन काटता हुआ, किसी भी ऐसे सख्स से दूर रहता है, जिससे वह अपना सुख दुख बांट सके, कभी बीमार होने पर एक गिलास पानी मांग सके। और नीरा, मेरी इस तरह की अर्जी की एक और वजह यह है कि शादीशुदा इंसान एक गौर शादीशुदा मर्द के मुकाबले समाज में ज्यादा कद्र का हकदार होता है। मैं पढ़े लिखे तबके से वास्ता रखता हूं। मेरे पास पैसे हैं, लेकिन अगर आप एक दूसरे नजरिए से देखें, तो इन सब के बावजूद मैं हूं क्या ? एक ब्रह्मचारी का मन जिसने कोई कसम-बसम ले रखी हो। यूं इन



सभी को नजर में रखते हुए, मैं किसी योग्य महिला के साथ विवाह बंधन में बांधने की अपनी दिली ख्वाहिश जाहिर कर देना चाहता हूँ यह एक अच्छी बात भी होगी। बिचौलिए का रूप लिए मीरा ने हामी भरी। मैं अब सेवा निवृत्ति लेने वाला हूँ, और कुछ किससे पूछ सकता हूँ? इसलिए सिमोन ने मुझे किसी ऐसे के पास जाने की सलाह दी जो इस काम में माहिर हो तथा लोगों के जीवन में खुशियाँ भरना ही उसका पेशा हो। तो इस तरह से मैं आपसे गुजारिश करता हूँ कि आप मेरे आने वाले कल को संवारने में कृपया मेरी मदद करें। आपके पास शहर की योग्य लड़कियों की सूची है, और आप आसानी से मेरी बात बना सकती हैं। हाँ ऐसा हो सकता है।

‘पानी पीजिए, कृपा करके, पानी...। अपनी सहज भंगिमा के साथ नीरा ने गिलास को अपने होठों से सटाया और बिना पलक झपकाए उसे खाली कर दिया। जरूर हो सकता है। उसने जवाब दिया और दुल्हन के रूप में आप किस तरह की लड़की पसंद करेंगे, मि. शोएब? मैं, जो भी मेरी किस्मत को मंजूर हो। बिल्कुल सही फरमाया बाबू यह किस्मत का ही सौदा होता है, लेकिन फिर भी हर आदमी के पास पसंद-नापसंद की एक अपनी समझ होती है। किसी को काले बालों वाली औरत भाती है, तो किसी को भूरे बालों वाली।

एक गहरी सांस लेते हुए शोएब ने कहा नीरा मैं एक गंभीर मिजाज वाला दृढ़ चरित्र का आदमी हूँ।

मेरे लिए खूबसूरती तथा रूप-रंग जैसी बाहरी चीजें कभी भी प्राथमिकता नहीं रखती क्योंकि जैसा कि आपको पता भी है चेहरा आखिरकार अदद चेहरा भर होता है और एक खूबसूरत बीवी होने का मतलब साथ में बहुत सारी उलझने और परेशानियाँ भी पाले रहना होता है। मेरे हिसाब से एक औरत का सौंदर्य वो नहीं है, जो हमें बाहर से दिखता है। मेरा मतलब है कि उसे दिल का ठीक होना चाहिए। सबसे अहम है समझ। लेकिन, वहीं दूसरी तरफ इसके भी कुछ खास मायने नहीं, क्योंकि अगर वह ज्यादा समझ वाली निकली तो दिमाग कुछ ज्यादा ही चलाएगी। उसके जेहन में उलूल-जलूल ख्याल आते ही रहेंगे। यह कोई कहने की बात तो नहीं है, लेकिन आजकल के इस दौड़ में अच्छी शिक्षा के बिना भी बात नहीं बनेगी, लेकिन इस मामले में भी केवल ‘पढ़ाई’ जैसी बात कर डर है। मैं अपने तरीके का साधारण इंसान हूँ। मुझे एक सीधी साधी लड़की चाहिए। जरूरी सिर्फ ये है कि मुझे तरजीह दे।

जाहिर सी बात है। ठीक है फिर तो जब सबसे जरूरी मसले पर आते हैं-- मुझे दुल्हन के रूप में कोई अमीर लड़की नहीं चाहिए। मैं ऐसी किसी भी चीज के सामने नहीं झुक सकूँगा जो मुझे अहसास करा दे कि मैं पैसे कि बजह से शादी कर रहा हूँ। मैं अपनी बीवी की कमाई रोटी नहीं खाना चाहता, मैं चाहता हूँ कि वो मेरी कमाई खाए, और इसे समझे भी। लेकिन हाँ, मुझे किसी गरीब लड़की से भी एतराज है। हालाँकि मैं एक



उसूलों वाला आदमी हूं, और मैं पैसे के लिए नहीं, बल्कि प्यार के लिए शादी करना चाहता हूं, लेकिन इसके लिए एक गरीब लड़की भी नहीं चलेगी, क्योंकि आपको तो पता ही है कि महंगाई किस तरह आसमान छूने लगी है, और फिर आगे भी होंगे स्टॉप! मैं दहेज वाली लड़की भी खोज सकती हूं। मीरा ने कहा।

प्लीज थोड़ा और पानी लीजिए...। दोनों के बीच लगभग 5 मिनट तक चुप्पी छाई रही। फिर बिचौलिए की भूमिका वाली मीरा ने एक जम्हाई ली, और जनाब कंडक्टर (शोएब) पर तिरछी निगाह डालते हुए बोली और गलती से... कुमारी लड़की कैसे रहेगी? मेरे पास कुछ ऐसे सौदे भी हैं। एक फ्रेंच और दूसरी ग्रीक नस्ल की, दोनों ही ठीक-ठाक हैं। शोएब ने विचार किया, बोला जी नहीं शुक्रिया। अब यह देखने के लिए कि एक आसामी के साथ आप की डील किस तरह से पूरी होती है, क्या मैं पूछ सकता हूं, आप अपनी इस कृपा के लिए क्या लेंगे?

मैं ज्यादा की अपेक्षा नहीं करती हूं मुझे बस 50000 रु और काम हो जाने पर एक ड्रेस दे दीजिएगा, मैं शुक्रगुजार होगी आपकी... डॉट डॉट और अगर दहेज वाली बात हुई तो मामला थोड़ा अलग होगा और आप मुझसे अलग से कुछ देंगी। शोएब ने दोनों हाथ मोड़ा और उन्हें सीने से हटाते हुए सर्त पर गौर करने लगा। फिर एक लंबी सांस भरते हुए बोला, इतनी फीस तो ज्यादा होगी।

अरे ये किसी भी लिहाज से ज्यादा नहीं है।

पहले के जमाने में, जब इस तरह से बहुत सारी शादियां होती थी, तब हम कम रकम लेते थे। लेकिन अब का जैसा चलन है, उसमें हमें मेहनत आने के नाम पर मिलता ही क्या है? अगर मुझे महीने भर में, बिना उधारी के बायदे के 100000 रुपए मिल जाए तो मैं खुद को खुशकिस्मत समझूंगी। और आपको तो पता होगा ही, आम शादियों में तो हमें कुछ मिलता भी नहीं है। शोएब ने औरत की तरफ देखा और कंधे उचका दिए। आप का मतलब है कि 1 महीने में 100000 रु पा लेने छोटी कमाई है? बहुत ही छोटी? पहले के जमाने में तो हम कभी कबार 200000 से भी ऊपर बना लेते थे। मुझे तो एहसास ही नहीं था कि आपके तरह के कारोबार में रहकर एक औरत इतना अच्छा कमा सकती है। एक लाख की कमाई इतनी नहीं होती थोड़ा सा और पानी लीजिए थोड़ा... शोएब ने गिलास को पालन झपकने से पहले खाली कर दिया। शोएब उसे सर से पांच तक देखता रहा। फिर बोला आप तो आसानी से अपने लिए किसी को चुन सकती थी। मेरे लिए? मीरा हंसने लगी, मैं तो बूढ़ी हो चुकी हूं बिल्कुल नहीं... आप अभी भी काफी खूबसूरत हैं चेहरा भी भरापूर है, और दूसरी सारी खूबियां भी हैं आपमें...? मीरा आत्म गौरव से फुलती हुई शर्मने लगी। शोएब भी शर्म सा महसूस करते हुए उसकी बगल में बैठ गया। सच में, मैं बताऊं तुम बहुत ही आकर्षक हो। अगर तुम किसी ऐसे शख्स से शादी रचाओ जो धीरे-धीरे होने के साथ सोच समझकर खर्च करने वाला हो, तो उसकी तनख्वाह और तुम्हारी आय के मिले-जुले सहयोग के तुम एक बहुत ही खुशी जिंदगी जी सकोगी, ओह



शोएब, तुम कैसी बातें किये जा रहे हो क्यों मैं तो बस कह ही रहा था। एक खामोशी पड़ गई। शोएब ने तेज आवाज के साथ अपनी नाक साफ की और नीरा अपने लाल होते चेहरे के साथ उसे नखरीली तरह से देखने लगी। शोएब अपना पैर ऊपर उठा लिया और जैसा कि जाहिर था, घबराहट में फर्श चलाने लगा। पत्नी के रूप में कोई नौजवान लड़की नहीं चाहता, उसने कहा, मैं अधेड़ उम्र का आदमी हूँ और मुझे किसी ऐसे की तलाश है जो काफी हद तक..... तुम्हारी और तरह हो... गंभीर और आत्मसम्मान वाली और शरीर से भरी पूरी तुम्हारे जैसी... रहम करो, तुम कैसे बोले जा रहे हो नीरा खिल खिलाने लगी, अपने बैगनी हो आए चेहरों को रुमाल से ढकती हुई।

इसमें इतना सोचने वाली कौन सी बात है। तुम्हारे अंदर वो सारे गुण हैं, जो मेरे लिए सटीक हो।

मैं एक ईमानदार और संयमी आदमी हूँ, और यदि तुम्हें भी पसंद हूँ तो इससे बेहतर और क्या हो सकता है? मुझे तुम्हें अपना हाथ सौपने की अनुमति दो। नीरा ने खुशी के आंसू धुलका, हल्के से हंसी और प्रस्ताव को स्वीकारते हुए शोएब के चश्मे के कांच को छू लिया। तो अब, होने वाले प्रश्न पति ने कहा मुझे बताने दो कि मैं तुम्हारे साथ किस तरह के जीवन की अपेक्षा करता हूँ। मैं एक धृद्ध इंसान हूँ, संयमी और ईमानदार। मेरे पास चीजों की एक परिपक्व समझ है, मैं अपनी होने वाली पत्नी से भी वैसे ही दृढ़ता की उम्मीद करता हूँ, और इसकी भी, कि वो समझे कि मैं उसे संरक्षण प्रदान करने वाला तथा उसके लिए दुनिया का पहला शख्स हूँ।

शोएब एक गहरी सांस लेते हुए बैठ गया और अपनी शादीशुदा जिंदगी तथा एक पत्नी के दायित्व के बारे में बोलता गया।





वाल्मिकी टाइगर रिजर्व, बेतिया







## वीणापाणि

सुन भारती लो आरती, तेरी संतति है पुकारती, ओ माँ, ओ माँ.....

भावना के कुसुम कोमल, प्रेम अश्रु सुजल निर्मल,  
दिल उत्पल हे पुजापा, फिर विफल क्यों माँ? ओ माँ, ओ माँ.....

मन अंधेरा, जग अंधेरा, है तामस का सर्वश घेरा,  
कलुष भरी अज्ञान रात्रि में, छटपट करता बेटा तेरा,  
पर्वणी की रजत रजनी क्यों नहीं आती माँ? ओ माँ, ओ माँ.....

सुन शारदे तू ऊबार दे, नर नीच को संहार दे,  
भर प्यार दे, गुण सार दे, भारत को फिर उद्धार दे,  
है समर्पित ये जिंदगानी, वीणापाणि माँ, ओ माँ, ओ माँ.....



श्री राजेश कुमार बाजपेयी  
लेखाकार

## शिव प्रार्थना

तेरे पद पावन पर हे हरि हर, निज कर से चढ़ाता इंदीवर,  
परिमल इसका निज प्रेम प्रवर, स्वीकार करो हे गंगाधर,  
प्रभु ! ध्यानधरी, सुनु बात हमरी, हे भूतनाथ, शिव, महेश्वर,  
कुछ चाह नहीं हमको प्रभुवर, दर्शन देदे केवल शंकर,  
तेरे पद पावन पर हे हरि हर, निज कर से चढ़ाता इंदीवर ।  
स्नान करूँ, नित ध्यान करूँ, जब ध्यान करूँ तो विश्वम्भर,  
बना आज राजेश तेरा अनुचर, अंगीकार करो हे शशिशेखर,  
तेरे पद पावन पर हे हरि हर, निज कर से चढ़ाता इंदीवर ।  
तुम अविनाशी, तुम कैलाशी, हम विनाशी भारतवाशी,  
इस भू से प्रभु तेरा प्रेम ऊपर, फिर क्यों ना बनोगे मेरे शिफर,  
तेरे पद पावन पर हे हरि हर, निज कर से चढ़ाता इंदीवर ।





“क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः  
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति!!”



**श्री अमरेन्द्र कुमार पाण्डेय**

वरिष्ठ लेखा अधिकारी

प्रायः देखा जाता है कि कोई संस्कृत का श्लोक बोलता है अथवा लिखता है तब श्लोक के तुरंत बाद अर्थात् कह कर उसका अर्थ लिखता अथवा समझाता है। सुप्रसिद्ध धार्मिक धारावाहिक महाभारत जिसने नई पीढ़ी को इस सांस्कृतिक धरोहर से अवगत कराये। कृष्ण की भूमिका में किरदार जब संस्कृत में कोई श्लोक बोलता है तो उसके तुरंत बाद अर्थात् कहकर उसका अनुवाद हिंदी में करता है क्या अर्जुन जिसके सम्मुख ज्ञान देने के लिए गीता बना को संस्कृत की समझ नहीं था? अरे भाई इसकी रचना ही उस समय में हुई तो अनुवाद कहां से आया ? अगर अनुवाद की जगह दूसरा तरीका अपनाया जाता तो धारावाहिक की जीवंतता और बढ़ती। इस धारावाहिक की महत्ता एवं सार्वभौमिकता के आगे ऐसे प्रश्न उठाना अपनी अल्पज्ञता का ही परिचय देना है खैर परंपरानुसार मैं भी ऊपर लिखे श्लोक का हिंदी अनुवाद लिख ही डालता हूं।



केशव



“क्रोध से उत्पन्न होता है मोह और मोह से स्मृति विभ्रम।  
स्मृति विभ्रम से बुद्धि का नाश होता है और बुद्धि नाश होने से  
मनुष्य नष्ट हो जाता है।”

कालांतर में स्मृति का धुंधला अथवा लोप होना प्राकृतिक एवं नैसर्गिक गुण है और कमोवेश सभी मनुष्यों में यह पाया जाता है। Amnesia से अथवा Athazagora phobia तो भूलने की ही बीमारी है। तो क्या भूलने अथवा स्मृति लोप /विभ्रम से मनुष्य का अंत हो जाता है ? ये श्लोक जो शाश्वत है, तथा भूलने की बीमारी जो प्रकृति का नैसर्गिक गुण है, दोनों आपके सामने रखता हूँ या इस पर पर्याप्त अनुशीलन की आवश्यकता है यह मैं आप पर छोड़ता हूँ।

ऐसे ही कुछ यादें जो भी विस्मरण के कगार पर हैं आपके साथ साझा करता हूँ। पटना का ऑक्सीजन पट्टी कहा जाने वाले संजय गांधी जैविक उद्यान पर पर्यटकों का दबाव कम करने के उद्देश्य से राजधानी वाटिका का विकास सन 2011 में किया गया था। लगभग 10 एकड़ में फैला यह वाटिका विश्व स्तरीय है। यह पुराना सचिवालय के निकट है। यह दो भागों में बना हुआ है तथा दोनों भाग आपस में एक सुरंग से जुटे हुए हैं। सुरंग में दीवारों पर भगवान बुद्ध के जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं से संबंधित चित्र को दर्शाया गया है। प्रसिद्ध भारतीय कलाकार श्री सुभाष गुप्ता जिनकी कलाकृति लाखों करोड़ों रुपये में विश्व में बिकती है की एक “कैक्टस स्मृति” जो रोजमर्रा उपयोग में लाई जाने वाली चीजों जैसे काँटा, चम्मच, टिफिन आदि से बना है- दर्शनीय है।

रजत कुमार घोष द्वारा राजा सलेह की प्रतिमा दर्शकों को अपनी

और आकर्षित करती है। यहाँ लगभग 3000 पेड़ों की प्रजातियाँ हैं। राशि वन, नक्षत्र वन, गुरु वाटिका, पंचवटी आदि देखकर मन में सुकून मिलता है। एक असली मीग-21 विमान जिसने कारगिल युद्ध में भाग लिया था उड़ने की मुद्रा में यहाँ स्थापित है और यह आकर्षण एवं कौतूहल का केंद्र है। पार्क-1 से सुरंग से आने पर पार्क-2 के दाहिनी ओर नालंदा खंडहर की अनुकृति को प्रदर्शित किया गया जो बिहार के वैभव और गौरव का प्रतीक है। डच मूर्तिकार डायना द्वारा बनाई गई इस प्रतिमूर्ति में अनेक आकर्षक छोटे-छोटे पत्थर लगे हुए हैं। इन्हीं पत्थरों के कारण इस पार्क का संक्षिप्त विवरण मैंने किया है।

लगभग 15 वर्ष पूर्व की बात है। कंकालजी से मेरी अच्छी खासी दोस्ती थी वे मेरे बगल में ही रहते थे। हम दोनों अपने अपने बरामदे पर आकर परिवारिक, राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय घटनाओं पर घंटों चर्चा करते। कंकालजी नाम के एकदम विपरीत हष्ट-पुष्ट और स्थूलकाय थे। लंबा चौड़ा नाम है उनका अंत में कंकाल शब्द लगाते हैं, लोग मजाक में उन्हें कंगाल जी भी कहते हैं, पर वे बिल्कुल बुरा नहीं मानते। सुबह-सुबह वे अखबार बड़े ध्यान से और बड़े मजे में पढ़ते थे। अच्छी खबर जो उनको नजर में लगती मुझे बताते कभी-कभी अति उत्साह में ऊंचे स्वर में बोल पड़ते। “देखिए एक लड़के ने अपना प्यार दिखाने के लिए नदी में छलांग लगा दी बड़ी मुश्किल से उसकी जान बची।” ऐसे वृत्तांत सुनाते समय उनको चेहरे पर असीम शांति झलकती। “अरे भाई यह सब नाटक होता है प्यार-प्यार नहीं- नई पीढ़ी प्यार-प्रेम से कोसों दूर है।” मैं उन्हें कहता वे थोड़ा नाराज होते और कहते हैं कि इसे समझने के लिए दिल चाहिए जो आपके पास नहीं है। उन्होंने मुझे एक पुरानी डायरी दी जिसमें अखबार की





कई कतरने तिथि सहित चिपकी थी और उसके नीचे कंकाल जी ने अपने राइटिंग में रंग बिरंगी कलमों से सच्चा-प्यार, समर्पण, अग्निपरीक्षा आदि शब्द लिखे थे। डायरी उन्होंने मुझे दी थी और वे मेरे चेहरे के मनोभाव को पढ़ने की कोशिश कर रहे थे। उन्हें प्रसन्न करने के ध्येय से मैंने बोला कि वाह कितनी मेहनत से आपने इसे बनाया है। इसे कहते हैं समर्पण। दअसल आप प्यार के सच्चे पारखी और पुजारी हैं। हालांकि मेरे मन में यही विचार चल रहा था- 'पागल कहीं का'। मेरी प्रशंसा सुनकर बहुत खुश हुए और बताया प्रत्येक रविवार को विभिन्न अखबारों से इन खबरों का कटिंग करता हूँ और चिपकाता हूँ। मजाल है, कोई ऐसी खबर मेरी नजरों से बच जाए। मेरे मन में आया कि इसके लिए आप को भारत रत्न मिलना चाहिए। लेकिन मुश्किल से अपने पर काबू रखा और मैंने हल्की मुस्कान बिखेर दी मानो उनके इस कृत्य का मैं कायल हो गया हूँ।

आप जैसे विचार मन में रखते हैं परिवेश वैसा ही बनता है। एक दिन सुबह-सुबह अखबार पर नजरें गड़ाये हुए हड़बड़ी में बोले देखिए- यह गुप्ता जी का लड़का.....। इन्होंने अपने प्यार की परीक्षा के लिए पूल से छलांग लगा दी है। आप माने न माने यह घटनाएं अब सर्वत्र नजर आने लगे हैं। कितनी अच्छी बात है गुप्ता जी का लड़का..... उसका गुणगान करने लगे। उन्होंने आगे कहा वह घायल है किसी अस्पताल में भर्ती है चलिए

उनसे मिलना होगा गुप्ता जी का बेटा एक नंबर का लप्फू है। बाप के पैसे एवं प्रतिष्ठा का लाभ उठाता है। मुझे याद है इंटर की परीक्षा भी एक बार मैं उत्तीर्ण नहीं हो पाया था। ऐसे कपूत से प्यार? मुझे आश्चर्य हुआ। कंकाल जी के साथ मैं उस अस्पताल पहुंचा जहां गुप्ता जी का पुत्र भर्ती था। हम लोग ने उनके माता-पिता से मिलकर उनके जल्द स्वस्थ होने की कामना की। किसी प्रकार के मदद की आवश्यकता होने पर निःसंकोच कहने की गुजारिश गुप्ता जी से किया। शुभकामनाएं प्रकट कर लौटने वाले ही थे कि एक पुलिस टीम वहां नजर आई। पता चला कि छेड़खानी के आरोपी गुप्ता जी के पुत्र को मारपीट कर पुल से नीचे आसमाजिक तत्वों द्वारा फेंक दिया गया। होश आने पर पुलिस पूछताछ के लिए आई है। दोनों तरफ से मामले थाने में दर्ज किए गए हैं। बोझिल मन से हम लोग बाहर आए। कंकालजी भले ही अखबारों की हजारों कतरने डायरी में लगाया हो वास्तविक रूप से उनका यह पहला मामला था। बड़े बेमन से कहा कि अखबार के न्यूज़ एवं वास्तविकता तो अलग निकला। पास ही एक चाय की दुकान पर हम दोनों मन को हल्का करने के ख्याल से बैठा। कंकाल जी की और मुखातिब होकर मैंने कहा- न्यूज़पेपर के कतरनों को डायरी में सजाने मात्र से कोई प्रेम-प्यार नहीं समझ सकता। मैंने उनसे पूछा ऐसा बर्तन जिसमें छिद्र हो, पानी का संग्रह किया जा सकता है? ठीक उसी तरह प्यार सुपात्र में ही हो सकता है, और इसके लिए कुछ अच्छाइयां, योग्यताएं आवश्यक होता है। छल-कपट का यहां क्या काम है? इसके अनेक अवस्थाएं होती है। याद में ताजमहल बना देना प्यार की आरंभिक अवस्था है जहां भौतिकता आ जाती है वहां प्यार अपने निम्नतर स्तर पर होता है। प्यार के लिए दो पक्षों का अस्तित्व में होना आवश्यक होता है मोटा मोटी यह लेनदेन की अवधारणा पर आश्रित होता है। इसके विपरीत प्रेम, प्यार का उच्चतम स्तर है इसमें





भौतिकता नहीं होता है। इसके लिए दो पक्षों का होना भी आवश्यक नहीं है मीरा का कृष्ण प्रेम। प्रेम उस पत्थर से सीखीए जिनके सहारे प्रभु राम लंका पहुंचे, और प्रेम के बाधक को दंड दिया, दुखद कष्ट सह कर। ये पत्थर अपना प्रदर्शन नहीं करते, चुपचाप पानी के अंदर है। ये पत्थर प्रेम का प्रतीक है। वहीं, आगरा स्थित विशालकाय महल जो प्यार का निम्नतर स्तर प्रदर्शित करता है, दुनिया में प्रेम का प्रतीक बना हुआ है। वैभव प्रदर्शन और प्रेम ? आप करने सोचिए। आप इन बातों को नहीं समझ सकते। गुप्ताजी के परिवार को मैं अच्छी तरह से जानता हूं। अखबार के कहने से क्या होगा।

क्या इसमें समर्पण होता है। तभी तो राजकुमार सिद्धार्थ राजपाट त्याग कर देता है। कंकाल भाई करना ही है तो प्रेम करो इसे समझो। क्यों इन खोखले निम्नतर अवस्था के प्यार को समझने बुझने और संवारने में लगे हो। काफी लंबे समय तक इस पर चर्चा होती रही। कई समस्या का समाधान अपने सामर्थ्य के अनुसार मैंने किया। उनके चेहरे पर संतोष के भाव थे।

थोड़े ही दिन में कंकालजी दूसरे मोहल्ले में चले गए मिलना जुलना कम हो गया लेकिन मोबाइल से हम लोग आपस में जुड़े रहे। एक दूसरे का हाल-चाल लेते रहते थे।

एक दिन वे मेरे घर आए। उनके चेहरे पर उदासी के भाव थे। आतिथ्य सत्कार के बाद मैंने उनसे पूछा सब ठीक-ठाक तो है। मजे में दिन कट रहे हैं न। बड़े ही दुखी स्वर में कहा प्यार में अग्नि परीक्षा की कई घटनाओं को मैंने अपनी याददाश्त में समेटा है परंतु उम्र के इस पड़ाव पर मुझे भी अग्निपरीक्षा देने की नौबत आ गई है। पत्नी ने एक शर्त रखी है जिसे मुझे पूरा करना है। अपनी प्यार को सिद्ध करने के लिए आपसे संबंधित है। शर्त क्या है पूछने पर बताया कि उन्होंने राजधानी वाटिका के नालंदा खंडहर की प्रतिकृति की ऊंचाई पर स्थापित एक पत्थर लाने की शर्त रखी है, उस पत्थर से अदरक को कूचकर चाय बनाई जाएगी तब यह माना जाएगा कि मैंने अपने प्यार की परीक्षा पास कर ली है। मुझे हल्की से हंसी आ गई जिस पर कंकाल जी विफर पड़े। मैं आपसे सहायता की उम्मीद लिए





आया हूँ, एक आप हैं जो मेरा मजाक उड़ा रहे हैं। मेरे घर में अशांति है। मेरी स्थिति को समझिए। यह एक विकट समस्या है इसे हल्के में ना लें। मैंने सुझाव दिया कोई मिलता जुलता उसी आकर का पत्थर लाकर दे दें मामला खत्म और आप पूरे नंबर से पास। नहीं वह उस पत्थर को अच्छी तरह से पहचानती है बोलती है वाटिका जाकर देखेगी कि वह पत्थर वहाँ है या नहीं तभी बात बनेगी। हल्की उपाय ना बताएं इससे मामला बिगड़ जाएगा। तब तो एक ही उपाय है चलिए वाटिका के किसी स्टाफ से उक्त पत्थर को प्रेम के लिए मांगते हैं क्योंकि होम करते हाथ जले जैसी स्थिति में वे रहते थे, आज वही स्थिति उनके सामने आ गई है। जैसी करनी, वैसी भरनी। क्यों परेशान है छोटी परीक्षा है आप बिल्कुल पास होंगे। वाटिका के एक पुराने जान पहचान वाले के पास हमलोग ने समस्या रखी तो वह बोला-दिमाग खराब है आपलोग का। डच मूर्तिकार की बनाई हुई है यह एक-एक पत्थर सैंकड़ों परीक्षण से गुजरा है, इसका महत्व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर है। ऐसी बकवास की बात ना करें 24 घंटे कैमरा रहता है। कृपया ऐसी बात ना करें।

पत्थर हासिल करने के जितने भी वैध-अवैध तरीके हो सकते थे हम लोगों ने अपनाई निराशा ही हाथ लगी। जो परीक्षा मुझे छोटी लग रही थी इसकी विकरालता का एहसास मुझे हो गया। मेरी कोई तरकीब काम न आई इससे कंकाल जी को घोर निराश हुई है।

लेख समापन के पूर्व मैं यह बता दूँ कि कंकाल जी ने प्यार की अग्नि परीक्षा पूरे नंबर से उत्तीर्ण की। अदरक उसी पत्थर से कूचा गया चाय बनी। कैसे? ये सिर्फ श्री एवं श्रीमती कंकाल जी ही जानते हैं पूछने पर बताते हैं यह सब प्रेम की ताकत से संभव हुआ आगे उन्होंने कहा प्यार की चरण को पार कर अब वे प्रेम की ओर अग्रसर हैं। प्रेम में कुछ भी असंभव नहीं। ये पत्थर क्या दीप है। उनके चेहरे पर गर्व का भाव था। उन्होंने कहा- एक कविता चुना, प्रेम के बीज उपज न हाट बिकाय...

हमें, आपको सबों को मूर्त-अमूर्त प्रेम को अंगीकार करनी चाहिए। इसी में जीवन की सार्थकता है। अन्य चीजें इसके सामने बौनी है।





# फेमिनिज्म



श्री राकेश कुमार रौशन  
डी.ई.ओ.

माफ कीजिएगा शीर्षक जरा अटपटा है। मेरी गलती नहीं है। मतलब मेरी गलती थी अब नहीं रही। अब यह गलती आपकी है। जी हां। आपकी ही गलती है। आप ही ने संदेह को Doubt और विद्यालय को School बोलने में सहजता दिखाई। अब जब कोई आपके सहजता के पार जाकर अपनी सहजता से इंग्लिश (अंग्रेजी) के शब्द प्रयोग करता है तो उसे आप अंग्रेज का तगमा देते हैं। मैंने समझौता कर लिया है। फोन में डिक्शनरी (फिर अंग्रेजी) रखता हूं। मेरी गलती नहीं। आपकी है। समझौता कर लो। जीवन आसान हो जाएगा। अभी यह कोई Online Chat होता तो हंसने वाली इमोजी डालकर बात को कम घातक कर देता। एक बात और हमारे हिंदी के अध्यापक श्री चौधरी 'सर' कहते थे, शायद अब भी कहते हो, हिंदी समुंद्र है। बाकी शब्द भाषाएँ सब आ कर मिलते हैं व इसी में रच-बस जाते हैं।

खैर, हमारा विषय शब्दोत्पत्ति नहीं है। हमारा विषय है "नारीवाद"। यही शब्द मैंने शीर्षक लिख दिया होता तो शायद निश्चय ही बहुत से पाठकों को बड़ी कठिनाई हो जाती है। सीधे विषय पर आते हुए इसकी जरूरत नहीं थी। आप कहेंगे कैसे जरूरत नहीं थी? सती-प्रथा थी, विधवा विवाह नहीं होता था, संपत्ति में अधिकार नहीं था, भ्रूण हत्याएं हो रही थी।





हमें बड़ी जरूरत थी। आप में से बहुत से लोग यहां तक बोले कि नारीवाद की तो आज भी बहुत आवश्यकता है। तो वे लोग बड़े भोले हैं। मैं उनकी मनः स्थिति से सहमत हूं। पर उनकी बचकानी बातों से नहीं।

हमें सच में आवश्यकता रही है। हमें ही नहीं सभी समुदायों और समाजों में निरंतर सुधार की आवश्यकता रही है। हमेशा से हमेशा के लिए। पर नारीवाद की नहीं। हमें आवश्यकता थी महिला सशक्तिकरण की। जो हुई। परंतु, इसके सभी लक्ष्य प्राप्त नहीं हुए हैं। असल में हम केवल अवसर मुहैया करा सकते हैं। हम अवसरों की बात कर सकते हैं। यहां हम कहने का तात्पर्य पुरुषों से नहीं बल्कि पूरे समाज से है। यदि मैंने यहां “हम” की सफाई न दी होती तो मुसीबत आन पड़ती। यह एक व्यंग था आपको समझ आई हो। खैर, आगे जाने से पहले मानव इतिहास में पीछे जाना होगा। जब हमारे पूर्वज शिकार करने निकले थे। स्त्रियों की वर्तमान स्थिति उनके बारे में गलत धारणा, जो पुरुषों-स्त्रियों में समान रूप से है, की शुरुआत इसी कालखंड में हुई। तब नारीवाद स्त्रियों के लिए ढाल बना। ढाल किस प्रकार का? शिकार करने के लिए पुरुषों को ही चुना गया। क्यों? स्त्रियों को क्यों नहीं? ऐसा नहीं है कि स्त्रियों को जरा भी मौका या अवसर नहीं मिला। परंतु वे उस कार्य के लिए उपयुक्त नहीं थी। इससे पहले की आपकी “नारी शक्ति” वाली भावना आहत हो मैं साफ करना चाहूंगा कि शिकार से भी महत्वपूर्ण कार्य थे जो उनके हिस्से आए थे। शारीरिक कमतरी कोई ठोस कारण नहीं। यह तो अभ्यास, अवधारणा और अवसर से घटती-बढ़ती है। दो बड़े कारण मुझे दिखाई देते हैं। पहला की बच्चों की परवरिश मां के बिना कठिन मालूम पड़ता है। यदि मां शिकार पर जाती तो बच्चे की देख-रेख पर असर पड़ता। उनको ससमय भोजन मिलना भी मुश्किल था। दूसरी बात यदि माता फिर भी शिकार पर जाती व बच्चे को भी साथ में रखती तो खतरा बच्चे पर आ जाता। शिकार से बचने की कोशिश में बच्चे पर भी हमला कर सकता था। घर (गुफाएं, वृक्ष) पर बच्चों को अन्य जानवरों से भी खतरा रह रहा था। आपलोगों ने मैटरनिटी लीव सुना होगा। मेरी दोनों बातों का निचोड़ 21वीं शताब्दी के शब्दकोश में है। स्त्रियाँ जब गर्भवती हो जाती हैं तो उनकी शारीरिक क्षमता पहले जैसा नहीं रहता है। आपने देखा होगा



अन्य स्तनपाइयों के बच्चे पहले सप्ताह में ही दौड़ने लगते हैं व उनका जन्म भी सरल तरीके से हो जाता है। परंतु मनुष्यों के संबंध में वह बात नहीं है। इनके मस्तिष्क बड़े होने लगे तो जनन की प्रक्रिया पीड़ा दायक होने लगी। ऊपर से मानव चारों पैर-हाथ पर नहीं बल्कि खड़े होकर चलने लगा। इससे उनका गर्भाशय भी संकिर्ण होने लगा। कुल मिलाकर गर्भधारण व धरती पर सबसे कठिन मासिक धर्म ने स्त्रियों को शिकार से रोका। इन सभी कारणों के प्रभाव में स्त्रियों को घर पर रहना पड़ा। परंतु ऐसा तो नहीं हुआ कि कोई भी स्त्री शिकार नहीं करेगी सभी घर में ही रहेंगी अथवा सभी पुरुष शिकार पर जाएंगे व कोई भी घर पर नहीं रहेगा। यह जो हम LGBTQA प्लस



कहते हैं, इसकी धारणा तभी से मजबूती पकड़ने लगी। इसकी विशेष चर्चा किसी दूसरे अंक में। शिकार का काम पुरुषों का व उनको सहेजने, बच्चों की देखभाल, व थके शिकारियों (मैं पुरुष नहीं कह रहा, कर्म की प्रधानता को ध्यान में रखते हुए) की सेवा का कार्य स्त्रियों के मत्थे चला। मानवों (स्त्री-पुरुष) ने प्रकृति की बनावट व उसके नियम को मानते हुए अपने सामाजिक व पारिवारिक स्थिति को स्वीकार कर लिया। शिकारी थके-हारे आते थे। हिंसक प्रवृत्ति के हो जाते थे। स्त्रियां घर पर होती थी। स्त्रियों को पुरुष से खाद्य सुरक्षा के साथ-साथ रहने की भी जगह मिली। वे एक प्रकार से आश्रित हो गईं। पुरुष उनकी सेवाएँ लेने लगे। इस सेवा भाव में दास-स्वामित्व को उत्पन्न किया। कालांतर में स्त्रियों को बच्चे जनने व घरेलू कार्य करने वाले साधन मात्र मान लिया गया। इससे उनके लिए युद्ध भी होने लगा और कालांतर में शहर-नगर बसने लगे। कहीं-कहीं जननी मानकर उनकी सत्ता भी चली। वहीं कहीं दूसरी जगह पर उनका उपयोग केवल भोग व सेवा के लिए किया गया।

भारतीय समाज को किसी एक खांचे में रखना मुश्किल मालूम

पड़ता है। शुरुआती सभ्यता, सिंधु घाटी सभ्यता की विशेषता थी कि वहां स्त्रियों की स्थिति बहुत उच्च व सम्मानजनक थी। हालांकि इतिहासकारों में भी भिन्नता है। पूर्व वैदिक काल में तो निस्संदेह स्त्रियाँ सम्माननीय थी। वैदिक काल में उनकी स्थिति का पतन हुआ यह एक स्थापित तथ्य है। परंतु असल बदहाली कृषि के शुरुआती काल में हुई। उनका उपयोग वस्तु विनिमय के लिए किया जाने लगा। इसके कारण ढूंढने में सक्षम इतिहासकार व समाजशास्त्री कहते हैं कि शिकारी पुरुष अब कृषि कर रहे थे वह समय-समय पर अधिक संसाधनों के लिए आपसी कबीलों पर आक्रमण भी कर रहे थे। आक्रमणकारी भी पुरुष और बचावकर्ता भी पुरुष। स्त्रियों ने भाग नहीं लिया क्योंकि वे सदियों से दूर थी इन शारीरिक शक्ति प्रदर्शन वाले क्रियाकलापों से। इसलिए उनका भी शोषण प्रारंभ हो गया। मनोरंजन का साधन व बच्चे जनने का साधन तथा वे घरेलू कार्य करने में दक्ष थीं। उन्हें सिर्फ योद्धा जनने का साधन समझा जाने लगा। वह काल केवल जीवित रहने का था। प्रकृति बहुत ही प्रभावी थी। परंतु जैसे-जैसे मानव की बुद्धि का विकास हुआ जैसे-जैसे उनके भीतर जागृति हुई उन्होंने प्रश्न पूछना आरंभ





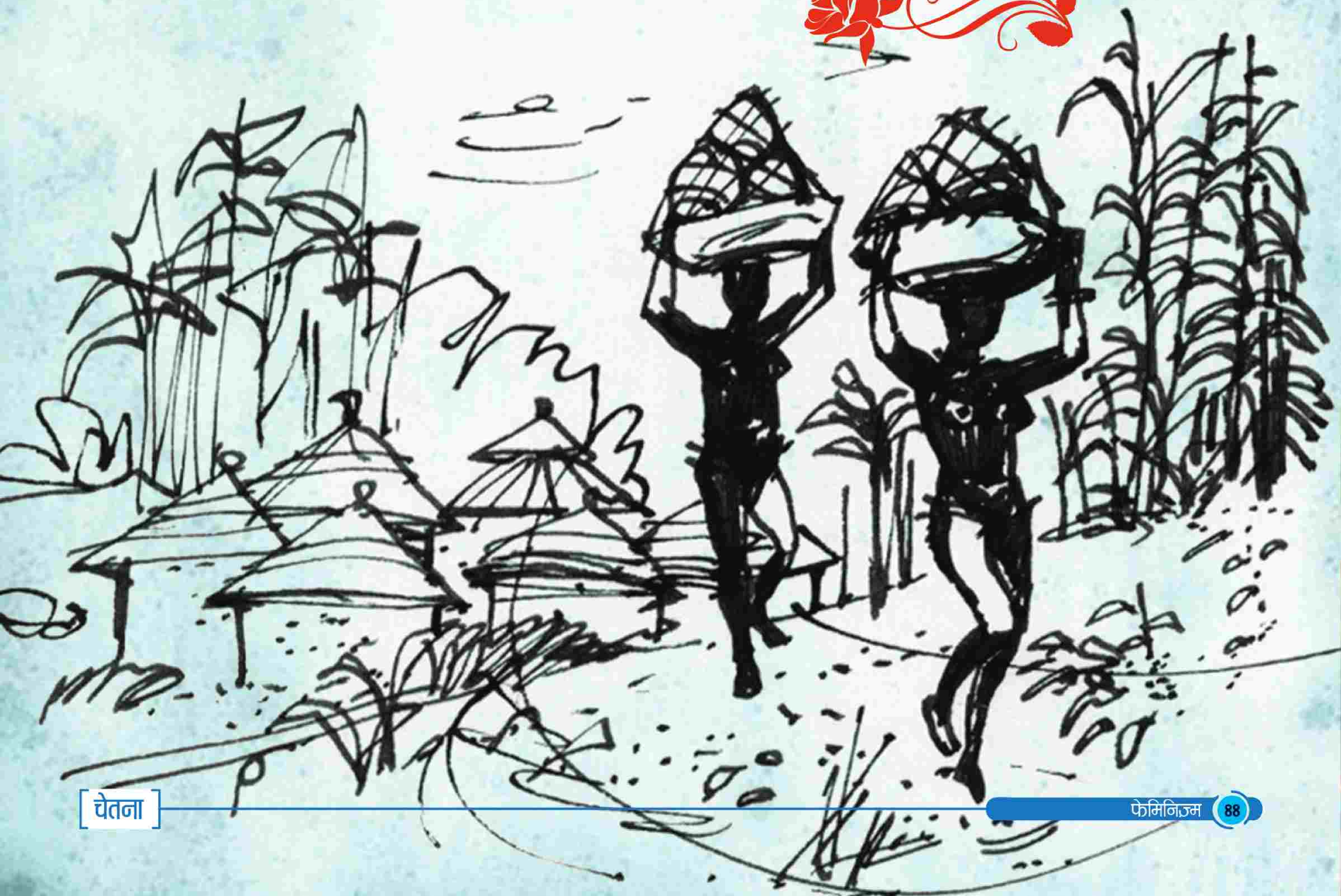
कर दिया। एक बात और सबसे पहले गुलाम स्त्रियां ही थी। इसलिए उनके बारे में बात होने लगी। उनके अधिकार व उनकी रुचियां मायने रखने लगीं।

यह सब एकदम से एक झटके में नहीं हो गया। मताधिकार आंदोलन, महिला मुक्ति आंदोलन व कई अन्य विश्वव्यापी आंदोलन हुए। हम भारतीय कम से कम इस शर्म से बचे रहें कि हमारे यहां महिलाओं का मूलभूत अधिकारों के लिए आंदोलन और संघर्ष नहीं करने पड़े। जैसे शिक्षा का अधिकार, मताधिकार, संपत्ति में हिस्सा आदि। मैं आधुनिक भारत की बात कर रहा हूं।

अंत की शुरुआत करते हुए कहना है कि हमें नारीवाद जो कि फेमिनिज़्म नाम से जाना जाता है को समझना होगा। इसकी उत्पत्ति का आधार इसकी मनसा को समझना होगा। इसके लक्षण, पड़ने वाले प्रभाव व दुष्प्रभाव की समीक्षा करनी होगी। यदि फेमिनिज़्म का अर्थ ऑटो चालक को सड़क के बीच लगातार थप्पड़ जड़ना हो जाय, सड़कों पर खुलेआम सिगरेट पीना, अंगदर्शी वस्त्र पहनना या एक से अधिक संबंध रखना है तो माफ कीजिएगा मैं सहमत नहीं। यह नारी उत्थान नहीं। ना ही पुरुषों की बराबरी है। यह तो पुरुषों की नहीं मानव समाज की कुरीतियों, जो दुर्भाग्य से

पुरुषों में पनप पड़ी है, उसको अपनाना हुआ। हम किसी की बराबरी उसकी बुरी आदतों को आत्मसात करके नहीं कर सकते।

महिला सशक्तिकरण का एकमात्र विधि है “शिक्षा”। गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा यदि अनिवार्य रूप से सभी को दिया जाए तो आसानी से हम सब मिलकर इसके सभी लक्ष्यों को पा सकते हैं। सभी को शिक्षित करना होगा। केवल महिलाओं को नहीं। अनिवार्य रूप से पूरे समाज को शिक्षित करना होगा। ऐसा ना हो जाए कि संतुलन बनाने के चक्कर में संतुलन बिगड़ जाए और हल्के पलरे पर इतना वजन दे दिया जाए कि दूसरा पलरा हल्का हो जाए। ये सही नहीं होगा। पुरुष उदार रहे हैं, स्त्रियां तो ममत्व की देवी रही हैं। फिर से क्लेश की जगह किन लोगों ने बनाई? भारती समाज में गृहस्वामिनी, मालकिन, लक्ष्मी आदि रूप से संबोधन होता है। पश्चिम के लोग “लेडीज फर्स्ट” कहते हैं। प्रतीकात्मक ही सही। शिक्षा से इसको व्यवहार व आचरण में लाया जा सकता है। फिलहाल युद्ध से जुझ रहे यूक्रेन में महिलाओं को देश छोड़ने की छूट है। पुरुष नहीं भाग सकते। यह भी हमारा ही समाज है। स्त्रियों को भी समझना होगा उनका लक्ष्य पुरुषों की पूर्ण बराबरी करनी नहीं है बल्कि पुरुषों को पूर्ण करना है।





महावीर मंदिर, पटना





# सीमा प घमासान



श्री विश्वपति सिंह

वरिष्ठ लेखा अधिकारी

नईखे ई आसान की, सीमा प सभे लड़ी हो  
भारत माता के सपूत, जे बा उहे ई करी हो।

सर्दी, गर्मी, बरसा के, ना उ कभी परवाह करे  
देश के खातिर ही जिए, अरु देश के खातिर ही उ मरे।

माई-बाप के आस बाड़न ई, पत्नी के ई खास बाड़न,  
भाई के विश्वास बाड़न ई, बहना के आभास बाड़न।



बेटा-बेटी जब होश संभाल ले, इनका के खोजऽ तारन,  
बीत गईल बहुत दिन, नईखन आवत कवना कारन ।

बेटा बेटी रोज माई से, कर तारे निहोरा हो,  
कब बाबूजी अईहे छुट्टी, तनी बताओ मोरा हो ।

बड़ी मुश्किल से फोन लागल त, उनका समझाईली हा,  
तरसत बाड़े बाल-बच्चा सब, बाते-बात बताईली हा ।

सीमा पर घमासान भईल बा, कइसे छुट्टी आई हो,  
हमरा खातिर देश पहिले बा, कइसे तोहके समझाई हो ।

सैकड़ों के मार गिरवलन, युद्ध जब लागल सीमा प,  
भारत माता के खातिर ई, गोली के रोकलन सीना प ।





अपना फर्ज पूरा क के ई, हो गईलन शहिद जी,  
देश के सुरक्षा के ई, कईलन रहन जिद जी।

बिना चूड़ी के हाथ देख, माई के बिखरल बाल देख,  
बेटा पूछे का हो गईल, माई के अईसन हाल देख।

यही बीच जयकारा साथ, जब लाश शहीद के अईल हा,  
तिरंगा में लपेटल देख, बेटा बड़ा अकुलाईल हा।

माई-बाप के सीना फाटल, मेहरारू के होश कहां,  
बाल-बच्चा अनाथ हो गईल, भाई में अब जोश कहां।

बहन के चितकार से, रोये सारा टोला हो,  
राखी केकरा के बान्हम, जियरा में उठे शोला हो।





छोटे-छोटे हाथ से जब, आग देले हा चिता के,  
पूरा देश तब रो पड़ल हा, देख के ई नतीजा के।

सेवा में हमहूँ जाईम, बाबूजी जईसन नाम करम,  
भारत माता के बाचल सपना, पूरा करके काम करम।

भारत माता धन्य हो गईली, अईसन बेटा पा के हो,  
नतमस्तक बा पूरा देश, वीर शहीद के आगे हो।





# देश में निकला होगा चाँद



श्री संजय कुमार ओझा  
वरिष्ठ लेखाकार

भारत का मून मिशन धरती पर हिन्दुस्तान का चाँद के साथ अपने पुराने संबंधों को प्रगाढ़ करने की एक कवायद है। भारत के साथ चाँद भी अपनी नजदीकी बढ़ाने के प्रयास में विगत 30 अगस्त को पृथ्वी से निकटतम स्थिति में आ गया था। धरती के नजदीक चाँद अपना रौशन चेहरा लेकर आया जिसे हमने ब्लू मून या सुपर मून का नाम दिया। कहे तो चाँद उस दिन अपनी सोलह कलाओं से सम्पन्न होकर धरती पर जलवा अफरोज हो रहा था और दुनिया भर के खगोल शास्त्री इस नयनाभिराम दृश्य को लाईव कवर कर रहे थे। चाँद से मेरी शिकायत आज भी है कि वह मेरे जन्म के दिन क्यों नहीं दिखा था। आज चाँद से मेरी मुलाकत होते ही मेरी सारी शिकायतों ने जैसे खुदकशी कर ली थी। आलम यह या कि ओठ बस फरफरा कर रह जाते थे और धड़कने बेलगाम हो रही थी। मैंने भी चाँद के साथ अपनी एक सेल्फी ले ली और इसे फेस बुक पर पोस्ट कर

दिया। फिर क्या था, कमेंट आने का सिलसिला शुरू हो गया। एक ने लिखा, क्यों जनाब, अब तो आप मोस्ट वांटेड के साथ अपनी तस्वीर खींचवा रहे हैं। दूसरे ने लिखा कि अरे, चाँद पर तो प्यार में एक असफल आशिक को खुदकशी के लिए उकसाने का संगीन इल्जाम है। देखना जरा बच के? किसी ने पूछा कि चाँद के बदन पर तो सुना था दाग है पर देखने में तो ये गड्डे लगते हैं, क्या इसके दिल पर भी चोट लगी है? किसी ने पूछा कि आप मामा के घर गए हैं या मामा आपके घर आये हैं। जो भी हो बहुत दिनों के बाद मेरी गली में चाँद निकला था, कमेंट्स चलता रहा और मन में भूलते भागते अतीत की यादें उभरते रहे।

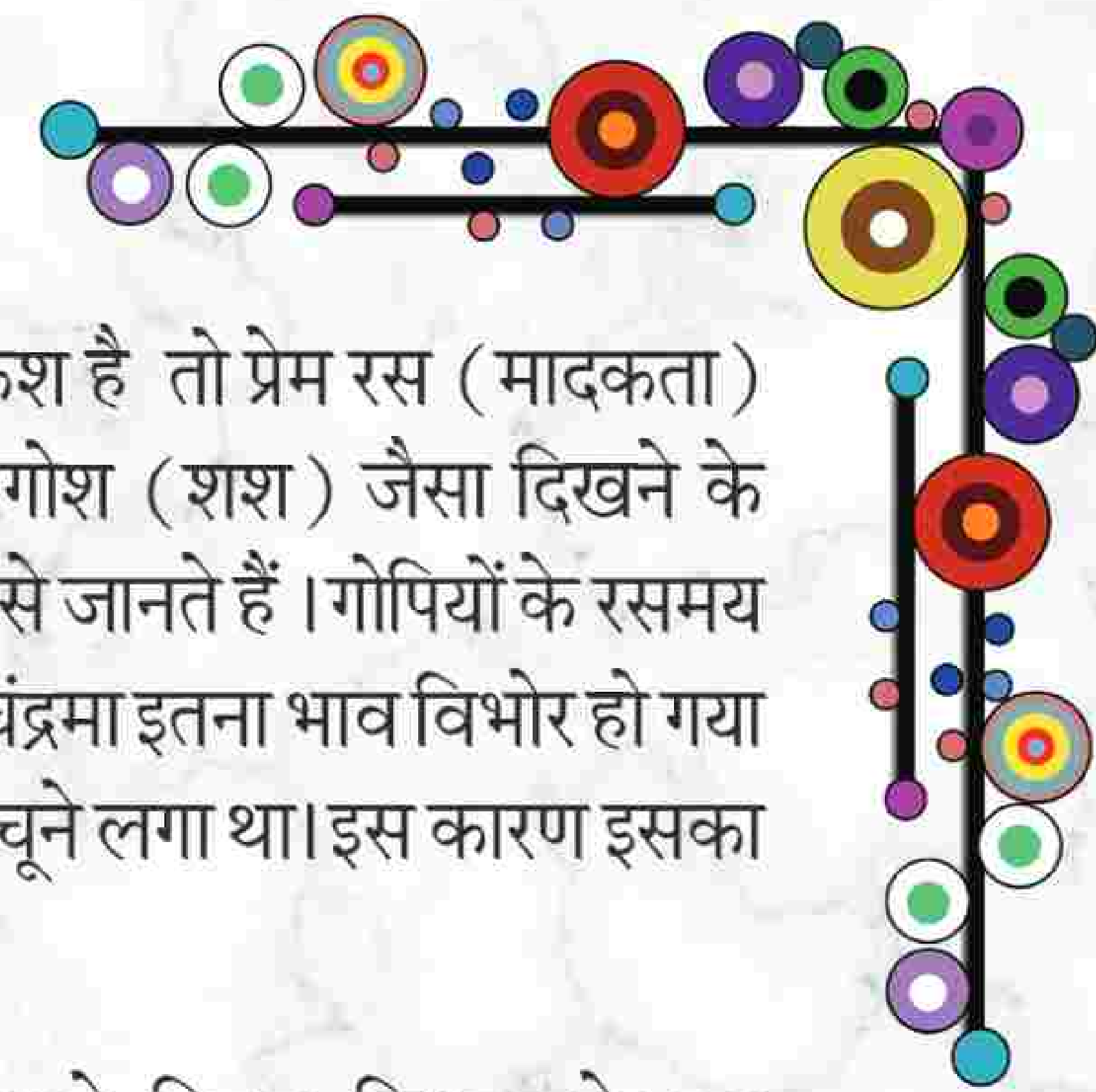
बचपन में रात ढलते ही मेरी दादी-नानी मुझे बड़े प्यार से धीरे धीरे 'चंदा मामा! आरे आओ बारे आओ, नदिया किनारे आओ, सोना के कटोरिया में दूधा भाता लेते आओ' गुनगुनाते





हुए रूखे सुखे कलेवा में भी मेरी भूख जगा देती थी। रात में मुझे कभी चाँद-चकोरी तो कभी सूरज चाँद की कहानियाँ सुनाई जाती और इन कहानियों में एक नशा सा होता था जो नींद में सख्त चरपाई पर नरम गलीचे की अनुभूति दिया करती थी। चाँद पर केन्द्रित बहुत सारे गाने मैं बड़ी मासूमियत से गाया करता था। मुझे क्या पता था कि जब सही समय आयगा तो मुझसे ये गाने गाये नहीं जाएंगे।

जब मैं उच्च विद्यालय में पढ़ता था, उस समय उस स्कूल में हिन्दी साहित्य के हमारे शिक्षक बहुत ही कलात्मक ढंग से पढ़ाया करते थे। वह बताया करते थे कि जैसे मानव जाति में विशेषतौर पर महिलाएं अलंकार यानी गहना-आभूषण पहन कर काफी सुन्दर और आकर्षक लगती हैं उसी तरह शब्दों में भी अलंकार जोड़ा जाए तो शब्द मानो बोल उठते हैं और सुनने वालों पर जादू सा असर डालते हैं। व्याकरण पढ़ाते समय एक दिन उन्होंने बताया कि उस समय के ट्रेडिंग गीत मेरे सामने वाली खिड़की पर एक चाँद सा टूकड़ा रहता है' में उपमा अलंकार का प्रयोग किया गया है जबकि 'चाँद जैसे मुखड़े पर विन्दिया सितारा' गीत में रूपक अलंकार है। किसी का भयंकर सुंदर होना भी एक अलंकार ही है। गीतों को माध्यम से पढ़ाये गए अलंकार आज भी मेरे दिमाग में काबिज हैं। एक दिन मास्टर साहब ने हमें चाँद के कुछ पर्यायवाची शब्दों को बताते हुए कहा कि चंद्रमा का एक संस्कृत स्तवन है जिसमें उसके एक सौ आठ नाम आते हैं जिनमें प्रमुख हैं राकेश, इन्दु, मयंक, विधु, सुधांशु, सोम इत्यादि। चंद्रमा शब्द संस्कृत के चन्द धातु से लिया गया है जिसका अर्थ है चन्दन यानी शीतलता। चंद्रमा के सतह पर मृग और शश (खरगोश) की आकृति के धब्बे होने के कारण इसे मृगांक या शशांक कहा जाता है। मृगांक के तद्भव रूप मयंक के नाम से भी जाना जाता है चाँद को। इन्दु का अर्थ है गीला और गीला (जल तत्व) होने के कारण चंद्रमा को इन्दु कहा जाता है। चंद्रमा का एक नाम विधु है जो व्याध शब्द से बना है जिसका अर्थ है शिकारी। मृग और खरगोश का शिकार करके अपने अंक (गोद में रखने वाला प्रतीत होने के कारण) यह विधु के नाम से जाना जाता है। रात्रि का पति

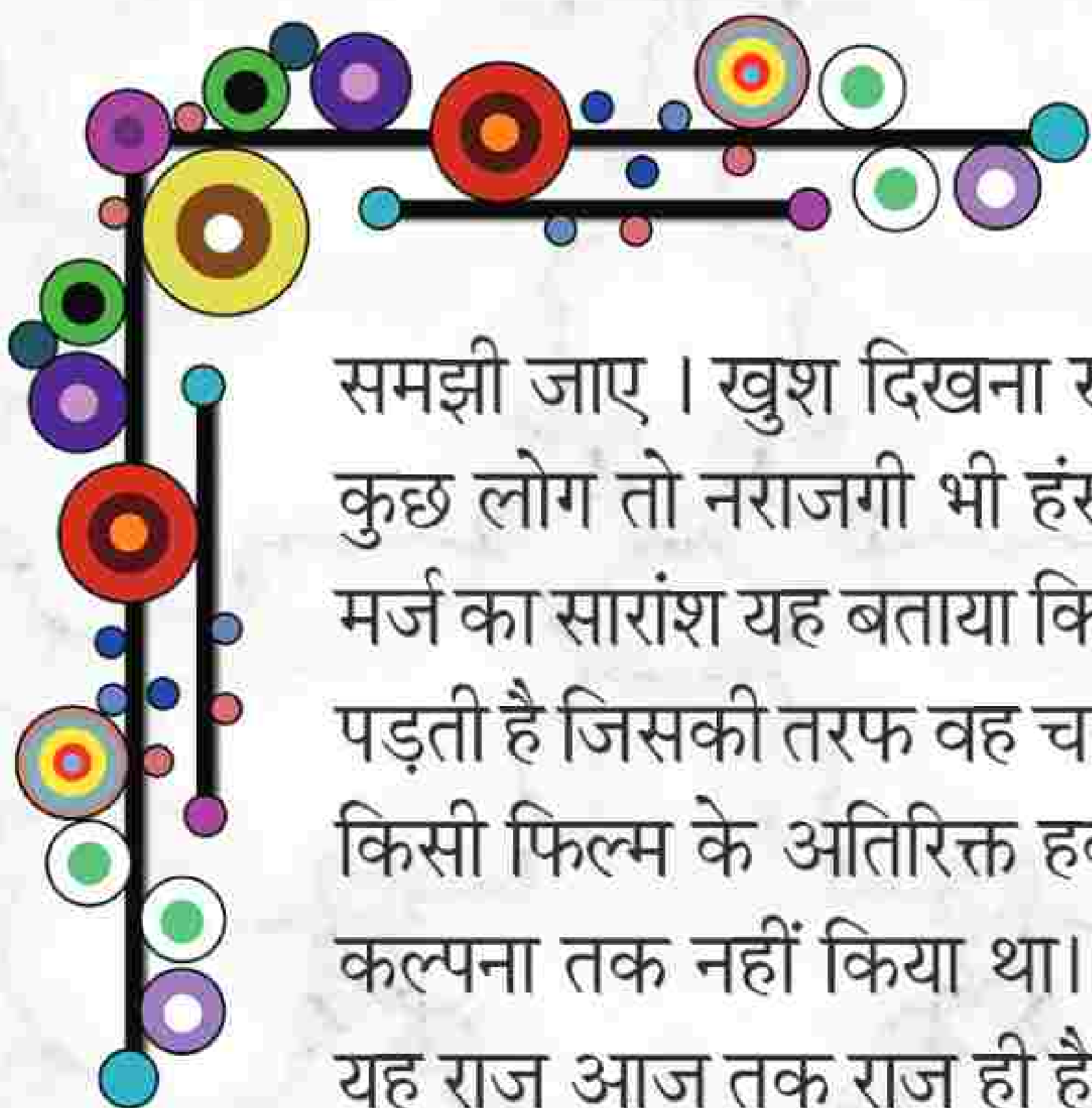


होने के कारण इसका नाम राकेश है तो प्रेम रस (मादकता) से भरे होने कारण सोम। खरगोश (शश) जैसा दिखने के कारण हम इसे शशांक के नाम से जानते हैं। गोपियों के रसमय रास का अंतरंग दृश्य देखकर चंद्रमा इतना भाव विभोर हो गया था कि इसके किरणों से अमृत चूने लगा था। इस कारण इसका नाम सुधांशु पड़ा।

इसके पहले कि अपने विद्वान शिक्षक के इस अमूल्य ज्ञान को मैं अच्छे से सहेज पाता, मेरा ध्यान अपने मित्र मंडली की चर्चाओं की ओर बरबस खींच जाया करता था। उम्र के साथ विषय और रूचि भी बदलने लगी थी। हमारा एक मेधावी मित्र था जो स्लीप वाकर था। उसे नींद में चलने की बीमारी (सोमनाबोलिज्म) थी। एक दिन हमने उससे पूछा कि तुम इस तरह की हरकत क्यों करते हो तो उसने जो जवाब दिया यह पहले तो बढ़ा अजीब लगा पर बाद में समझ में आया उसका निहितार्थ। उसने कहा कि वह चाँद पर त्राटक करता है। हालांकि उसने यह खुलकर नहीं बताया कि किसी ने उसका दिल चुरा लिया है। उसने आगे कहा कि कभी स्वच्छ आकाश में तो कभी बादलों से आँख मिचौली खेलता हुआ चंद्रमा हर समय अपनी अनन्त तन्हा यात्रा में प्रवृत्त रहता है। चाँद कहता है कि जिंदगी में चलते रह कर रास्ते में ही खुशियाँ ढूँढ़ना सीखो क्योंकि जीवन का मंजिल तो मौत है। इतना आकर्षण है चाँद में कि क्या मजाल कि इसकी बात काटूँ मैं। रात भर साथ साथ घूमते हैं हम दोनों। मैं धरती पर और वह आसमान में। पर क्या बात है, लोग मुझे आवारा और उसे चाँद कहते हैं। इससे मुझे कोई दिक्कत नहीं है, हाँ, पर चाँद की फितरत से मुझे डर जरूर लगता है क्योंकि चाँद एक जैसा कभी नहीं रहता। बदलने वालों से दोस्ती तो कुछ हद तक ठीक है पर मुहब्बत कतई अच्छी नहीं। दोस्ती और मुहब्बत में इतना अंतर है कि बहुत दिनों के बाद मिलो तो मुहब्बत नजरे फेर लेती है पर दोस्ती सीने से लगा लेती है। बाद में पता चला कि चाँद ने तो उसका कुछ नहीं बिगाड़ा पर चाँदनी ने उसकी जान ले ली। उसने चाँद से यह नहीं सीखा कि मुस्कुरा कर सबसे मिलो। हो सके तो गले भी मिलो पर साथ साथ यह भी जता दो कि मेरी इस अदा को मुहब्बत न



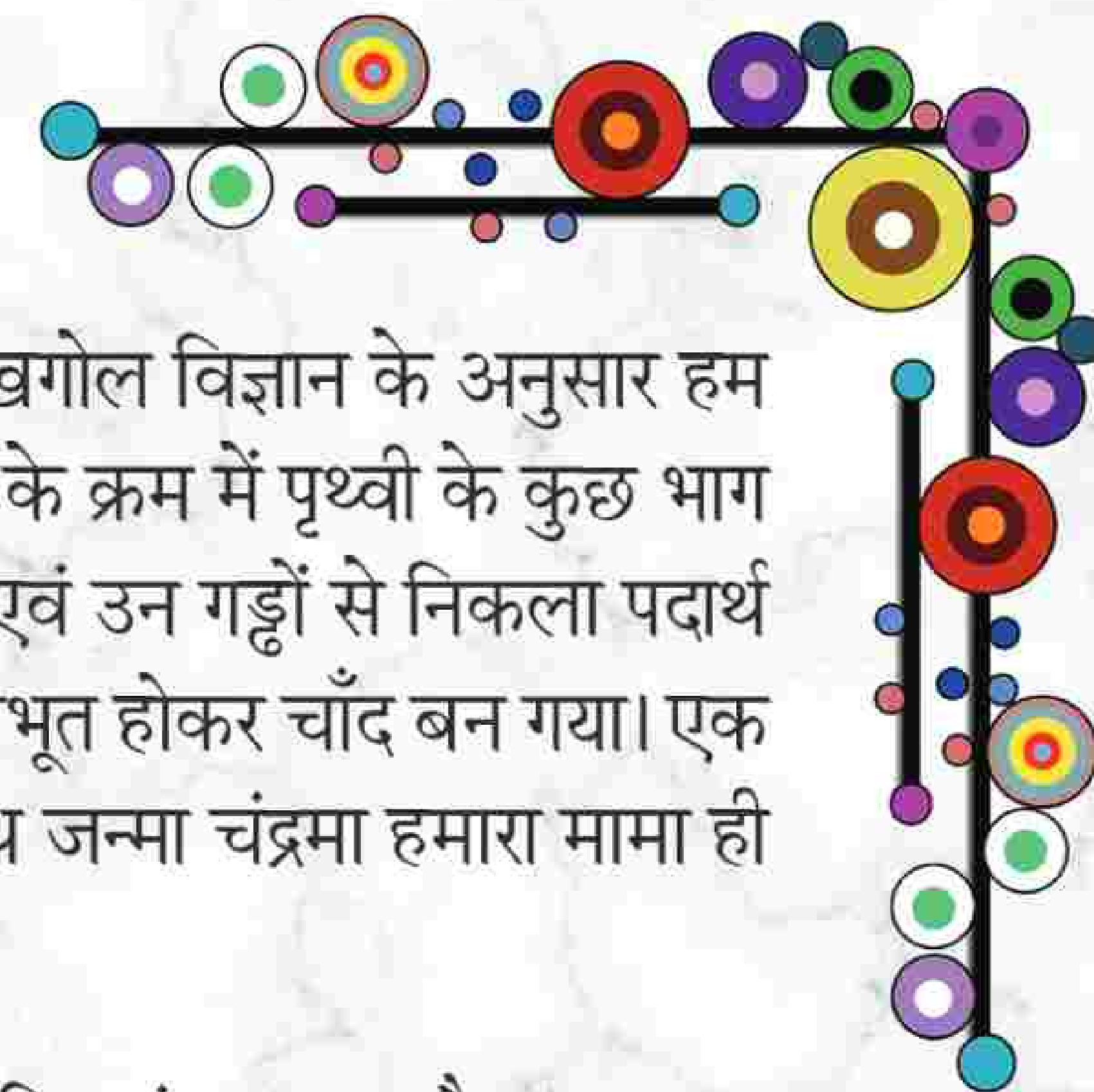




समझी जाए। खुश दिखना खुश रहने से अधिक जरूरी है। कुछ लोग तो नराजगी भी हंसकर ही जताते हैं। उसने अपने मर्ज का सारांश यह बताया कि नींद में उसे एक आवाज सुनाई पड़ती है जिसकी तरफ वह चलता चला जाता है। ऐसी कहानी किसी फिल्म के अतिरिक्त हकीकत में भी हो सकती है, मैंने कल्पना तक नहीं किया था। आखिर कौन बुलाता था उसे, यह राज आज तक राज ही है।

मेरा एक दूसरा मित्र है भोला। वह सिर्फ नाम का ही भोला है क्योंकि वह है बड़ा आशिक मिजाज है। हमेशा शेरो-शायरी करता रहता है। उस दिन सुपर मून पर चर्चा करते उसने अपनी एक सॉस में ही बहुत सारी बातें कह दी। उसने कहा कि मैं चाँद को कभी बेनूर नहीं देखना चाहता। चाँद कविओं की कविता है और प्रेमियों का प्रेम। उसका प्रेम इस तरह परवान चढ़ा कि वह अपने को कृष्ण और अपनी प्रेयसी को राधा मानने लगा। प्रेम में वह गीता का ज्ञान भी देने लगा कि भगवान श्रीकृष्ण ने कलांत अर्जुन से कुरुक्षेत्र यह कहा कि हे अर्जुन ! मैं इन्द्रियों में मन और नक्षत्रों में चन्द्रमा हूँ। इसलिए सारे धर्म को छोड़कर अपने मन को मेरे चंद्रमाकार में समाहित कर दो, मैं तुझे सारे दुखों से मुक्त कर दूंगा। भोला को महाभारत के पृष्ठभूमि से लिए गए इस उद्धरण को लेना महंगा पड़ा क्योंकि मुहब्बत ने उसकी जिंदगी को एक जंग बना दिया। कई बार पिटा वह मजनूओं की तरह मगर लैला उसके बचाव में यह कहने नहीं आई कि कोई पत्थर से ना मारो मेरे दिवाने को। चाँद के बारे में भोला का नजरिया अब बदल चुका है। उसे चंद्रमा शोकियों में घुला हुआ कम दिखता है बल्कि जंग के उन्माद और कर्बला के खौफ में चंद्रमा ज्यादा दिखाई देता है।

मैं अपने बुजुर्गों से चंद्रमा के बारे में बचपन से कुछ कहानियाँ सुनता आ रहा हूँ। पहले तो कि चंद्रमा हमारा मामा कैसे लगता है? समुद्र मंथन में देवी लक्ष्मी के साथ चंद्रमा भी उत्पन्न हुआ था। सागर के कोख से भगवती लक्ष्मी और चंद्रमा के एक साथ उत्पन्न होने के कारण हम चंद्रमा को देवी लक्ष्मी का भाई मानते हैं। माता लक्ष्मी के भाई के नाते चंद्रमा



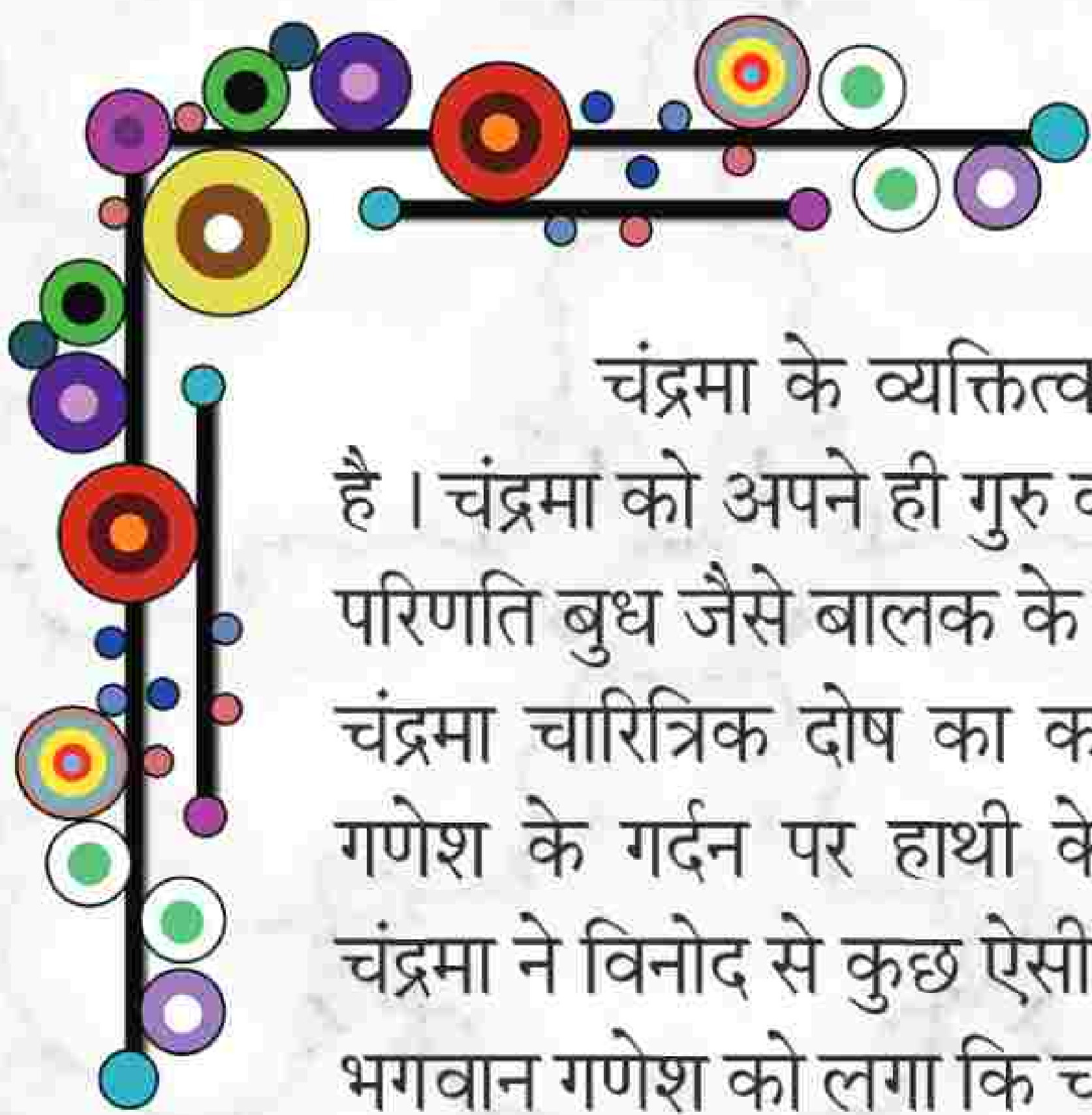
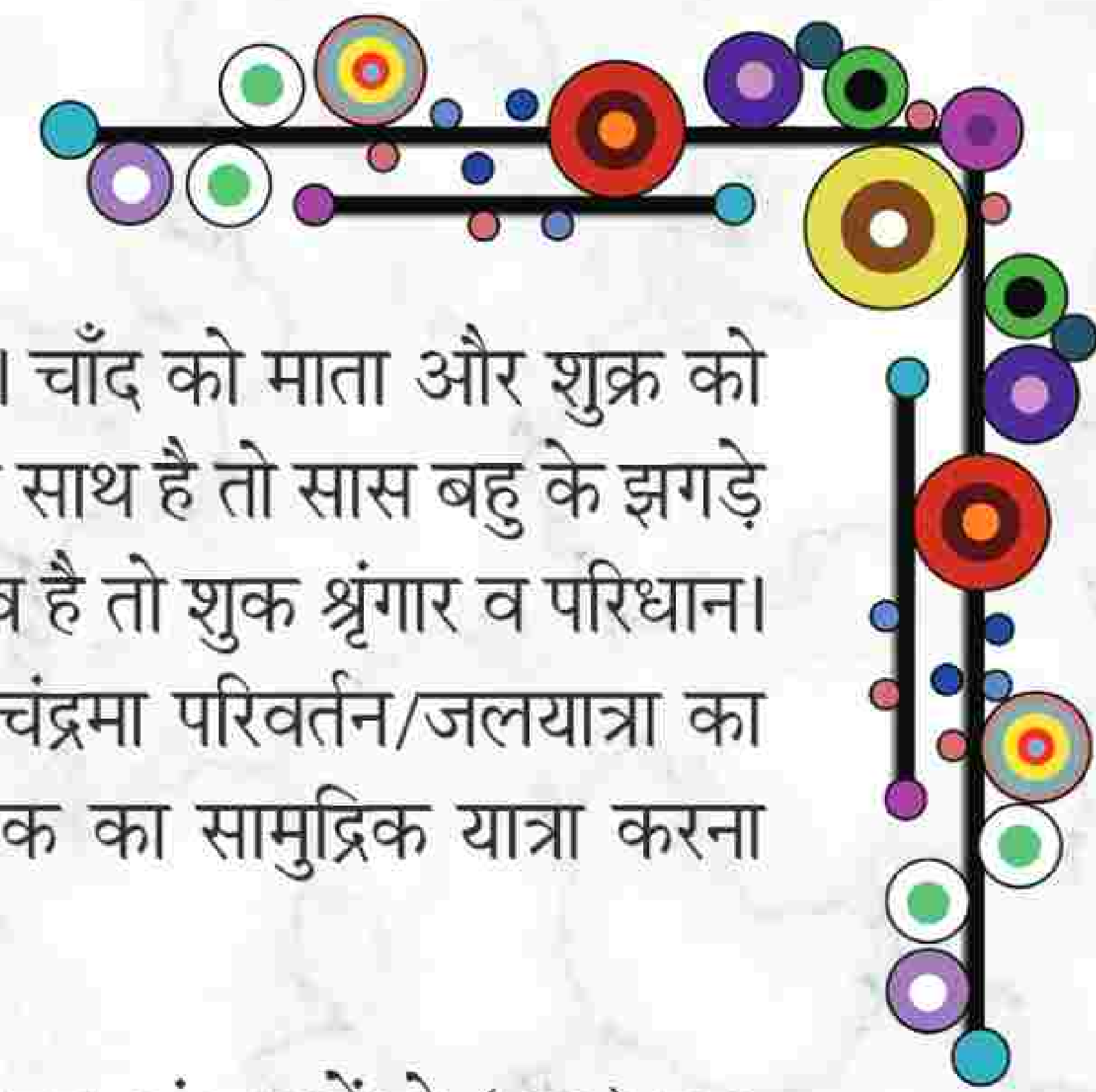
हम सब का मामा लगता है। खगोल विज्ञान के अनुसार हम जानते हैं कि पृथ्वी के निर्माण के क्रम में पृथ्वी के कुछ भाग में समुद्र जैसे गड्ढे पड़ गए थे एवं उन गड्ढों से निकला पदार्थ अंतरिक्ष में प्रक्षेपित होकर धनीभूत होकर चाँद बन गया। एक ही तत्व से धरती माता के साथ जन्मा चंद्रमा हमारा मामा ही तो है।

भारतीय सुहागन महिलाएं करवा चौथ का व्रत रखती हैं और चलनी के ओट में अपने पतियों का सूक्ष्म परीक्षण करती हैं। दीर्घायु एवं सौम्य प्रति की अभिलाषा से की गई चंद्रमा की पूजा को चलनी छल रहित विचारों की पूर्ण शुद्धता प्रदान करती है। करवा चौथ पर गाया गया गीत “एक रात में दो-दो चाँद खिले, एक घूँघट में एक बदली में” मन की कल्पना को एक आकार दे देती है। इसका एक मायने और है कि जैसे आकाश में चाँद है उसी तरह हर व्यक्ति के अंदर ठीक उसी तरह का एक चाँद होता है यानी यत् पिंडे तत् ब्रह्मांडे। चंद्रमा जल तत्व है जो शिव शंकर के विष की दाहकता को शांत रखता है। लोग भगवान शंकर को प्रसन्न करने के लिए उन पर जल चढ़ाते हैं ताकि उनके समुद्र से निकल कर उनके कंठ में समाया कालकूट विष की दाहकता का बोध कम हो जाए।

पुरुष सूक्त के अनुसार चंद्रमा मन है। मन एक दर्पण है। मन रूपी चंद्रमा एवं दर्पण दोनों प्रकाश के परावर्तन के सिद्धान्त से जुड़ा है। दर्पण जितना साफ व परावर्तक होगा, तस्वीर उतना ही साफ होगा। हम जिस विचार एवं संकल्प को लेकर चंद्रमा को देखेंगे वही विचार परावर्तित होकर हमारे पास वापस आ जाता है। मन विचारों को ग्रहण करने, सोचने एवं समझने की क्षमता है इसलिए चंद्रमा को देखकर किया गया कल्पना एवं लिया गया संकल्प साकार हो जाते हैं। चंद्रमा एक क्लेडियोस्कोप है जो स्वयं गति में रहकर प्रकाश को बहुरंगी ढंग से परावर्तित करता है। फोटो डायनामिक्स के इस सिद्धान्त पर चलचित्र बनते हैं और चलचित्र धरती पर रंगनेवाले को स्टार बना देती है यानी चंद्रमा आपके पक्ष में है तो स्टारडम मिलना तय है।







चंद्रमा के व्यक्तित्व के कुछ नकरात्मक पहलू भी हैं। चंद्रमा को अपने ही गुरु की पत्नी से प्रेम हो गया जिसकी परिणति बुध जैसे बालक के जन्म के रूप में हुई। इस कारण चंद्रमा चारित्रिक दोष का कारक भी है। एकबार भगवान गणेश के गर्दन पर हाथी के सिर का प्रत्यारोपण देखकर चंद्रमा ने विनोद से कुछ ऐसी मुखाकृति बनाई जिसे देखकर भगवान गणेश को लगा कि चंद्रमा को अपने सुंदरता का कुछ अधिक ही घमंड है। अतः कोधित होकर उन्होंने चंद्रमा को दंड स्वरूप यह श्राप दे दिया कि आज यानी भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की चौथी तिथि को जो तुम्हें देखेगा उसे अपयश का भागी बनना पड़ेगा। तब से चौथ का चाँद कलंकित है। यह भी कहा जाता है कि सभी सत्ताइसो नक्षत्र आपस में बहन हैं एवं ये सभी चंद्रमा की पत्नियाँ हैं जिनमें रोहिणी नक्षत्र चंद्रमा की प्रियतमा पत्नी थी। रोहिणी से अधिक अनुराग एवं सहचर्या के कारण चंद्रमा को दक्ष ने यह श्राप दे दिया कि “वह क्षय रोग से ग्रसित हो जाएगा जिसके कारण चंद्रमा कभी पूरा तो कभी आधा तो कभी दिखता ही नहीं है।

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार, चंद्रमा नवग्रहों में एक महत्वपूर्ण ग्रह है। चंद्रमा मन माता, भोजन, जल, यात्रा, परिवर्तन आदि का कारक है। जिस ग्रह के साथ चंद्रमा युति बनाता है उसको अपना गुणधर्म दे देता है। आज से दो-तीन महीने पहले शाम होते ही आकाश में चंद्रमा के साथ एक चमकता हुआ तारा शुक्र एक दूसरे के काफी समीप दिखाई पड़ने लगते थे। इन दोनों के सानिध्य का कुछ अर्थ इस प्रकार निकाला जा सकता है। शुक्र पत्नी/प्रेयसी का कारक है तो चंद्रमा परिवर्तन का। इसका अर्थ यह हुआ कि उस समय कुंडली में शुक्र व चाँद की युति वाले लोगो के प्रेम प्रसंग में

परिवर्तन / प्रगाढ़ता संभव है। चाँद को माता और शुक्र को पत्नी माना जाता है। दोनों एक साथ हैं तो सास बहू के झगड़े देखे जा सकते हैं। चंद्र बदलाव है तो शुक्र श्रृंगार व परिधान। शुक्र वाहन का प्रतीक है तो चंद्रमा परिवर्तन/जलयात्रा का यानी वाहन बदलना या जातक का सामुद्रिक यात्रा करना तत्समय संभावित है।

चंद्रमा रिश्ते में माता का, संख्या में दो (02) का, पेड़ में पलाश का, द्रव में दूध का, इन्द्रियों में मन का, रंग में सफेद का, धातु में चाँदी का और रत्न में मोती का प्रतीक है। जिनका जन्म महीने के 02, 11, 20 या 29 को हुआ होता है उनका मूलांक दो होता है और वह जातक चंद्रमा से प्रभावित माने जाते हैं। चंद्रमा को ग्रीक में नियोमा, स्पैनिश में अमारिस, लैटिन में जूना, जापानी में अरुणा, टर्किश में आयला, संस्कृत में चंद्रा और रोमन में लूना कहते हैं। यही लूना विक्षिप्त और झक्की लोगों को लूनाटिक की संज्ञा देता है।

चाँद हमारे युग पुरातन वैभवशाली संस्कृति का मूक गवाह है। चाँद ने हमें जीना सिखाया है। हिन्दुस्तान में चाँद फलक पर जब भी दिखेगा हंसता हुआ नूरानी चेहरा लेकर ही दिखेगा। हिन्दुस्तान के चाँद की छवि कुछ अलग ही है। आजकल चाँद फतह के बाद चंद्रमा की शीतलता हमारे दुश्मन मुल्कों को जला रही है। वहीं विदेशों में बसे भारतीय हमारी चाँद विजय से उत्साहित होकर रात में यह बरबस कहते कि देश में निकाला होगा चाँद। चाँद फतह के बाद अब हमारा संकल्प चाँद का पेटेंट कराने का है। यदि हमारा संकल्प पूर्ण हुआ तो चाँद जहाँ तक सफर करेगा हिन्दुस्तान के आसमान में ही अपने आप को पायेगा।





# ये भारत की नदियाँ

जिसको सब ने माँ है बुलाया ।  
जिसने जीवन काल संभाला,  
मानव जाति का काज संवारा ।  
निष्पक्ष होके सबको जिसने जल था पिलाया ,  
उसी में मानव ने जहर है मिलाया ।

पर्वत की चोटी से लेके जिसने ,  
समुन्द्र तक सारा खेत संवारा,  
निष्पक्ष हो के जिसने जीवन है पाला,  
उसी में मानव ने जहर है मिलाया ।

कुड़े, कचरे या खेतों की दवाई,  
घर या फैक्ट्री जहाँ भी बनाई ,  
मानव ने ये सब नदियों को पिलाई ।  
जिसने धरती को स्वर्ग बनाया,  
उसी में मानव ने जहर है मिलाया ।

मत भूल मानव उस कर्म को,  
जिसमें हर एक कर्म का उचित परिणाम आता है,  
जो जाता है वो लौट के वापस आता है ।  
जिसे स्वयं देवो ने जयकारा,  
क्यों मानव तुने उसमे जहर मिलाया ?



**आदित्य राज**  
पिता - श्री कृष्ण किशोर  
वरिष्ठ लेखाकार



# हिंदी दिवस- 2023 एवं तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन - पुणे



75  
आजादी का  
अमृत महोत्सव



भारत सरकार, गृह मंत्रालय  
राजभाषा विभाग

हिंदी दिन सोहळा - २०२३ आणि तिसरा अखिल भारतीय राजभाषा

हिंदी दिवस समारोह - 2023 एवं तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा





## विश्व प्रसिद्ध मुजाफ्फरपुर की शाही लीची

